मोहम्मद

मोहम्मद

अल्लाह के आखिरी पैगम्बर मोहम्मद पर आधारित

लेखक :

सय्यद वसीम रिज़वी

स्वयं प्रकाशित

Registration Number :- 1631122297-916774469

INDEX

संक्षिप्त परिचय

दुनिया भर में पिछले 25 सालों में हजारों मुस्लिम आतंकवादी हमले हो चुके हैं, इन हमलों में लाखों निर्दोष गैर-मुसलमानों और मुसलमानों की जान ली गई है। मनुष्यों का कत्लेआम करने वाले कोई जंगली जानवर या राक्षस नहीं थे बल्कि इन्हे मुसलमान धर्म के मानने वाले जाहिल, जालिम इंसान रूपी जानवरों के नाम से जाना जाता है, जिन्होंने इस तरह के नरसंहार किए।

मुस्लिम आतंकवाद एक जटिल समस्या है। जिसका समाधान सिर्फ और सिर्फ इनके घिनौने और डरावने जालिमाना विचारों को बदल कर और इंसानियत का पाठ पढ़ा कर ही किया जा सकता है। और इसके लिए इन्हें अल्लाह, रसूल और कुरान-ए-मजीद से दूर करना होगा, छोटे मुसलमान बच्चों को मदरसों की शिक्षा से दूर करना होगा, कुरान में दी गई शिक्षा के कारण मुसलमान अपनी सफलता को आतंकवाद के हथियार से नापता है।

अरब के रेगिस्तान में जब इस्लाम अपने वजूद में आया और मोहम्मद मदीना शहर में दाखिल हुए तभी आतंक के अभियान की शुरुआत हुई और तब से लेकर आज तक मोहम्मद को रसूल मानने वाले मुसलमान जो कुरान को अल्लाह की किताब कहते हैं आतंकवादी अभियान को आगे बढ़ा रहे हैं।

मुसलमानों को और मुसलमानों के आचरण को समझने के लिए मुसलमानों के आखिरी पैगंबर मोहम्मद को समझना बेहद जरूरी है। इस्लाम दरअसल मोहम्मदवाद है। और मोहम्मद को समझ कर ही इस्लाम को समझा जा सकता है।

इस "मोहम्मद" नामक पुस्तक में मोहम्मद नामक व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक रहस्यों को उजागर करते हुए मोहम्मद को समझने की कोशिश की गई है इतिहासकार बताते हैं कि मोहम्मद एक सुनसान गुफा में चले जाते थे और वहां घंटों बैठे रहते थे और बाद में आकर अपनी बीवी खदीजा जोकि अरब की एक बहुत ही अमीर औरत थी उन्हें यह बात समझाने की कोशिश करते थे कि वह अल्लाह के पैगंबर हो गए हैं और धीरे-धीरे मोहम्मद अपने रंग-ढंग बदलने लगे जिन लोगों ने मोहम्मद को अल्लाह का रसूल मान लिया उनको मोहम्मद ने अपने साथ ले लिया और जिन लोगों ने मोहम्मद को अल्लाह का रसूल मानने से इनकार कर दिया और उनकी आलोचना की तो उनकी हत्या कर दी गई। मोहम्मद ने एक इस्लामिक लश्कर बनाकर लूटपाट और नरसंहार करना शुरू कर दिया मोहम्मद ने हजारों लोगों को बंदी बनाया और उनकी बेटियों और औरतों के साथ में बलात्कार किए और अपनी फौज और अपने साथियों को भी अनुमति दी कि वह बंदी औरतों के साथ में बलात्कार कर सकते हैं।

मोहम्मद उन लोगों से प्यार करते थे जो की उनकी तारीफ करते थे और जो लोग मोहम्मद की बात से सहमत नहीं होते थे उनके संबंध

में अल्लाह के नाम से संदेश देते थे कि उन्हें कत्ल कर दिया जाए या उन्हें जबरन मोहम्मद को पैगंबर मानने पर मजबूर किया जाए।

पूरा विश्व इस बात पर सहमत है की विश्व का रचेता एक है, और ज्यादातर दुनिया में रह रहे लोग अपने धर्म के हिसाब से दुनिया के रचयिता को एक शक्ति मानते हुए उसका सम्मान करते हैं, मोहम्मद के जमाने में यहूदी और क्रिश्चियन हुआ करते थे जिनसे मोहम्मद की अच्छी दोस्ती थी मोहम्मद उनके धर्म के बारे में उनसे ज्ञान लिया करते थे और फिर मोहम्मद ने जब अपने को अल्लाह का पैगंबर घोषित किया तो उसने दुनिया के रचयिता को अल्लाह का नाम दिया।

इस पुस्तक में हम किस्सों से हटकर तथ्यों पर आधारित इस्लाम की असलियत को और मोहम्मद के बारे में जानने की कोशिश करेंगे इस पुस्तक में मोहम्मद की सच्चाई पर से पर्दा हटाया गया है मोहम्मद एक प्रभावशाली, रहस्मयी, जिद्दी व्यक्ति थे। मोहम्मद अपनी खुद की बनाई हुई बातों को अल्लाह की बातें बता कर खुद भी मानते थे और दूसरों को भी उन बातों को मानने के लिए मजबूर करते थे, और जो लोग मोहम्मद की बात नहीं मानते थे तो मोहम्मद उनसे कहते थे कि अल्लाह क्रोधित हो रहा है अल्लाह उन सबको जहन्नुम में भेजेगा जो अल्लाह पर और अल्लाह के रसूल पर भरोसा नहीं करेंगे। जो रसूल ने खुद देखा और लोगों को बताया बस उस पर ही मुसलमानों को भरोसा करना चाहिए अगर

इसके आगे कुछ पूछने की कोई कोशिश करें तो इस्लाम में अल्लाह रसूल के बारे में सवाल करना या सबूत मांगना गुनाह है।

मोहम्मद अनाथ थे और उनका बचपन कठिन था बचपन में ही उनकी मां ने भी उन्हें छोड़ दिया था फिर उनके दादा और चाचा की देखभाल में उनकी परवरिश हुई उन्हें अपने मां-बाप का प्यार नहीं मिला उनके दादा ने और चाचा ने उनको जरूरत से ज्यादा प्यार दिया जिसके कारण वह पूरी तरह से बिगड़ गए उन्हें ना मर्यादा सिखाई गई और ना ही अनुशासन का पाठ पढ़ाया गया वह सीमित ताकत हासिल करने की कल्पना करने लगे क्योंकि वह बचपन में कठिन दौर से गुजरे थे तो उन्होंने अपना व्यवहार ऐसा दिखाया कि लोग उन पर भरोसा करें और उनकी प्रशंसा करें वे स्वयं दूसरों से लाभ लेते थे और उन्हें यह भी लगता था कि लोग उनसे जलते हैं जब कोई उन्हें अस्वीकार करता था तो बहुत आहत हो जाते थे और उसकी हत्या भी करवा देते थे। मोहम्मद झूठ बोलते थे लोगों को धोखा देते थे और ऐसा करना न्यायोजित और अपना अधिकार समझते थे। वह ऐसा व्यवहार अपनी मानसिक बीमारी के कारण करते थे।

क्योंकि मोहम्मद एक मानसिक बीमारी से ग्रस्त थे अपने को इस्लाम का रसूल घोषित कर कुछ ज्यादा घमंडी हो गए थे, वह अपनी बातें अल्लाह की संदेश के हिसाब से पेश करते थे ऐसा नहीं था कि वो झूठ बोलते थे मानसिक बीमार होने के कारण उन्हें काल्पनिक आवाज सुनाई देती थी असल में वह कल्पना और

वास्तविकता में पहचान कर पाने में असमर्थ थे मोहम्मद ऐसी मानसिक बीमारी से पीड़ित थे जिसके चलते वह रस्मो-रिवाज और कठोर नियमों को अपने विचारों से पैदा करते थे इसी कारण मोहम्मद कठोर और हृदयहीन जीवन जी रहे थे उनके विचार बेतुके नियमों से भरे हुए थे मोहम्मद मानसिक तौर पर ऐसी बीमारी से ग्रस्त थे जो मनुष्य के दिमाग में हार्मोन अधिक मात्रा में बना देती है यह बीमारी मनुष्य की हड्डियां बड़ी कर देती है हाथ पैर काफी रूखे हो जाते हैं इस बीमारी से ग्रस्त लोगों में सेक्स करने की क्षमता और चाहत ज्यादा उत्पन्न हो जाती है, इसी कारण मोहम्मद में सेक्स करने की क्षमता वह चाहत मरते दम तक बनी रही मोहम्मद एक ही रात में अपनी 13 बीवियों के साथ सेक्स करते थे जबकि वह 50 वर्ष से ऊपर के हो चुके थे ज्यादा बीवियां होने के कारण उनकी बीवियों को कोई दूसरा हासिल न कर ले इसलिए उन्होंने इस्लाम में अल्लाह की तरफ से पर्दे यानी बुरखे का रिवाज शुरू कर दिया और उनकी बीवियां किसी दूसरे के साथ में यौन संबंध न करने पाए इस कारण उन्होंने अपनी बीवियों को इस्लाम के मानने वालों की मां का दर्जा दे दिया क्योंकि मोहम्मद द्वारा बनाए गए इस्लाम में सिर्फ मां एक ऐसा रिश्ता है जिसके साथ यौन संबंध नहीं बनाए जा सकते।

दरअसल इस्लाम मोहम्मद के दिमाग की उपज है मुसलमान कुरान व हदीसओ में मोहम्मद के शब्दों को पढ़ते हैं और उनके जीवन की हर एक चीज पर अमल करने की कोशिश करते हैं मुसलमान मानते हैं कि अगर मोहम्मद ने कुछ किया है भले ही वह भयानक

हो लेकिन उसे उचित समझना चाहिए इसके लिए किसी सवाल की कोई गुंजाइश नहीं होती और किसी को इसे परखने का अधिकार नहीं है मोहम्मद बहुत सी मानसिक बीमारियों से ग्रस्त थे वह अन्य मानसिक विचारों का भी शिकार थे लेकिन उनकी शारीरिक व मानसिक अवस्था ने इस्लाम को एक परिघटना बना दिया जिसे मोहम्मद के रूप में जाना जाता है।

दुनिया में इस्लाम के अलावा किसी और कारणों से इतना खून नहीं पाया गया है जितना इस्लामिक कट्टरवाद ने बहा दिया कुछ इतिहासकारों के मुताबिक अकेले भारत में ही इस्लाम की तलवार से 8 करोड़ हिंदुओं को मौत के घाट उतारा गया, फ्रांस मिस्र और कई देशों में जहां लुटेरे मुसलमानों का आक्रमण हुआ लाखों लोगों को काट डाला गया, गैर-मुसलमानों के सामूहिक क़त्ल का यह सिलसिला उस वक्त तो चला ही जब यह लुटेरे हमला कर रहे थे इसके बाद भी सदियों तक यह जारी रहा और यह खून खराबा आज भी जारी है।

मुहम्मद की आलोचना 7वीं शताब्दी से ही शुरु हो गयी थी। उदाहरण के लिए उनके गैर-मुस्लिम अरब समकालीनों ने उनकी बड़ी आलोचना की थी जब उन्होने एकेश्वरवाद के पक्ष में प्रचार किया था। इसी तरह अरब के यहूदी जनजातियों ने उनकी यह कहकर आलोचना की थी कि मुहम्मद ने बाइबिल के आख्यानों और व्यक्तियों का अनावश्यक रूप से अपना लिया, यहूदी विश्वास के विष को पी गए थे, और बिना किसी चमत्कार के प्रदर्शन करते

हुए खुद को "अंतिम पैगंबर" घोषित कर दिया था। यह भी आलोचना की गयी थी कि हिब्रू बाइबिल में भगवान द्वारा चुने गए सच्चे पैगंबर और झूठे दावेदार के बीच अन्तर बताया गया है। उस पर भी मुहम्मद खरे नहीं उतरते। इन्हीं सब कारणों से वे लोग मुहम्मद को "हा-मेशुगा" कहकर बुलाने लगे जिसका हिब्रू में अर्थ होता है- "पागल"

मध्य युग में विभिन्न पश्चिमी और बीजान्टिन ईसाई विचारक मुहम्मद को विकृत, दुराचारी, झूठा पैगम्बर, और यहां तक कि ईसाविरोधी मानते थे। ईसाई जगत में उन्हें अक्सर एक विधर्मी (heretic) या दानव के जाल में फंसा हुआ माना जाता था। उनमें से थॉमस एक्विनास आदि कुछ विचारकों ने मुहम्मद की इस बात के लिए आलोचना की कि उन्होने अगले जन्म में इन्द्रिय आनन्द मिलने का वादा किया।

आधुनिक काल में मोहम्मद के आलोचक उनके स्वयं को पैगम्बर घोषित करने को लेकर उनकी सच्चाई पर सन्देह करते हैं। इसी प्रकार आधुनिक विचारक उनकी नैतिकता पर शंका करते हैं, उनके द्वारा अपने अधिकार में गुलाम रखने की आलोचना करते हैं, शत्रुओं के साथ मुहम्मद द्वारा किए गए व्यवहार की आलोचना करते हैं, उनकी शादियों की आलोचना करते हैं। बहुत से लोग उनके मानसिक दशा की भी आलोचना करते हैं। मुहम्मद पर परपीड़न-रति (दूसरों को पीड़ा देकर काम सुख की अनुभूति करना और निर्दयी होने का आरोप लगाते हैं), मदीना में बानू कुरैजा ट्राइब

पर आक्रमण उनकी निर्दयता का ज्वलन्त एक उदाहरण बताया जाता है। इसके अलावा गुलामों के साथ लैंगिक सम्बन्ध स्थापित करना (सम्भोग करना), मात्र 6 वर्ष की आयशा के साथ शादी करने की भी आलोचना की जाती है क्योंकि अधिकांश अनुमानों के अनुसार मोहम्मद ने 9 वर्ष की आयु में ही आयशा के साथ सहवास कर लिया था।

अरब के रेगिस्तान में कबीलों की आपसी लड़ाई में मोहम्मद नामक मानसिक बीमार व्यक्ति ने एक शक्ति को अल्लाह का नाम देते हुए इस्लाम धर्म स्थापित किया और मोहम्मद की मृत्यु के बाद इस्लाम के क्रूर खलीफाओ ने इस्लाम को तलवार की नोक पर लोगों का गला काट कर जबरन पूरी दुनिया में इस्लाम को फैलाया जो आज दुनिया में एक बड़ा धर्म बन चुका है और दुनिया के लिए ही एक बहुत बड़ा खतरा बन चुका है।

मोहम्मद को जानना इसलिए भी बहुत जरूरी है की दुनिया के करोड़ो मुसलमान मोहम्मद बनने की कोशिश करते हैं जो मोहम्मद किया करते थे उसे सुन्नत कहकर अपने जीवन में शामिल करने की कोशिश करते हैं इसका परिणाम यह हो रहा है कि मुसलमानों में पागलपन धर्म के नाम पर ज्यादा पैदा हो रहा है मानवता यह खतरनाक दौर से गुजर रही है दुनिया में रहने वालों में से हर एक पांचवा मनुष्य एक मानसिक बीमार व्यक्ति को अल्लाह का संदेशवाहक यानी कि पैगंबर मानकर पूछ रहा है आत्मघाती हमले कर रहा है अपनी जान की परवाह किए बिना दूसरे मनुष्य की हत्या

कर रहा है खुद मरता है तो अपने को शहीद मानता है और दूसरे गैर मुसलमान को मारता है तो अपने को अल्लाह और रसूल का नेक बंदा समझता है जब तक मुसलमान मोहम्मद और मोहम्मद द्वारा बनाए गए अल्लाह पर विश्वास रखेंगे मोहम्मद द्वारा अल्लाह के संदेशों के माध्यम से बनाई गई पुस्तक पुराने मजीद को अल्लाह की किताब मानकर पढ़ेंगे तब तक इस दुनिया में हर मनुष्य के लिए जो किसी दूसरे धर्म को मानता है खतरा बना रहेगा।

मुसलमानों और गैर मुसलमानों दोनों के लिए मोहम्मद के चरित्र को समझना बहुत जरूरी है इसी उद्देश्य से यह पुस्तक लिखी गई है ताकि गलत सही का फैसला मुसलमान और गैर-मुसलमान खुद करें हो सकता है आज या 200 साल बाद अपने को मुसलमान कहने वाला व्यक्ति अपने अंदर झांक कर मानवता को ढूंढें और मोहम्मद द्वारा स्थापित किए गए क्रूर इस्लाम को छोड़कर इंसानियत का धर्म धारण करें।

मैंने इस पुस्तक को खास करके मुसलमानों के लिए लिखा है मोहम्मद एक लुटेरे गिरोह के सरदार थे सामूहिक नरसंहार करने वाला बच्चों के साथ यौन संबंध स्थापित करने वाले थे अनेक महिलाओं के साथ यौन संबंध स्थापित करने वाले औरतखोर थे और काफी कुछ मोहम्मद को कहा जा सकता है लेकिन मुसलमान बिना समझे इस तरह की बातों को सिरे से खारिज कर देते हैं और बिना सवाल किए इस्लाम की हर इस तरह की बकवास पर भरोसा करते हैं।

लेखक का संक्षिप्त परिचय

मेरे पिता स्वर्गीय सैयद मोहम्मद जकी का देहांत उस वक्त हो गया था जब मैं मात्र 10 साल का था मैं अपने भाई बहनों में सबसे बड़ा हूं मेरे दो भाई और एक बहन है, ग्रेजुएशन तक अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं अपने परिवार का सहारा बनने के लिए नौकरी की तलाश में सऊदी अरब चला गया, सऊदी अरब में मैंने एक रेस्टोरेंट में नौकरी की वहां हमें एक एजेंट द्वारा धोखे से भेजा गया था, यह बता कर कि जहां मैं नौकरी करने जा रहा हूं वह फाइव स्टार होटल है लेकिन घरेलू हालात देखकर मैंने रेस्टोरेंट में ही काम करना सही समझा लेकिन जब एक महीना गुजर गया और जब हमको वेतन मिला तो जो वेतन बताया गया था उसका आधा था मैं उस वेतन को लेकर रेस्टोरेंट के मालिक के पास गया वह एक मुल्ला था हमने उसको अपने साथ हुए धोखे के बारे में बताया लेकिन उसको हम पर तरस नहीं आया तो हमने उसके रेस्टोरेंट में काम करने से मना कर दिया तो सजा के तौर पर उसने हमें एक रेगिस्तान में एक खंडहर में रख दिया, यह कहकर कि जब तुम्हारा टिकट हो जाएगा तो हम तुम्हें हिंदुस्तान वापस भेज देंगे।

वह रेगिस्तान की तनहाइयां और पूरे रेगिस्तान में एक अकेला मैं जो बगैर रोशनी के एक टूटे हुए कमरे में जहां रेस्टोरेंट के मालिक का गोदाम था रह रहा था पानी लेने के लिए रेगिस्तान की रेतीली जमीन पर 4 घंटे तक चलने के बाद सड़क मिलती थी जहां एक

छोटी सी दुकान थी और उस दुकान से मैं खाने के लिए तेल नमक अंडा और अरबी रोटी और पीने के लिए पानी लेकर आता था मैंने 13 दिन तक सुबह, शाम, रात अरबी रोटी और अंडे तलकर खाए हैं लेकिन हम इस बात पर तैयार नहीं थे कि हम इतनी कम तन्ख्वा में उस रेस्टोरेंट में काम करें 1 दिन ऐसा हुआ कि रेस्टोरेंट का मुख्य बावर्ची भाग गया, तब रेस्टोरेंट का मालिक 13 दिन बाद मेरे पास आया और मुझसे कहा कि तुम जो वेतन मांग रहे हो हम उसको देने को तैयार है मेरी मदद करो और मेरा रेस्टोरेंट संभाल लो हमने उससे कहा कि यह मेरी जिद है कि हम तुम्हारे रेस्टोरेंट में काम नहीं करेंगे लेकिन तुम्हारी मदद के लिए हम तुम्हारा रेस्टोरेंट संभाल लेंगे, मैंने उस रेस्टोरेंट में 6 महीने काम किया और वापस हिंदुस्तान चला आया।

हिंदुस्तान आकर मैं नगीनों की ट्रेडिंग का काम करने लगा और फिर लखनऊ के कश्मीरी मोहल्ला वार्ड से पार्षद हो गया दो बार पार्षद रहने के बाद मैं उत्तर प्रदेश शिया सेंट्रल वक्फ बोर्ड का मेंबर हुआ और मेंबर होने के बाद मैं 4 बार उत्तर प्रदेश शिया सेंट्रल वक्फ बोर्ड में अध्यक्ष के पद पर चुना गया मेरे द्वारा हमेशा से अपने सिद्धांतों के अनुसार चलने की आदत थी मुसलमानों की दूसरे धर्म के लोगों से कट्टरता मुझे कभी अच्छी नहीं लगती थी मैं मंदिर भी जाता था मेरे बहुत से दोस्त हिंदू थे उनके घर भी जाता था और अपने उन दोस्तों के साथ रहना पसंद करता था जो दिल से किसी दूसरे धर्म के लोगों के साथ कट्टर ना हो बचपन में मेरे माता-पिता ने मुझे कुरान-ए-मजीद पढ़वाया एक मौलवी साहब मुझे पढ़ाने आते

थे जब कुरान-ए-मजीद मैंने पूरा पढ़ लिया तो मोहल्ले में रिश्तेदारों में मिठाई बांटी गई की मैंने कुरान-ए-मजीद खत्म कर लिया है।

लेकिन उस वक्त मैंने सिर्फ कुरान-ए-मजीद पढ़ा था अरबी भाषा में, उसका मतलब नहीं समझा था, लेकिन कुछ महीने पहले जब मैंने कुरान-ए-मजीद के मतलब को समझना शुरू किया तो यह समझ में आया की दुनिया में जो आतंकवाद फैला हुआ है वह शायद इसी किताब की देन है क्योंकि इसमें जो कुछ लिखा है वह दुनिया के हर मनुष्य के लिए अच्छा नहीं है सिर्फ जो इस्लाम को माने अल्लाह रसूल को माने और उनके दिए गए निर्देशों का कट्टरता से पालन करें वही सही मुसलमान है यह मेरे समझ में नहीं आया तब मैंने कुरान-ए-मजीद में जो मानवता के विरुद्ध आयते लिखी गई है उनका विरोध किया भारत के सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दाखिल की, परंतु एक धार्मिक किताब को मानते हुए न्यायालय द्वारा मेरी याचिका खारिज कर दी, परंतु मेरी याचिका मानवता पर आधारित थी मानव के अधिकारों पर आधारित थी आतंकवाद से अपने देश में चल रही गतिविधियों की सुरक्षा पर आधारित थी लेकिन हम अपने न्यायालय के फैसले का सम्मान करते हैं इसलिए उस पर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहते।

मैंने कुरान-ए-मजीद को समझने के बाद कुरान-ए-मजीद को इस दुनिया में लाने वाले मोहम्मद की जिंदगी को समझने की कोशिश की, अनेक किताबों को पढ़ा तब मुझे लगा कि कुरान-ए-मजीद अल्लाह की किताब नहीं है यह तो एक मोहम्मद नाम के मानसिक

तौर पर बीमार व्यक्ति द्वारा कल्पना के अनुसार अपने वर्चस्व को अरब में कायम करने के लिए लूटपाट करने के लिए और पुरुषों द्वारा महिलाओं का यौन शोषण करने के लिए अपनी हवस का शिकार करने के लिए लिखी गई एक ज़हरीली किताब है और जो मुसलमान इसको पढ़कर कट्टरपंथी मानसिकता की तरफ बढ़ रहे हैं इसी कारण पूरे विश्व में मुसलमानों द्वारा अशांति फैलाई जा रही है मैंने यह फैसला किया कि अब मैं अपने जीवन को इस बात के लिए समर्पित करूंगा की मैं अकेला ही सही लेकिन पूरी दुनिया को इस्लाम, पैगंबर, मोहम्मद और मोहम्मद के द्वारा बनाए गए कुरान-ए-मजीद और उनके साथी खलीफाओ की असलियत से रूबरू करू जिनकी वजह से पूरी दुनिया का हर आम व्यक्ति खतरे में फंस गया है मुझे लगता है कि डर के असलियत को छुपा कर जीने से बेहतर मरना होगा।

सय्यद वसीम रिज़वी
पुत्र स्वर्गीय सय्यद ज़की
निवासी - 394/13 A कश्मीरी मोहल्ला,
थाना सआदतगंज, लखनऊ - 226003

इस्लामी आतंकवाद

इस्लामिक आतंकवाद या कट्टरपन्थी इस्लामी आतंकवाद हिंसक इस्लामवादियों द्वारा किये गये निर्दोष नागरिकों के विरुद्ध आतंकवादी कार्य हैं जिनकी एक पान्थिक प्रेरणा होती है।

इस्लामी आतंकवाद अपने को मुसलमान कहने वाले चरमपन्थियों द्वारा किये गये आतंक को 'इस्लामी आतंकवाद' कहते हैं। ये तथाकथित अपने भाँति-भाँति के राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये आतंक फैलाते हैं।

इस्लामी आतंकवाद के कारण से सबसे अधिक घटनाएँ और मौतें भारत, इराक, अफ़गानिस्तान, नाइजीरिया, यमन, सोमालिया, सीरिया और माली में हुई; हैंग्लोबल टेररिज़्म इण्डेक्स के अनुसार, 2015 में इस्लामिक आतंकवाद से सभी मौतों के 74% के लिए इस्लामिक चरमपन्थी समूह उत्तरदायी थे: आई॰एस॰आई॰एस॰, बोको हराम, तालिबान और अल-कायदा। सन् 2000 के बाद से, ये घटनाएँ वैश्विक स्तर पर हुई हैं, जो न केवल अफ्रीका और एशिया में मुस्लिम-बहुल राज्यों को प्रभावित करती हैं, बल्कि गैर-मुस्लिम बहुमत वाले राज्यों को जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, बेल्जियम, स्वीडन, रूस, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, श्रीलंका, इजरायल, चीन, भारत और फिलीपींसको भी प्रभावित करती हैं। इस प्रकार के हमलों ने गैर-मुस्लिमों को निशाना बनाया है। एक फ्रांसीसी गैर-सरकारी संगठन

द्वारा किये गये एक अध्ययन में पाया गया कि 80% आतंकवादी पीड़ित मुस्लिम हैं।सबसे अधिक प्रभावित मुस्लिम-बहुल क्षेत्रों में, इन आतंकवादियों को सशस्त्र, स्वतन्त्र प्रतिरोध समूहों, राज्य प्रायोजित आतंकवादी संगठन और उनके समर्थकों, और अन्य जगहों पर प्रमुख इस्लामी आँकड़ों से आने वाली निन्दा द्वारा मिले हैं।

इस्लामी चरमपन्थी समूहों द्वारा नागरिकों पर हमलों के लिए दिए गए औचित्य इस्लामी पवित्र पुस्तकों कुरान और हदीस साहित्य की चरम व्याख्याओं से आते हैं। इनमें मुसलमानों के खिलाफ अविश्वासियों के कथित अन्याय के लिए सशस्त्र जिहाद द्वारा प्रतिशोध (विशेष रूप से अल-कायदा द्वारा) शामिल हैं यह विश्वास कि कई स्व-घोषित मुसलमानों की हत्या की आवश्यकता है। क्योंकि उन्होंने इस्लामी कानून का उल्लंघन किया है। और वास्तव में अविश्वासवादी हैं (कफ़र); विशेष रूप से इस्लामिक राज्य (विशेष रूप से आईएसआईएस) के रूप में खलीफ़ा को बहाल करके इस्लाम को बहाल करने और शुद्ध करने की आवश्यकता; शहादत की महिमा और स्वर्गीय पुरस्कार; अन्य सभी पन्थों पर इस्लाम की सर्वोच्चता।

कुछ मुस्लिम विद्वान इस बात पर जोर देते हैं कि इस्लाम में चरमपन्थ 7वीं शताब्दी में अस्तित्व में आए खैरों के दौरान से है, अपनी अनिवार्य राजनीतिक स्थिति से, उन्होंने चरम सिद्धान्त विकसित किए जो उन्हें मुख्यधारा के सुन्नी और शिया मुसलमानों

दोनों से अलग करते हैं। खाक्रिजियों को विशेष रूप से तक़रीर के लिए एक कट्टरपन्थी दृष्टिकोण अपनाने के लिए जाना जाता था, जिससे उन्होंने घोषणा की कि अन्य मुस्लिम अविश्वासी थे और इसलिए मृत्यु के योग्य थे।

दुनिया ने मार्क्सवादी और पश्चिमी परिवर्तन और आन्दोलनों की एक शृंखला देखी। ये आन्दोलन क्रान्तिकारी-राष्ट्रवादी थे, न कि इस्लामी, लेकिन उन्हें लगा कि आतंकवाद एक प्रभावी रणनीति है, जिसने आधुनिक युग में अन्तरराष्ट्रीय आतंकवाद के पहले चरण को जन्म दिया। छह-दिवसीय युद्ध के बाद, फिलिस्तीनी नेताओं ने महसूस किया कि अरब दुनिया इजरायल को नियमित युद्ध में नहीं हरा सकती है। फिलिस्तीनी समूहों ने तब क्रान्तिकारी आन्दोलनों का अध्ययन किया, जिससे उन्हें शहरी क्षेत्रों में गुरिल्ला युद्ध से आतंकवाद पर ध्यान केन्द्रित करने में सहायता मिली। इन आन्दोलनों ने पूरी दुनिया में आतंकवादी रणनीति फैलाई।

छह-दिवसीय युद्ध बनाम इजरायल में अरब राष्ट्रवादियों की विफलता के बाद, पान्थिक रूप से प्रेरित समूह, मुस्लिम-भाईचारे के प्रसिद्ध होने के साथ, सऊदी अरब के समर्थन से प्रभाव में वृद्धि हुई और मध्य पूर्व में पन्थनिरपेक्ष राष्ट्रवादियों के साथ टकराव में आ गया।

1979 की ईरानी क्रांति, अन्तरराष्ट्रीय इस्लामी आतंकवाद की एक प्रमुख घटना थी। सोवियत-अफ़गान युद्ध और 1979 से 1989 तक चलने वाले निम्नलिखित मुजाहिदीन टकराव ने इस्लामी

आतंकवादी समूहों को अनुभवी जिहादियों में परिवर्तित किया। 1996 में गठन के बाद से, अफ़गानिस्तान में पाकिस्तान समर्थित तालिबान सैन्य समूह ने आतंकवाद के राज्य प्रायोजकों से जुड़ी कई विशेषताओं का अधिग्रहण किया है।

RAND के ब्रूस हॉफ़मैन ने कहा कि 1980 में 64 में से केवल 2 आतंकवादी संगठनों को पान्थिक के रूप में वर्गीकृत किया गया था, 1995 तक 56 (लगभग आधे) आतंकवादी संगठन पान्थिक रूप से प्रेरित थे, इन समूहों में इस्लाम पन्थ की कट्टरता थी।

1989 से, पान्थिक चरमपन्थी अपने तत्काल क्षेत्र के बाहर लक्ष्य पर हमला करने के लिए अधिक सचेत थे, वर्ल्ड ट्रेड सेण्टर की 1993 की बमबारी और 2001 के 11 सितम्बर के हमले इस प्रवृत्ति को दर्शाते हैं।

जर्मन अखबार वेल्ट एम सोनटैग के शोध के अनुसार, 11 सितम्बर 2001 और 21 अप्रैल 2019 के बीच 31,221 इस्लामवादी आतंकवादी हमले हुए, जिसमें कम से कम 1,46,811 लोग मारे गए, जिनमें से कई पीड़ित मुस्लिम थे।

इस्लामी आतंकवादियों की प्रेरणा सदैव विवादित रही है। कुछ (जैसे जेम्स एल० पायने) ने इसे "यू०एस० / पश्चिम / यहूदी आक्रामकता, उत्पीड़न, और मुस्लिम भूमि और लोगों के शोषण के विरुद्ध संघर्ष के लिये उत्तरदायी ठहराया"।

डैनियल बेंजामिन और स्टीवन साइमन ने अपनी पुस्तक द एज ऑफ़ सेक्रेड टेरर में लिखा है कि इस्लामी आतंकवादी हमले विशुद्ध रूप से पान्थिक हैं। उन्हें "एक संस्कार के रूप में देखा जाता है ... ब्रह्माण्ड को बहाल करने का इरादा एक नैतिक आदेश है जो इस्लाम के दुश्मनों द्वारा दूषित किया गया था।" यह न तो राजनीतिक या रणनीतिक है बल्कि "मोचन का कार्य" का अर्थ "ईश्वर के आधिपत्य को नकारने वाले को अपमानित करना और उनका वध करना है"।

चार्ली हेब्डो के ऊपर गोलीबारी के लिए उत्तरदायी कोउची भाइयों में से एक ने फ्रांसीसी पत्रकार को यह कहते हुए बुलाया, "हम पैगंबर मोहम्मद के रक्षक हैं।

इण्डोनेशियाई इस्लामी नेता याह्या चोलिल स्टाक्फ के 2017 के टाइम मैगजीन के साक्षात्कार में, शास्त्रीय इस्लामी परम्परा के भीतर मुसलमानों और गैर-मुस्लिमों के बीच सम्बन्ध अलगाव और दुश्मनी में से एक माना जाता है।

मोहम्मद

मोहम्मद कौन थे और उनकी क्या सोच थी इस अध्ययन में हम एक ऐसे इंसान के जीवन के विभिन्न प्रकार के रूप देखेंगे जिसकी करोड़ों की तादात में दूसरे इंसान इबादत करते हैं दरअसल इस्लाम और कुछ नहीं केवल मोहम्मदवाद है मुसलमान दावा करते हैं कि वह केवल एक अल्लाह की इबादत करते हैं अल्लाह और कुछ नहीं केवल मोहम्मद के अहंकार से पैदा हुई कल्पना है।

जो मोहम्मद ने अल्लाह की तरफ से बताया और मोहम्मद बाद में उसे जमा करके इस्लाम के खलीफाओ ने कुरान ए मजीद जैसी एक किताब तैयार की जिसको मुसलमान अल्लाह की किताब मानता है और यह मानता है। कि यह सारे शब्द अल्लाह के हैं। हम मोहम्मद को उनके साथियों और उनकी बीवियों की नजर से देखेंगे और यह भी जानेंगे कि कुछ सालों में एक व्यक्ति मोहम्मद पूरे अरब का धार्मिक शासक कैसे बन गया। कैसे मोहम्मद ने इंसानों के दिलों में दरार पैदा कर दी। कैसे मोहम्मद ने अपने विचारों से सहमत ना होने वाले लोगों के खिलाफ जंग करने के लिए लोगों में विद्रोह की आग लगा दी। कैसे मोहम्मद ने घाट बलात्कार, शारीरिक यातना और हत्याओं को अंजाम दिया। आज के मुस्लिम कट्टरपंथी और मुस्लिम आतंकवादी संगठन मोहम्मद की इसी रणनीति का इस्तेमाल करती है, मोहम्मद को समझने के बाद आप

यह जान जाएंगे कि इस्लामिक आतंकवादी वही करते हैं जो मोहम्मद ने किया।

अरब के मक्का शहर में वर्ष 570 ईसवी में एक युवा महिला आमना ने एक पुत्र को जन्म दिया आमना ने बेटे का नाम मोहम्मद रखा हालांकि मोहम्मद आमना की इकलौती संतान थे, फिर भी उसने पालन पोषण के लिए मोहम्मद को रेगिस्तान में रहने वाले एक खानाबदोश दंपत्ति को सौंप दिया उस वक्त मोहम्मद मात्र 6 माह के थे।

आमना ने अपनी इकलौती संतान को पालने के लिए किसी और को क्यों दिया मोहम्मद की मां आमना के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है, इसलिए उनको और उनके इस निर्णय को समझ पाना मुश्किल है।

मोहम्मद अजनबीयों के बीच पले बढे जब उन्हें थोड़ी समझ हुई तो जान सके कि जिसके साथ वह रह रहे थे वह उनका परिवार नहीं है, उनके मन में यह सवाल जरूर आया होगा की क्यों उनकी मां उन्हें अपने पास नहीं रखना चाहती, मोहम्मद साल में दो बार अपनी मां से मिलने भी जाते थे।

कुछ सालों बाद हलीमा कहती थी कि पहले वह मोहम्मद को नहीं लेना चाहती थी क्योंकि वह एक गरीब विधवा का अनर्थ बेटा थे और उसके पास कुछ नहीं था क्योंकि उसे किसी अमीर परिवार का बच्चा नहीं मिल सका इसलिए उसने मजबूरी में मोहम्मद को लिया क्योंकि उसके परिवार को पैसे की जरूरत थी हालांकि मोहम्मद की

देखभाल के एवज में उसे अधिक कुछ नहीं मिलता था क्या आमना को पता नहीं चला कि हलीमा मोहम्मद का कितना ध्यान रखती है, उम्र के उस नाजुक दौर में जब बच्चे का चरित्र सवारा जाता है। लेकिन मोहम्मद को उस दौर में परिवार का प्यार नहीं मिला हलीमा ने कहा है कि मोहम्मद गुमसुम अकेला रहने वाला बच्चा थे। वह अपने विचारों की दुनिया में खोए रहते थे। दोस्तों से भी इस तरह चोरी छुपे बातचीत करते थे कि उन्हें कोई और ना देख पाए यह एक ऐसे बच्चे की प्रतिक्रिया थी जो वास्तविक दुनिया से प्यार नहीं कर सका और इसलिए उन्होंने ऐसी काल्पनिक दुनिया बताना शुरू कर दी।

आमना की मौत के बाद मोहम्मद ने 2 साल अपने दादा अब्दुल मुत्तलिब के घर पर बिताए उनके दादा को इस बात का ख्याल था की उनके पोते ने अभी तक अनाथ जीवन जिया है, तो वह अपने मरे हुए बेटे अब्दुल्ला की इस निशानी के ऊपर प्यार और धन दौलत लुटाने लगे इब्ने साद लिखता है कि मोहम्मद के दादा ने इस बच्चे को इतना लाड-प्यार दिया जो उन्होंने कभी अपने बेटे को नहीं दिया था।

पर मोहम्मद पर बदकिस्मती अभी खत्म नहीं हुई थी यहां रहते अभी दो ही साल बीते थे कि मोहम्मद के दादा की 82 वर्ष की उम्र में मौत हो गई, मोहम्मद अपने चाचा अबू तालिब के संरक्षण में आ गए। दादा का दुनिया से चले जाना इस अनाथ बच्चों को बहुत खला, जब दादा का जनाजा कब्रिस्तान में लाया जा रहा था ,

तो मोहम्मद बहुत रोए थे । उसके बाद चाचा अबू तालिब ने बड़ी जिम्मेदारी के साथ मोहम्मद को पाला-पोसा, अबू तालिब ने मोहम्मद को उसी तरह लाड प्यार दिया जैसे उनके पिता देते थे अबू तालिब मोहम्मद को बिस्तर पर ले जाकर सुलाते थे, अपने हाथ से खाना खिलाते थे, हालांकि अबू तालिब बहुत अमीर नहीं थे फिर भी उन्होंने मोहम्मद को अपने बच्चों से ज्यादा लाड प्यार दिया।

एक दिन अबू तालिब व्यापार के सिलसिले में सीरिया जाने को तैयार हुए लेकिन जब कारवां सफर के लिए तैयार हुआ और अबू तालिब ऊंट पर सवार होने लगे तो मोहम्मद को लगा कि वह बहुत दिनों के लिए उनसे दूर जा रहे हैं। यह सोचकर मोहम्मद अबू तालिब से बहुत देर तक चिमट कर रोते रहे अबू तालिब अपने भतीजे के आंसू नहीं देख पाए और उन्हें अपने साथ लेते गए।

अबू तालिब हमेशा अपने बच्चों से ज्यादा मोहम्मद का पक्ष लेते थे। अबू तालिब ने मरते वक्त अपने भाइयों से गुजारिश की थी कि वह मोहम्मद का ध्यान रखें हालांकि उस समय मोहम्मद की उम्र 53 वर्ष थी सभी भाइयों ने अबू तालिब से वादा किया कि वह हमेशा मोहम्मद की रक्षा करेंगे वचन देने वालों में अब लहब भी शामिल थे, जिन पर बाद में मोहम्मद ने लानत भेजी थी।

अरब की सबसे अमीर औरत खदीजा से मोहम्मद की शादी

मोहम्मद ना तो सामाजिक थे और ना ही किसी काम में उनका कोई दिल लगता था वह अकेला रहना ज्यादा पसंद करते थे मोहम्मद अपने विचारों में खोए रहने वाले व्यक्ति थे।

अबू तालिब ने 25 वर्ष की उम्र में मोहम्मद को एक नौकरी दिलवा दी उन्हें अपनी एक रिश्तेदार और अमीर व्यापारी खदीजा के यहां काम पर रखवा दिया। खदीजा 40 साल की उम्र में एक सफल अमीर व्यापारी थी। और विधवा थी। खदीजा के हुकुम पर एक बार मोहम्मद को खदीजा का सामान बेचने और कुछ सामान खरीदने के लिए सीरिया भेजा गया। मोहम्मद जब लौटकर आए तो खदीजा उनके प्यार में गिरफ्तार हो चुकी थी।

ख़दीजा ने एक विश्वासू सहेली नफीसा पर, मुहम्मद को शादी करने पर विचार पूछने का जिम्मा सौंपा। सबसे पहले मुहम्मद ने संकोच किया क्योंकि उनके पास विवाह निभाने हेतु पैसे नहीं थे। नफीसा ने पूछा कि क्या अगर एक औरत जो विवाह के लिए सभी साधन जुटाए, तो वह शादी करने पर विचार करेंगे। इसपर मुहम्मद-ख़दीजा साथ मिलने के लिए सहमत हुए, और इस बैठक के बाद उन्होंने अपने-अपने चाचा से सलाह ली। चाचा ने शादी के लिए सहमति व्यक्त की, और मुहम्मद के चाचा ख़दीजा के लिए एक औपचारिक

प्रस्ताव रखने के लिए राजी हुए। यह विवादित है, कि केवल हमजा बिन अब्दुल मुत्तलिब या केवल अबू तालिब या दोनों थे, जो इस काम पर मुहम्मद के साथ गये थे। ख़दीजा के चाचा ने प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया, और शादी हुई।

ख़दीजा मुहम्मद की पहली पत्नी थी वह इस्लाम धर्म स्वीकार करनेवाली पहली महिला थी।

खदीजा के साथ विवाह करना ऐसा था जैसे कि मोहम्मद को कोई बड़ा खजाना मिल गया हो, खदीजा क्योंकि मोहम्मद से उम्र में लगभग दुगनी थी। इसलिए मोहम्मद को बेपनाह प्यार करती थी। वह प्यार मां अपने बच्चे के साथ में कर सकती है और खदीजा को यौन संबंध के लिए एक नौजवान लड़का मिल गया था। मोहम्मद भी प्यार के लिए तरस रहे थे और दूसरे इस शादी से मोहम्मद को दौलत भी मिल गई और सुरक्षा भी, अब मोहम्मद को कोई काम काज करने की कोई जरूरत नहीं थी।

खदीजा अपने युवा पति की जरूरतों का कुछ अधिक देखभाल रखने लगी खदीजा मोहम्मद पर अपना सब कुछ लुटाने को तैयार रहती थी। और मोहम्मद पर जो दौलत वह लुटाती थी उससे उन्हें खुशी मिलती थी।

क्योंकि खदीजा को कम उम्र का एक नौजवान लड़का मिल गया था, जो बचपन से मानसिक तौर पर अलग-फलक रहकर मानसिक बीमारी से ग्रस्त था और उसमें इस कारण सेक्स करने की क्षमता

दूसरे नौजवान लड़कों से ज्यादा थी, खदीजा मोहम्मद से शारीरिक संबंध बनाने के लिए हर वक्त तैयार रहती थी।

खदीजा और मोहम्मद की शादी के बाद मोहम्मद से खदीजा ने एक बेटी को जन्म दिया जिनका नाम फातिमा रखा गया।

40 वर्ष की आयु में मोहम्मद ने एक गुफा में कई दिन बिताए और बाहर आने पर उन्हें अजीब सा एहसास हुआ। उनकी मांसपेशियों में अजीब सा खिंचाव होने लगा उन्हें ऐसा लगा कि उनके शरीर को कोई निचोड़ रहा है। उनका सिर और होठ असामान्य तरीके से हिलने लगे वह पसीने से लथपथ हो गए थे। और हृदय की धड़कन तेज हो गई थी। इस अवस्था में उन्हें अदृश्य आवाज सुनाई दी और कोई अजीब सी आकृति दिखी।

डर से कांपते हुए पसीने से लथपथ वह घर की ओर भागे और बीवी खदीजा के सामने गिड़गिड़ाने लगे, मुझे-छुपाओ मुझे-छुपाओ, अरे-ओ खदीजा देखो मुझे क्या हो रहा है। मोहम्मद ने खदीजा को बताया कि उनके साथ क्या-क्या हुआ खदीजा ने मोहम्मद को हिम्मत दी और बोली डरो नहीं कुछ नहीं होगा खदीजा ने मोहम्मद को समझाया की उनके पास फरिश्ता आया था और उन्हें पैगंबर बनाने के लिए चुना गया है। उस आकृति को खदीजा ने जिब्रील का नाम दिया था। मोहम्मद यकीन करने लगे कि उनका दर्जा अब पैगंबर का हो गया है। और यह काल्पनिक संसार मोहम्मद को उपयुक्त भी लगा क्योंकि मोहम्मद पहले से ही काल्पनिक दुनिया में जीता थे और मोहम्मद ने अपने को अल्लाह

नामक शक्ति का पैगंबर मान लिया मोहम्मद ने अल्लाह के नाम पर उपदेश देना शुरू कर दिए।

अब मोहम्मद अल्लाह के पैगंबर बन चुके थे। और धीरे-धीरे अरब के लोगों ने उन्हें अल्लाह का पैगंबर भी मानना शुरू कर दिया था। मोहम्मद ने कहा कि लोगों को अब उनसे मोहब्बत करनी होगी। उनका सम्मान करना होगा। उनके हुक्म का पालन करना होगा। उनके बताए मार्ग पर चलना होगा और उनसे डरना भी होगा। इसके बाद 23 साल तक वह लगभग यही पैगाम लोगों को सुनाता रहा।

इस्लाम का मुखराम यही है कि मोहम्मद अल्लाह के पैगंबर है। और सब को उनकी आज्ञा का पालन करना होगा। इसके अलावा इस्लाम में कोई संदेह नहीं है, उनको पैगंबर स्वीकार नहीं करने वाले के लिए इस लोक में भी और मरने के बाद परलोक में भी सजा मिलेगी।

मोहम्मद सालों तक मक्का निवासियों के मूल धर्म व देवताओं का मजाक उड़ाते रहे और अपमान करते रहे मक्का के लोगों ने मोहम्मद और उनके अनुयायियों से सारे संबंध खत्म कर लिए बाद में मक्का वालों को संतुष्ट करने के लिए मोहम्मद उनसे समझौता करने के लिए मजबूर हो गए।

इब्ने साहब लिखते हैं कि 1 दिन रसूल काबा के पास लोगों के बीच सूरा अल- नज़्म (सुरा 53) पढ़कर सुना रहे थे। जब वो आयात 19-20 पर पहुंचे और कहा " तो भला तुम लोगों ने लात व उज़्जा और तीसरे मनात को देखा" तो शैतान ने रसूल के मुंह में

डालकर नीचे की दो आयतें कहलवाई यह तीनों देवियां सुखदाई हैं। इनकी मध्यता बख्शीश की उम्मीद है।

इन शब्दों से मक्का के प्रभावशाली कुरेश बहुत खुश हुए। मोहम्मद का बहिष्कार और उन से दुश्मनी खत्म कर दी। यह खबर अबीसीनिया मैं रह रहे मुसलमानों तक पहुंची वह खुश होकर मक्का लौट आए।

कुछ समय बाद मोहम्मद को एहसास हुआ कि वह अल्लाह की तीन बेटियों को मान्यता देकर वह खुद का नुकसान कर रहे है, क्योंकि इससे अल्लाह और इंसान के बीच एकमात्र संदेशवाहक होने का उनका दावा कमजोर हो सकता है। उन्होंने नए मजहब को प्रचलित मूर्तिपूजको के धर्म से अलग व श्रेष्ठ दिखाने की मेहनत पर पानी फिरता देख मोहम्मद फिर से पलट गए, फिर उन्होंने कहा कि अल्लाह की बेटियों को मान्यता देने वाली आयतें शैतानी है।

मोहम्मद ने इन आयतों की जगह दूसरी आयतों में कहा कि, क्या तुम्हारे लिए बेटे और उनके लिए बेटियां यह तो नाइंसाफी का बंटवारा है। मतलब यह था कि तुम्हें अल्लाह के मत्थे बेटियां मढ़ने की हिम्मत कैसे की, जबकि तुम खुद बेटा पैदा करने पर गर्व महसूस करते हो औरतों की बुद्धि कम होती है। और अल्लाह के पास बेटियां होंगी यह कहना सरासर अनुचित है। यह बंटवारा बिल्कुल अन्यायपूर्ण है।

यह सुनकर मोहम्मद के कुछ अनुयायियों ने उनका साथ छोड़ दिया अपने इस यूटर्न को सही साबित करने और उसका विश्वास दोबारा

हासिल करने के लिए मोहम्मद ने दावा किया कि शैतान ने पहले के पैगंबरों को भी बेवकूफ बनाया था। शैतान ने उन पैगंबरों के मुंह से ऐसी राक्षसी आए थे करवाई थी जो अल्लाह के पैगाम होने का भ्रम पैदा करती थी।

और ए रसूल हमने तुमसे पहले जब कभी कोई रसूल और नबी नहीं भेजें पर यह जरूर हुआ है कि जिस वाह उनसे धर्म प्रचार के हुक्म की आरज़ू की तो शैतान ने उनकी आरज़ू में लोगों को बहका कर खलल डाल दीया फिर जो आशंका शैतान डालता है अल्लाह उसे रख कर देता है फिर अपने हुक्म को मजबूत करता है अल्लाह तो सब जानता है और शैतान जो आशंका डालता भी है तो इसलिए ताकि अल्लाह उन लोगों को आजमाइश का जरिया करार दे जिनके दिलों में कुफ्र की बीमारी है (कुरान 22:52-53)

मोहम्मद ने यह आयते इसलिए कहीं क्योंकि उनके बहुत से अनुयाई यह जानकर उन्हें छोड़ गए थे कि वह कुरान किसी अल्लाह का पैगाम नहीं है बल्कि यह मोहम्मद की परिस्थितियों पर आधारित है।

30 साल बीत चुके थे लेकिन 70 से 80 लोग ही मोहम्मद जुटा सके थे जो उनके मजहब पर विश्वास करते थे उनकी बीवी खदीजा पहली अनुयाई थी क्यों ना केवल उनकी जरूरतें पूरी करती थी बल्कि उनकी खुशामद भी करती थी और मोहम्मद की दासी बनकर हर तरीके से मोहम्मद को देवता मानने की कोशिश करती थी।

मोहम्मद की बीवी खदीजा ने मोहम्मद से अबू बकर उस्मान व उमर जैसे औसत लोगो को जुड़ने में अहम भूमिका निभाई।

जब मोहम्मद ने मूर्तिपूजको के देवी देवताओं का अपमान किया तो यह मक्का के लोगों को बर्दाश्त नहीं हुआ इसलिए इन लोगों ने मोहम्मद व उनके अनुयायियों का बहिष्कार कर दिया मक्का के लोगों ने यह निर्णय लिया कि मोहम्मद व उनके अनुयायियों को ना तो कोई वस्तु बेचेगा ना ही उनसे कुछ खरीदेगा यह बहिष्कार करीब 2 साल तक चला इससे मुसलमानों के सामने बड़ी कठिनाई आई ।

मोहम्मद ने अपने अनुयायियों से मक्का छोड़ने को कहा इससे वह लोग जिनके बच्चों ने या वह लोग जिन्होंने इस्लाम कुबूल किया था परेशान हो गए कुछ गुलाम भागते हुए पकड़ लिए गए तो उनकी पिटाई की गई, यह निश्चित रूप से धार्मिक जुल्म है। मुसलमानों ने उन परिवारों को पीटा जिन्होंने इस्लाम धर्म कबूल नहीं किया था।

एक हदीस कहती है कि जब उमर मुसलमान नहीं बना था, तो एक दिन उसने अपनी बहन को बंधक बना लिया और इस्लाम छोड़ने का दबाव बनाने लगा हालांकि बाद में उमर भी मुसलमान बन गया था उमर मुसलमान बनने से पहले भी सख्त और हिंसक इंसान था और मुसलमान बनने के बाद भी वह ऐसा ही रहा।

मुसलमानों पर जुल्म किए गए इसको लेकर बहुत से झूठे किस्से सुनाए जाते हैं सुमय्या नाम की महिला को लेकर मुसलमानों पर जुल्म का एक किस्सा सुनाया जाता है। इब्ने साद एक मात्र

इतिहासकार है जिसने कहा कि अबू जहल के हाथों सुमय्या की शहादत हुई, साद का हवाला देते हुए अल - बयहाकी लिखता है:- कि अबू जहल ने सुमय्या की योनि में चाकू से गोद डाला था अगर शहादत की यह घटना वाकई होती तो मोहम्मद की बढ़ाई लिखने वाला हर लेखक इसका ढिंढोरा पीटना और मुस्लिम लोक परंपराओं इस शहादत का महिमामंडन किया गया होता यह एक तरह का उदाहरण है की शुरुआत से ही मुसलमान कैसी कैसी अतिरचनाएं पेश करते रहते हैं।

दरअसल इस लेखक ने यह भी दावा किया है कि इस्लाम की राह में शहीद होने वाला पहला शख्स बिलाल था जबकि बिलाल उस कथित धार्मिक चोरों के बाद भी लंबे समय तक जिंदा रहा और जब मोहम्मद ने मक्के पर अधिकार कर लिया तो वह वहां आया और काबा की मीनार से अज़ान देता था। बिलाल की प्राकृतिक मौत हुई थी।

कुछ इस्लामिक सूत्र दावा करते हैं कि सुमय्या उसका पति यासिर और बेटा अम्मार मक्का में मारा गया। हालांकि मुईर ने बताया है की ये बीमारी के कारण मर गया तो सुमय्या ने एक यूनानी गुलाम से शादी कर ली और उससे एक बेटी सलमा हुई।

फिर यह कैसे मान लिया गया क्या सुमय्या को काफिरों ने मार डाला था इसलिए सुमय्या पर जुल्मों सितम और उसकी शहादत का किस्सा झूठा है कि उसे काफिरों ने मार डाला था।

मोहम्मद गुलामी प्रथा के विरुद्ध नहीं थे जब मोहम्मद के हाथ में सत्ता आई दोनों ने हजारों लोगों को गुलाम बनाया हालांकि मक्का छोड़ने के मोहम्मद के हुक्म से सामाजिक ताना-बाना बिगड़ने लगा और उनके सीने में बगावत पनपने लगी जब मोहम्मद में मक्का छोड़ने का आदेश दिया तो इससे सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न होने की स्थिति में आ गई और विद्रोह पनप ने लगा स्थानीय लोगों को मक्का छोड़ने का आदेश देने और धर्म के नाम पर घर उजड़ने के कारण मोहम्मद अपने ही लोगों के बीच बुरे हो गए थे हालांकि मोहम्मद को मक्का के लोगों ने धर्म के आधार पर कभी परेशान नहीं किया मुसलमान अनेक आधारहीन दावे करते हैं जबकि काबा में 360 मूर्तियां थी और यह मूर्तियां अलग-अलग जनजातियों के संरक्षकओं की थी उस समय अरब में यहूदी ईसाई और अनेक देवी देवताओं को मानने वाले कबीले रहते थे वह सभी स्वतंत्र रूप से अपने अपने धर्म को निभाते थे अरब में दूसरे नंबर भी थे जो अपने धर्म पर उपदेश देते थे इस्लाम के आने के साथ ही अरब में धार्मिक मतभेद और लड़ाइयां पैदा हुई।

मक्का में मोहम्मद या मुसलमानों पर अत्याचार का कोई प्रमाण नहीं मिलता है फिर भी मुसलमान ऐसा दावा करते हैं क्योंकि मोहम्मद ने यह दावा किया था की मक्का के लोगों ने मोहम्मद और उनके अनुयायियों के साथ जुल्म किए इन झूठे दावों को कई इतिहासकारों ने मकड़जाल में उलझाया।

मोहम्मद ने पीड़ित होने का ढोंग किया जबकि वास्तविकता में वह खुद अत्याचारी थे मुसलमान भी यही कर रहे हैं सभी जगह मुसलमान हत्याएं कर रहे हैं लोगों को सता रहे हैं और ज़ुल्म कर रहे पर फिर भी चिल्लाते हैं कि उनके ऊपर जुल्म हो रहा है उन्हें दबाया जा रहा है इन बातों को समझने के लिए मोहम्मद और उनके अनुयायियों का मनोविज्ञान समझना पड़ेगा।

मुसलमान अक्सर मोहम्मद की सहानुभूति में सास के रूप में कुरान के सुरा 108 का हवाला देते हैं जिसमें लिखा है:-

"ए मोहम्मद इनसे कह दो जो तुम मेरे विश्वास को नकारते हो मैं उसकी पूजा नहीं करता हूं जिसे तुम पूछते हो ना तुम उनकी इबादत करोगे जिसकी मैं करता हूं और मैं उसकी बंदगी नहीं करूंगा जिसकी तुम करते आए हो तुमको तुम्हारा धर्म मुबारक और मुझे मेरा"

यशोदा पढ़ते समय अगर पृष्ठभूमि ध्यान में रखी जाए तो यह मालूम होता है कि हमें धार्मिक जबरदस्ती के लिए नहीं कहा गया है जैसा कि आज के कुछ लोग दावा करते हैं बल्कि यह इसलिए लिखा गया ताकि मुसलमानों को गैर- मुसलमानों (काफिर) के मजहब पूजा-पाठ और आराधना उसे दूर किया जा सके यह बताया जा सके कि गैर मुसलमान पापी है और यह फैलाया जा सके कि इस्लाम और काफिरों में ना कोई समानता हो सकती है और ना ही किसी व्यक्ति के इस्लाम और कुफ्र के बीच रास्ता अपनाने की गुंजाइश है हालांकि यह सूरा शुरुआत में इसलिए जोड़ा गया ताकि

इस्लाम के विरोध में आ चुके मक्का के मूल निवासी क़ुरैशयो के साथ समझौता किया जा सके फिर भी यह केवल कुरैश के लिए नहीं था बल्कि इसे कुरान का हिस्सा बनाया गया कहा गया कि अल्लाह ने मुसलमानों को यह शिक्षा दी है कि वह जैसा चाहे और जहां चाहे कुफ्र के धर्म से खुद को शब्दों व कार्यों के जरिए मुक्त करें और बिना किसी हिचक के ऐलान करें कि वे धर्म के मामले में गैर मुसलमानों के साथ कोई समझौता नहीं कर सकते यही कारण है कि यह सुरा अब और प्रचलित किया जाने लगा क्योंकि मुसलमानों की आतंकवादी हरकतों के कारण अब पूरा इस्लाम धर्म शक के दायरे में आ चुका है और इस कुरान के सूरे को जवाब देने का हथियार बनाया गया।

मुसलमानों द्वारा लिखे गए इतिहास में भी मोहम्मद के साथ अत्याचार होने का प्रमाण नहीं मिलता कुरेश कबीले के बड़े बुजुर्ग मोहम्मद से जुड़े हुए थे और मोहम्मद के बुजुर्ग चाचा अबू तालिब के पास शिकायत लेकर भी गए थे और कहा था कि आपका भतीजा हमारे धर्म और हमारे देवी देवताओं के बारे में अपमानजनक बातें बोलता है हम लोगों को मूर्ख बताते हुए बेइज्जत करता है या तो आप उसे समझाइए या फिर हम पर छोड़ दीजिए हम कुछ उपाय करें यह कुरैश के लोगों की चेतावनी थी अत्याचार नहीं।

इसकी तुलना आज के मुसलमानों से करें जब उनके पैगंबर के कुछ कार्टून बन गए थे मुसलमानों ने दंगा किया और यहां तक कि

नाइजीरिया और तुर्की जैसे दूर दराज के स्थानों पर भी मुसलमानों ने उन सैकड़ों लोगों की जान ले ली जिनका उस कार्टून से कोई वास्ता नहीं था जबकि कुरेश कबीले के लोगों ने 20 सालों तक अपने देवी-देवताओं का अपमान सहा।

जल्दी मोहम्मद अपने दोस्त अबू बकर के साथ मक्का छोड़ मदीने चले गए मदीने के लोग मोहम्मद के बारे में भली भांति परिचित नहीं थे जबकि मक्का के लोग मोहम्मद के ढंग से अच्छी तरह से वाकिफ हो चुके थे इसलिए मोहम्मद ने मदीने में रहकर अल्लाह के संदेश देना शुरू किए मदीने में ज्यादा स्वीकारें गए हालांकि मोहम्मद के अलावा अरब में उस समय और भी पैगंबर हुआ करते थे।

यह बात भी असलियत है कि इस्लाम के प्रभाव से पूर्व अरब में महिलाओं के पास ना केवल अधिक अधिकार थे बल्कि वह अधिक सम्मानित भी मानी जाती थी अन्य पैगंबरों ने अपने धर्म का प्रसार के लिए ना तो हिंसा का सहारा लिया और ना ही लूट का परंतु मोहम्मद नाम के पैगंबर हिंसा लूटपाट बलात्कार कत्लेआम पर भरोसा करते थे जबकि अन्य कबीलों के पैगंबर आपस में लड़ाई झगड़ा नहीं करते थे बल्कि एक दूसरे का सहयोग करते थे मोहम्मद द्वारा अरब में इस्लाम का प्रचार और प्रसार शुरू करने के बाद और अपने को पैगंबर घोषित करने के बाद अरबी कबीलों में जंग का माहौल बना।

मदीने का अधिकांश भाग पर यहूदियों का अधिकार था यह शहर यहूदी शहर था "किताब -अल -अगानी" ने लिखा है कि मदीने में यहूदियों की पहली बस्ती मूसा के समय बसी थी हालांकि 10 वीं सदी की पुस्तक फुतूह-अल-बलदन में अल बलादुरी लिखते हैं कि यहूदियों के मुताबिक ईसा पूर्व 587 में यहूदी यहां आकर बसे थे जब बेबीलोन के राजा ने जेरूसलम को नष्ट कर दिया और यहूदियों को दुनिया भर में अलग-अलग बिखरने को मजबूर कर दिया मदीने में यहूदी व्यापार सुनार लोहार शिल्पाकार और किसान रहते थे जबकि अरबी लोग मजदूर थे और यहूदी यहां के लिए मजदूरी करते थे अरबी यहूदियों के आने के करीब 1000 साल बाद वर्ष 450 या 451 ईसवी मैं उस समय आए जब यमन में आई भयानक बाढ़ के कारण सबा क्षेत्र कि कई अरब जनजातियां अरब के दूसरे भागों में चली गई अरबी मदीना में पांचवी सदी में अधिकांश शरारती के रूप में आए इस्लाम कुबूल करने के बाद अरबों ने अपने अन्नदाताओं की ही सामूहिक हत्या कर दी और उन्हें समाप्त कर दिया और उनके नगर पर कब्जा कर लिया अरबों ने जब यसरब जिसे बाद में मदीना कहा गया मैं पांव जमा लिया तो उन्होंने यहूदियों पर हमला करना और उनके साथ दूध बात करना शुरू कर दिया अरबों के अत्याचार पर एक पीड़ित की तरह यहूदी बस यही कहते रहे जब हमारा मसीहा आएगा हम इन जुल्मों का हिसाब लेंगे जब इन मदीना वासियों अरबों ने सुना कि मोहम्मद अल्लाह के पैगंबर होने का दावा कर रहा है और स्वयं को उसी पैगंबरों के रूप में पेश कर रहा है जिसके बारे में मूसा कह गए थे तो उन्होंने सोचा

कि मोहम्मद और इस्लाम को स्वीकार करके वह यहूदियों से बहुत आगे हो जाएंगे।

यही गलतफहमी और गलती थी कि यहूदी धर्म और मसीहा के आने का इनका विश्वास इस्लाम की ताकत और अरब में यहूदियों के नरसंहार का कारण बना।

मोहम्मद के इस दावे का कोई प्रमाण नहीं है कि मक्का वासियों ने मुसलमानों पर जुल्म किए थे मक्का वासियों ने नहीं बल्कि मोहम्मद ने ही मुसलमानों को अपना घर छोड़ने का आदेश दिया था और लालच देते हुए अल्लाह की तरफ से यह वादा किया था:-

"जिन्होंने मोहम्मद का आदेश मानकर अल्लाह की राह में अपने घरों को छोड़ा हिजरत की उन्हें हम बिलाशक दुनिया में अच्छी जगह मिटायेंगे और सच यह है कि यदि तुम लोग आइंदा अल्लाह की राह में सब्र करोगे परवरदिगार पर भरोसा रखो गे तो इनाम उससे भी बेहतरीन होगा (क़ुरान 16:41)

इन परदेसी आर्बियों के पास आय का कोई साधन नहीं था मोहम्मद उन सब को सुंदर घर और पुरस्कार देने का वादा पूरा कैसे करते जो उनके कहने पर अपने घर बार छोड़कर मदीने की ओर निकले थे यह बेघर गरीब हो चुके थे और मदीना के स्थानीय लोगों की भी पर जिंदा थे मोहम्मद की विश्वसनीयता दांव पर लग गई थी मोहम्मद के प्रति उनके अनुयायियों में असंतोष का बुलबुला फूटने लगा था कुछ तो मोहम्मद का खेमा छोड़कर जाने लगे तब

मोहम्मद ने जो आयत दी उसमें साफ-साफ धमकी दी गई थी यह है कि:-

"वो (इस्लाम को न मानने वाले) चाहते हैं कि तुम भी उन्हीं की तरह काफिर बन जाओ ताकि तुम में और उनमें कोई भेजना रहे इसलिए उनमें से किसी को दोस्त ना बनाओ जब तक कि वह अल्लाह की राह में अपने घरों को त्याग ने को तैयार ना हो जाए यदि वह ईमान लाने से इंकार करें तो उन्हें जहां पाओ उठा लाओ और मार डालो और उनमें से ना तो किसी से दोस्ती करो और ना ही किसी को अपना मददगार बनाओ"(क़ुरान 4:89)

गैर मुसलमानों से दोस्ती पर पाबंदी और काफिरों को दी गई धमकी वाली इस आयत को देखते हुए उस दावे पर कैसे विश्वास कर ले कि मक्का वासियों ने मोहम्मद व उनके अनुयायियों को उनके घरों से भगाया था इस आयत में मोहम्मद अपने अनुयायियों को इस्लाम छोड़ने या मक्का वापस जाने वालों की हत्या करने को कह रहे हैं और तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिए और मेरा मेरे लिए, पर कैसे विश्वास किया जा सकता है।

जो उसे छोड़ेगा उसे अल्लाह सजा देगा जैसी धमकियां देने के बावजूद मोहम्मद को अपने अनुयायियों के जीवन यापन का कोई रास्ता ढूंढा था इस समस्या से निपटने के लिए उन्होंने अपने अनुयायियों को मक्का के मुसाफिरों को लूटने के लिए कहा उन्होंने अपने अनुयायियों को भड़काया की मक्का वासियों ने उन्हें घर से भगाया है इसलिए उनको लूटना जायज है।

अल्लाह ने हीं माल वालों को काफिरों से लड़ने यानी की जिहाद करने की इजाजत दी है क्योंकि उन पर धर्म युद्ध फ़र्ज़ किया गया है ये सताये गए थे और निश्चित ही अल्लाह उन लोगों की मदद करेगा उन्हें बिना किसी न्यायसंगत वजह के अपने घरों से भगा दिया गया सिर्फ इसलिए कि उन्होंने कहा अल्लाह हमारा परवरदिगार है (कुरान 22:39-40)

इस बीच मोहम्मद ने मुसलमानों को गैर मुसलमानों से लड़ने के लिए उकसाने वाली कई आयते अल्लाह के संदेश के नाम पर दी:-

अरे रसूल मुसलमानों को जिहाद के वास्ते तैयार करो घबराओ मत अल्लाह तुमसे वादा करता है कि यदि तुम्हारे साथ 20 ऐसे लोग होंगे जिनमें धीरज और जुनून है तो वह 20 दो सौ को मिटा देंगे यदि तुम्हारी तादाद सौ होगी तो तुम एक हजार काफिरों को मिटाने में कामयाब होगे इन मोमिनो को जिहाद के लिए समझाओ क्योंकि इनके पास समझ नहीं है (क़ुरान 8:65)

मोहम्मद ने उस समय के मुसलमानों को इस आयत के जरिए जिहाद के लिए उकसाया था और गैर मुसलमानों से जंग कराई थी गैर मुसलमानों की हत्याएं कराई थी उसी तरह आज भी इस आयत को समझ कर मुसलमान आतंकवादी कट्टरपंथी इसी तरह से गैर मुसलमानों की हत्या करते हैं और बम विस्फोट करते हैं गैर मुसलमानों की गर्दन काट कर अल्लाह हू अकबर के नारे लगाते हैं।

जैसे-जैसे मोहम्मद के नेतृत्व में अरब में इस्लाम की ताकत बढ़ने लगी क्योंकि मोहम्मद मानसिक तौर पर बीमार व्यक्ति थे अहंकारी थे इस कारण उनका अहंकार और बढ़ता चला गया और वह अल्लाह के नाम पर गैर मुसलमानों से नफरत करने उनसे लड़ने इस्लाम कुबूल ना करने पर उनकी हत्या कर देने जैसी अनेक आयतो को अल्लाह का संदेश बता कर अरब के लोगों में धर्म के नाम पर आपसी नफरत का जहर घोलने लगे।

कुरान के अंदर लिखी गई अल्लाह के संदेश के नाम पर मोहम्मद द्वारा क्रूरता से भरपूर आयतो का वितरण किया जिनमें से कुछ मुख्य रूप से निम्नलिखित है;-

1- "फिर, जब हराम के महीने बीत जाऐं, तो 'मुश्रिको' को जहाँ-कहीं पाओ कत्ल करो, और पकड़ो और उन्हें घेरो और हर घातकी जगह उनकी ताक में बैठो। फिर यदि वे 'तौबा' कर लें 'नमाज' कायम करें और, जकात दें तो उनका मार्ग छोड़ दो। निःसंदेह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।" (पा0 10 , सूरा. 9, आयत 5 ,2 ख पृ. 368)

2- "हे 'ईमान' लाने वालो! 'मुश्रिक' (मूर्तिपूजक) नापाक हैं।" (10.9.28 पृ. 371)

3- "निःसंदेह 'काफिर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।" (5.4.101.पृ. 231)

4- "हे 'ईमान' लाने वालों! (मुसलमानों) उन 'काफिरों' से लड़ो जो तुम्हारे आस पास हैं, और चाहिए कि वे तुममें सखती पायें।" (11.1.123 पृ. 391)

5- "जिन लोगों ने हमारी "आयतों" का इन्कार किया, उन्हें हम जल्द अग्नि में झोंक देंगे। जब उनकी खालें पक जाएंगी तो हम उन्हें दूसरी खालों से बदल देंगे ताकि वे यातना का रसास्वादन कर लें। निःसन्देह अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वदर्शी हैं" (5.4.56 पृ. 231)

5- "हे 'ईमान' लाने वालों! (मुसलमानों) अपने बापों और भाईयों को अपना मित्र मत बनाओ यदि वे ईमान की अपेक्षा 'कुफ्र' को पसन्द करें। और तुम में से जो कोई उनसे मित्रता का नाता जोड़ेगा, तो ऐसे ही लोग जालिम होंगे" (10.9.23 पृ. 270)

7- "अल्लाह 'काफिर' लोगों को मार्ग नहीं दिखाता" (10.9.37 पृ. 374)

8- "हे 'ईमान' लाने वालो! उन्हें (किताब वालों) और काफिरों को अपना मित्र बनाओ। अल्ला से डरते रहो यदि तुम 'ईमान' वाले हो।" (6.5.57 पृ. 268)

9- "फिटकारे हुए, (मुनाफिक) जहां कही पाए जाऐंगे पकड़े जाएंगे और बुरी तरह कत्ल किए जाएंगे।" (22.33.61पृ.759)

10- "(कहा जाऐगा): निश्चय ही तुम और वह जिसे तुम अल्लाह के सिवा पूजते थे 'जहन्नम' का ईधन हो। तुम अवश्य उसके घाट उतरोगे।"

11- 'और उस से बढ़कर जालिम कौन होगा जिसे उसके 'रब' की आयतों के द्वारा चेताया जाये और फिर वह उनसे मुँह फेर ले। निश्चय ही हमें ऐसे अपराधियों से बदला लेना है।" (21.32.22 पृ. 736)

12- 'अल्लाह ने तुमसे बहुत सी 'गनीमतों' का वादा किया है जो तुम्हारे हाथ आयेंगी," (26.48.20 पृ. 943)

13- "तो जो कुछ गनीमत (का माल) तुमने हासिल किया है उसे हलाल व पाक समझ कर खाओ" (10.8.69.पृ.359)

14- "हे नबी! 'काफिरों' और 'मुनाफिकों' के साथ जिहाद करो, और उन पर सखती करो और उनका ठिकाना 'जहन्नम' है, और बुरी जगह है जहाँ पहुँचे" (28.66.9.पृ.1055)

15- 'तो अवश्य हम 'कुफ्र' करने वालों को यातना का मजा चखायेंगे, और अवश्य ही हम उन्हें सबसे बुरा बदला देंगे उस कर्म का जो वे करते थे।" (24.41.27 पृ. 865)

16- "यह बदला है अल्लाह के शत्रुओं का ('जहन्नम' की) आग। इसी में उनका सदा का घर है, इसके बदले में कि हमारी 'आयतों' का इन्कार करते थे।" (24.41.28 पृ.865)

17- "निःसंदेह अल्लाह ने 'ईमानवालों' (मुसलमानों) से उनके प्राणों और उनके मालों को इसके बदले में खरीद लिया है कि उनके लिए 'जन्नत' हैः वे अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं तो मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं।" (11.9.111पृ. 388)

18- "अल्लाह ने इन 'मुनाफिक' (कपटाचारी) पुरुषों और मुनाफिक स्त्रियों और काफिरों से 'जहन्नम' की आग का वादा किया है जिसमें वे सदा रहेंगे। यही उन्हें बस है। अल्लाह ने उन्हें लानत की और उनके लिए स्थायी यातना है।" (10.9.68 पृ. 379)

19- "हे नबी! 'ईमान वालों' (मुसलमानों) को लड़ाई पर उभारो। यदि तुम में बीस जमे रहने वाले होंगे तो वे दो सौ पर प्रभुत्व प्राप्त करेंगे, और यदि तुम में सौ हो तो एक हजार काफिरों पर भारी रहेंगे, क्योंकि वे ऐसे लोग हैं जो समझबूझ नहीं रखते।" (10.8.65 पृ. 358)

20- "हे 'ईमान' लाने वालों! तुम यहूदियों और ईसाईयों को मित्र न बनाओ। ये आपस में एक दूसरे के मित्र हैं। और जो कोई तुम में से उनको मित्र बनायेगा, वह उन्हीं में से होगा। निःसन्देह अल्लाह जुल्म करने वालों को मार्ग नहीं दिखाता।" (6.5.51 पृ. 267)

21- "किताब वाले" जो न अल्लाह पर ईमान लाते हैं न अन्तिम दिन पर, न उसे 'हराम' करते हैं जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने हराम ठहराया है, और न सच्चे दीन को अपना 'दीन' बनाते हैं उनकसे लड़ो यहाँ तक कि वे अप्रतिष्ठित (अपमानित) होकर अपने हाथों से 'जिजया' देने लगे।" (10.9.29. पृ. 372)

22- "फिर हमने उनके बीच कियामत के दिन तक के लिये वैमनस्य और द्वेष की आग भड़का दी, और अल्लाह जल्द उन्हें बता देगा जो कुछ वे करते रहे हैं। (6.5.14पृ.260)

23- "वे चाहते हैं कि जिस तरह से वे काफिर हुए हैं उसी तरह से तुम भी 'काफिर' हो जाओ, फिर तुम एक जैसे हो जाओः तो उनमें से किसी को अपना साथी न बनाना जब तक वे अल्लाह की राह में हिजरत न करें, और यदि वे इससे फिर जावें तो उन्हें जहाँ कहीं पाओं पकड़ों और उनका वध (कत्ल) करो। और उनमें से किसी को साथी और सहायक मत बनाना।" (5.4.89 पृ. 237)

24- "उन (काफिरों) से लड़ों! अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें यातना देगा, और उन्हें रुसवा करेगा और उनके मुकाबले में तुम्हारी सहायता करेगा, और 'ईमान' वालों लोगों के दिल ठंडे करेगा" (10.9.14. पृ. 369)

उपरोक्त आयतों में स्पष्ट है कि गैर मुसलमानों के लिए ईर्ष्या, घृणा, कपट, लड़ाई-झगड़ा, लूटमार और हत्या करने के आदेश कुरान के माध्यम से मोहम्मद द्वारा अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग हालात में दिए गए हैं। इन्हीं कारणों से देश व विश्व में मुस्लिमों व गैर-मुस्लिमों के बीच दंगे हुआ करते हैं।

इन आयतों के बचाव में आज भी मुसलमान यह कहता हुआ मिलता है की यह आए थे उस वक्त अल्लाह की तरफ से उतरी थी जब उस वक्त के हालात मुसलमानों के खिलाफ थे मुसलमानों के साथ जुल्म और आरती हो रही थी धर्म युद्ध हो रहे थे अगर इस बात को सच भी मान लिया जाए तो इससे साफ प्रतीत होता है की मोहम्मद उस जमाने में जिस वक्त इस्लाम का प्रचार कर रहे थे कितने जालिम थे और यह जब किसी निर्धारित वक्त के लिए

अल्लाह की तरफ से आए हुए संदेश है तो पूरी दुनिया के मुसलमानों के लिए कुरान जैसी किताब बनाकर उसे अल्लाह की किताब कहकर उसमें किस साजिश के तहत लिखी गई है यही वजह है जहां भी मुसलमान बहुमत में होता है तो वह कट्टर हो जाता है और कुरान के अंदर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए गैर मुसलमानों के साथ में मतभेद करते हुए जुल्म की तमाम हदों को पार कर देता है।

क्योंकि मोहम्मद मानसिक तौर पर बीमार थे और अपने को अल्लाह का पैगंबर कहलाते थे इसलिए मौके मौके पर हालात को समझते हुए कभी नरम कभी गर्म अल्लाह के संदेश फर्जी गढ़ के अपने अनुयायियों को आदेश के रूप में देते थे।

अब जब कुरान की कई आयतो का अधिकार बता चुका है तो अच्छा है अब अपने पाठकों को कुरान के बारे में भी बता दिया जाए और यह समझाने की कोशिश की जाए कि मुसलमान कुरान को कैसे समझते हैं और कुरान दुनिया में किस तरह से आया।

कुरान इस्लाम की पाक किताब है मुसलमान मानते हैं कि इसे अल्लाह ने फ़रिश्ते जिब्रईल द्वारा मुहम्मद को सुनाया था। मानते हैं कि कुरान ही अल्लाह की भेजी अन्तिम और सर्वोच्च किताब है हालाँकि आरम्भ में इसका प्रसार मौखिक रूप से हुआ पर पैगम्बर मुहम्मद के विसाल (स्वर्गवास) के बाद सन् 633 में इसे पहली बार लिखा गया था और सन् 653 में इसे मानकीकृत कर इसकी प्रतियाँ इस्लामी साम्राज्य में वितरित की गईं थी। मुसलमानों का मानना है

कि अल्लाह द्वारा भेजे गए संदेशों के सबसे अन्तिम संदेश कुरआन में लिखे गए हैं। इन संदेशों की शुरुआत आदम से हुई थी। हज़रत आदम इस्लामी (और यहूदी तथा ईसाई) मान्यताओं में सबसे पहले नबी (पैगम्बर या पयम्बर) थे।

कुरान अल्लाह/ईश्वर का कलाम (सन्देश) है, जो आखिरी सन्देष्टा मोहम्मद पर अवतरित हुआ। सम्पूर्ण कुरान वही के माध्यम से पूरे 23 साल में नाज़िल (अवतरित) हुआ। कुरान सूरह अल-फातिहा से शुरू हो कर सूरह अन-निसा पर समाप्त होता है। सम्पूर्ण कुरान 30 पारो (खंडों) में विभाजित किया गया है तथा इसमें 114 सूरतें (अध्याय) हैं। कुरान की कुल 114 सूरतो में 558 रुकू है तथा सम्पूर्ण कुरान में 6236 आयत है तथा क़ुरआन में कलिमात यानी (वाक्यों) की संख्या 77439 है तथा क़ुरआन में हुरूफ़ यानी शब्दों की संख्या 340740 है सम्पूर्ण कुरान में कुल 14 सन्देश है।

इस्लामी परंपरा से संबंधित है कि मुहम्मद ने पहाड़ों पर हिरा की गुफा में अपनी इबादत के दौरान अपना पहला प्रकाशन प्राप्त किया था। इसके बाद, उन्हें 23 वर्षों की अवधि में पूरा कुरान का खुलासा प्राप्त हुआ, हदीस और मुस्लिम इतिहास के मुताबिक, मुहम्मद मदीना में आकर एक स्वतंत्र मुस्लिम समुदाय का गठन करने के बाद, उन्होंने अपने कई साथी कुरान को पढ़ने और कानूनों को सीखने और सिखाने का आदेश दिया, जिन्हें दैनिक बताया गया था। यह संबंधित है कि कुछ कुरैश जिन्हें बद्र की लड़ाई में कैदियों के रूप में ले जाया गया था, उन्होंने कुछ मुसलमानों को उस समय

के सरल लेखन को सिखाए जाने के बाद अपनी आजादी हासिल कर ली। इस प्रकार मुसलमानों का एक समूह धीरे-धीरे साक्षर बन गया। जैसा कि शुरू में कहा गया था, कुरान को तख्तों, खालों, हड्डियों, और पेड़ के चौड़े तने की लकड़ियों पर दर्ज किया गया था। मुसलमानों के बीच ज्यादातर सूरे उपयोग में थे क्योंकि सुन्नी और शिया दोनों स्रोतों द्वारा कई हदीसों और इतिहास में उनका उल्लेख किया गया है, मुहम्मद के इस्लाम के आह्वान के रूप में कुरान के उपयोग से संबंधित, प्रार्थना करने और पढ़ने के तरीके के रूप में। हालांकि, कुरान 632 में मुहम्मद की मृत्यु के समय पुस्तक रूप में मौजूद नहीं था। विद्वानों के बीच एक समझौता है कि मुहम्मद ने खुद को रहस्योद्घाटन नहीं लिखा था।

कुरान की आलोचना

कुरान को इस्लाम का आधारभूत धर्मग्रन्थ माना जाता है तथा इस्लाम के अनुयायी मानते हैं कि अल्लाह ने जिब्राइल के माध्यम से इसे मुहम्मद को सुनवाया। विविध लोग कुरान की आलोचना विविध कोणों से करते हैं। एक तरफ कुरान का सेक्युलर रूप में अध्ययन करने वाले इसकी ऐतिहासिक, साहित्यिक, समाजवैज्ञानिक और धर्मशास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन करके आलोचना करते हैं तो दूसरी तरफ आलोचना करने वालों में ईसाई मिशनरियाँ और अन्य लोग हैं जो मुसलमानों का धर्मपरिवर्तन करना चाहते है और कहते हैं कि कुरान दैवी ग्रन्थ नहीं है, यह त्रुटिरहित नहीं है तथा यह नैतिक रूप से उच्च विचार नहीं देती।

कुरान की ऐतिहासिक आलोचना करने वाले विद्वान, जैसे जॉन वान्सब्रो (John Wansbrough), जोसेफ स्काट (Joseph Schacht), पत्रिक क्रोन (Patricia Crone), माइकेअल कुक (Michael Cook) इसकी उत्पत्ति, इसके पाठ (टेक्स्ट), रचना, इसके इतिहास, दुरूह टेक्स्ट आदि की वैसी ही जाँच-पड़ताल करना चाहते हैं जैसे किसी अन्य गैर-धार्मिक ग्रन्थ के बारे में किया जाता है। विरोधी जैसे इब्न ने कुरान की आन्तरिक विरोधाभासी बातों, वैज्ञानिक (तथ्यात्मक) गलतियों, इसकी स्पष्टता की त्रुटियों, विश्वसनीयता, तथा नीति-सम्बन्धी सन्देशों को ढूंढ़ने की कोशिश की है। की सबसे आम आलोचना पहले से मौजूद उन स्रोतों को

लेकर है जिन पर कुरान आधारित है, कुरान के आन्तरिक विरोधाभास, इसकी (अ) स्पष्टता और नीति-सम्बन्धी शिक्षाओं को लेकर होती है।

भारतीय विचारकों में जिन लोगों ने कुरान की आलोचना की है उसमें आर्य समाज के प्रवर्तक तथा सत्यार्थ प्रकाश के रचयिता स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम सर्वोपरि है। सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास (अध्याय) में उन्होने बड़े ही तर्कपूर्ण ढंग से कुरान की आयतों का विश् के नाम से मुहम्मद ने अपना मतलब सिद्ध करने के लिए यह क़ुरआन किसी कपटी, छली और महामूर्ख से बनवाया होगा। इसी समुल्लास में एक जगह वे लिखते हैं-

इस मजहब में अल्लाह और रसूल के वास्ते संसार को लुटवाना और लूट के माल में खुदा को हिस्सेदार बनाना शबाब का काम है। जो मुसलमान नहीं बनते उन लोगों को मारना और बदले में बहिश्त को पाना आदि पक्षपात की बातें ईश्वर की नहीं हो सकतीं। श्रेष्ठ गैर-मुसलमानों से शत्रुता और दुष्ट मुसलमानों से मित्रता, जन्नत में अनेक औरतों और लौंडे होना आदि निन्दित उपदेश कुएँ में डालने योग्य हैं। इस्लाम से अधिक अशांति फैलाने वाला दुष्ट मत दूसरा और कोई नहीं। इस्लाम मत की मुख्य पुस्तक कुरान पर हमारा यह लेख हठ, दुराग्रह, ईर्ष्या, विवाद और विरोध घटाने के लिए लिखा गया, न कि इसको बढ़ाने के लिए। सब सज्जनों के सामने इसे रखने का उद्देश्य अच्छाई को ग्रहण करना और बुराई को त्यागना है।

इतना ही नहीं, दयानन्द को कुरआन की पहली आयत पर ही आपत्ति है। वे कहते हैं कि "कुरआन का प्रारम्भ ही मिथ्या से हुआ है"। दयानन्द को इस कलमे (वाक्य) पर दो आपत्तियां है I प्रथम यह कुरआन के प्रारम्भ में यह कलमा परमात्मा की ओर से प्रेषित (इल्हाम) नहीं हुआ है (जैसा कि मोहम्मद ने दावा किया है)I दूसरा यह की मुसलमान लोग कुछ ऐसे कार्यों में भी इसका पाठ करते है जो इस पवित्र वाक्य के गौरव के अधिकार क्षेत्र नहींI

क़ुरान एक मजहबी किताब है! मुसलमान क़ुरान की हिदायतो को मानते है! इसके कुछ तथ्य आज बिलकुल प्रामाणित नही लगते जैसे "ब्याज हराम है"

1. क़ुरान मुस्लिम को बैंकिंग की सुविधा से वंचित कर देते हें क़ुरान के कुछ नियमो के वजह से मुस्लिम बैंकिंग का इस्तेमाल करने से कतराते हें

2. आज कल फैले आतंकवाद में भी लोग क़ुरान से मतलब निकालते है जैसे जिहाद!

कुछ कट्टरपन्थी क़ुरान की व्याख्या कर मुस्लिम युवको को आतंकवाद की ओर आसानी से धकेल देते हैं।

उपरोक्त कुछ बातें जो जो कुरान के सिलसिले में है उसे हर हम इंसान अगर समझ ना चाहे तो समझ सकता है कि कुरान कोई अल्लाह की किताब नहीं है एक मानसिक तौर पर बीमार व्यक्ति के विचारों की उपज है जिसने अरब में अपना वर्चस्व कायम करने के

लिए अल्लाह नामक शक्ति को जन्म दिया और अल्लाह के नाम अपने और अपने अनुयायियों के हित में मनगढ़त संदेश का प्रचार किया।

कुरान बहुत सी आयतें मुसलमानों को इस दुनिया में और मरने के बाद दूसरी दुनिया में पुरस्कार का लालच देकर निर्दोषों पर हमला करके और उन्हें लूटने को उसकती है उदाहरण के लिए कुरान की आयत 48:20 को समझे "अल्लाह ने तुम्हें बहुत सी गनीमतो का वायदा फरमाया है अल्लाह ने यह माल (लूट का) तुम्हारे लिए भेजा है तुम इस पर काबिज हो गए तो जितना चाहो लो"

मोहम्मद ने गलत कार्य करने वाले अपने अनुयायियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अपने अल्लाह की तरफ से यह संदेश दिया युद्ध में जो भी तुम्हारे कब्जे में आए उस पर मौज करो वह सब जायज और अच्छा है।

मुसलमान सदियों से आज तक इस आयत का अध्ययन कर पूरी दुनिया में लूटपाट डकैती जैसी घटनाएं करता रहा है।

तैमूर लंग (1336-1405 ईसवी) एक क्रूर इंसान था और डकैती व मारकाट की बदौलत सुल्तान बना तैमूर ने अपनी आत्मकथा "भारत के खिलाफ कुछ का इतिहास" में लिखा है:-

इतनी कड़ी मेहनत और परेशानी से गुजरते हुए हिंदुस्तान आने के मेरे दो मुख्य उद्देश्य है पहला मकसद इस्लाम के दुश्मन काफिरों से जंग करना है। और इस मजहबी लड़ाई के जरिए आगे की जिंदगी

के लिए अल्लाह से अपने लिए इनाम हासिल करना। मेरा दूसरा मकसद है वह यह कि इस्लाम की सेना इस जंग में काफिरों के धन दौलत को लूट कर मालदार हो सकेगी जो मुसलमान मजहब के लिए जंग लड़ते हैं उनके लिए जंग में लूटपाट उतना ही पाक है जितना कि मां का दूध, लुटे हुए माल का उपयोग करना उनके लिए पूरी तरह जायज है, और अल्लाह की यह इनायत है।

मोहम्मद से पहले अरब के लोग धार्मिक जन्म के आदी नहीं थे, आज भी ऐसे बहुत से मुसलमान है जो अल्लाह को मानते हैं। लेकिन धर्म के नाम पर दूसरों की हत्या करना या जंग करना ठीक नहीं मानते। ऐसे उदार अनुयायियों के दिमाग में कट्टरता भरने के लिए मोहम्मद ने अपने अल्लाह की तरफ से यह फर्जी संदेश दिया की "मुसलमानों तुम पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया यह तुम्हारी भलाई के लिए है" यह कोई अजूबा नहीं कि तुम किसी चीज को नापसंद करो हालांकि वह तुम्हारे हक़ में बेहतर हो और तुम किसी चीज को पसंद करो हालांकि वह तुम्हारे हक़ में बुरी हो और अल्लाह तो जानता ही है अगर तुम नहीं जानते हो। (क़ुरान 2:216)

और जल्दी ही मोहम्मद की साजिश कामयाब हो गई और मदीने के मुसलमान लूटपाट के लिए लड़ने लगे और लूटपाट से मालामाल होने की लालच से मोहम्मद की फौज लगातार बढ़ने लगी और मोहम्मद ने अपने अनुयायियों को सिर्फ अल्लाह की राह में जंग लड़ने के लिए तैयार किया जंग में लूटा हुआ माल औरतें नाबालिक लड़कियां सब माले गनीमत यानी कि अल्लाह

की तरफ से तोहफा मानकर मोहम्मद की फौजी आपस में बांट लेती थी और जंग में जीती गई हसीन लड़कियां मोहम्मद और उनके साथी अबू बकर उमर और उस्मान की अय्याशी का सामान बनाई जाती थी क्योंकि यह भी अल्लाह की तरफ से तोहफे में आई मानी जाती थी।

अब आप खुद सोचिए कि मोहम्मद इतने शातिर थे कि उन्होंने लूटपाट, ख़ौफ़, महिलाओं के साथ यौन शोषण और हत्याओं को भलाई से कैसे अल्लाह के नाम पर जोड़ दिया।

मोहम्मद ने अपने अनुयायियों को यह विश्वास दिलाया कि इस्लाम के लिए जंग में धन दौलत से सहायता करना सर्वश्रेष्ठ अच्छा कार्य है अल्लाह इससे खुश होता है इसीलिए आज भी आतंकवादी संगठन है पूरी दुनिया में इस्लाम के मानने वाले मुसलमानों को इस्लाम की राह में जंग लड़ने के लिए यानी कि किसी भी तरह का जिहाद जिससे गैर मुसलमानों को नुकसान हो या गैर-मुसलमान मुसलमान हो जाए इसके लिए दान के नाम पर पूरे विश्व में इधर से उधर इस्लामिक धन घूमता रहता है।

मोहम्मद ने बहुत चालाकी से अपनी जान के लिए मुसलमानों द्वारा खर्च किए जा रहे हैं धन को अल्लाह को दिए गए उधार के रूप में पेश किया और वादा किया इसका फल यानी ब्याज सहित उन्हें प्राप्त होगा।

"तुम में से कौन कौन ऐसा है जो अल्लाह को कर्ज देने की इच्छा रखता है जान लो अल्लाह इस उधार के बदले कई गुना देगा और वह भी जन्नत के सिले के साथ" (क़ुरान:57:11)

धन दौलत और मजबूती के साथ गैर मुसलमानों के साथ जंग करने के लिए मोहम्मद ने अपने अनुयायियों को उकसाया॥

"जब जंग में तुम्हारे सामने का फिर आए तो उनकी गर्दन और जब उन पर काबू पा लो तो तब तक जंग खत्म ना हो जाए उन्हें बंदी बनाए रखो और उनके साथ चाहो तो अहसान दिखाते हुए आजाद कर दो या फिर छोड़ने के बदले फिरौती लो याद रखो कि अल्लाह चाहता तो काफिरों से और तरह से बदला लेता और उनसे वसूलता पर उसने चाहा कि तुम्हारी आजमाइश इस तरह की जाए अल्लाह अपनी राह में शहीद हुए लोगों के कार्यों को जाया नहीं होने देगा" (क़ुरान47:4)

दूसरे शब्दों में अल्लाह मुसलमानों की मदद के बिना भी काफिरों को एकत्र करने में सक्षम है लेकिन वह आस्था पर रखने के लिए यह काम मुसलमानों से करवाना चाहता है इस प्रकार अल्लाह उस माफिया या हत्यारे गिरोह के गॉडफादर की तरह है जो अपने आदमियों को अपनी निष्ठा साबित करने के लिए हत्या करने को कहता है इस्लाम में वफादारी खून का प्यासा होने और कत्ल करने के लिए तैयार रहने से ही जानी जाती है तभी तो उसने कहा:-

"और मुसलमानों गैर मुसलमानों के खिलाफ हथियार उठा लो जिहाद के लिए जंग के मैदान में दौड़ने के लिए घोड़े तैयार करो

इससे अल्लाह के दुश्मनों और तुम्हारे अपने दुश्मनों (काफिर) में तुम्हारा खौफ पैदा होगा और साथ ही दूसरों पर भी तुम्हारी धाक बनेगी तुम भले यह न समझ पाए लेकिन अल्लाह उसे जानता है अल्लाह की राह में तुम जो भी सर्च करोगे तुम्हें वह पूरा वापस मिलेगा और तुम्हारे साथ कोई भी नाइंसाफी नहीं होगी" (क़ुरान 8:60)

मोहम्मद ने उसकी तरफ से गैर मुसलमानों के खिलाफ लड़ने वालों और अल्लाह का रसूल स्वीकार करने वालों को मौत के बाद भारी-भरकम इनाम मिलने का खोखला वादा किया इनाम का वादा मोहम्मद द्वारा अल्लाह की तरफ से बहुत उदार और खुले दिल का था उसने वादा किया कि यह इनाम दुनिया की बेहतरीन चीजों सुख सुविधा के रूप में होगा मोहम्मद ने दावा किया कि जन्नत में कभी ना खत्म होने वाला यौन सुख मिलेगा मोहम्मद ने चेतावनी भी दी कि उसके जंगी अभियानों में धन दौलत से मदद करने में कंजूसी बरतने वालों को कयामत के दिन कठोर सजा मिलेगी।

"ऐ ईमान वालों मैं तुम्हें वह फायदेमंद तरीका फरमाऊँ जिससे तुम अल्लाह के दरबार में सजा पाने से बचोगे अल्लाह में यकीन करो और उसके पैगंबर में भी अपने जान और माल से अल्लाह के मकसद में जंग करो, जिहाद करो अगर तुम समझ जाओ तो तुम्हारे लिए अच्छा होगा वह तुम्हें तुम्हारे गुनाहों के लिए माफ कर देगा और तुम्हारे लिए खूबसूरत जन्नत के दरवाजे खोल देगा उन बागो

में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती है वहां तुम्हारे पाक़ीज़ा मकान होंगे यह तुम्हारी बड़ी कामयाबी होगी" (कुरान 1.61:10-11)

"सुंदर बाग़, बगीचे होंगे जिसमें अंगूर लगे होंगे तुम्हारे साथ ऐसी हसीन औरतें होंगी जिनकी जवानी चढ़ रही होगी और शराब के लबरेज सागर होंगे" (क़ुरान 78:32-33)

इन तमाम आयतों को पढ़ने के बाद मुसलमान बच्चे गैर मुसलमानों के लिए नासूर बन जाते हैं उन्हें का फिर मानते हुए उनके खिलाफ हो जाते हैं और अल्लाह के यह संदेश जो मोहम्मद द्वारा अपने अनुयायियों को बताए गए हैं उसके लिए वह जिहाद पर आमादा हो जाते हैं हर आम इंसान के लिए इस तरह के क्रूर कृत्य करना आतंकवाद है जबकि मुसलमानों के लिए यह एक फर्ज है यानी पवित्र जंग है अल्लाह की राह में पसंदीदा काम है इसलिए अल्लाह की राह में गैर मुसलमानों से जंग करना उन्हें मारना उनको यातनाएं देना उनके साथ लूटपाट करना मुसलमानों के लिए अध्यादेश है जिसे सारे मुसलमानों को मारना अनिवार्य है मोहम्मद ने अपने लोगों को गैर मुसलमानों के खिलाफ भड़काया उकसाया उन लोगों से बदला लेने के लिए आमादा किया जिनसे मोहम्मद लूटपाट करना चाहता थे।

"मुसलमानों काफिरों से लड़ जाओ यहां तक कि कोई फसाद बाकी ना रहे ताकि सारी दुनिया अल्लाह के दीन के रंग में रंग जाए" (क़ुरान 8:39)

जब मुसलमानों के एक गुट ने जंग में भाग लेने की इच्छा जाहिर नहीं की तो मोहम्मद ने उन्हें चेतावनी दी और अल्लाह का आदेश पढ़कर सुनाया:- " कुछ मोम मोमिन कहते हैं जिहाद के बारे में कोई सूरा नाज़िल क्यों नहीं होता लेकिन जब इस बारे में एक स्पष्ट सूरा नाज़िल हुई और उसमें जिहाद की बात कही गई तो कुछ लोग जिनके दिल में मरज़ है तुम्हारी और ऐसी शक्ल बना देते हैं जैसे मौत के डर से उनमें मुर्दनी की बेहोशी छाई हो ऐसे लोगों को अपना दुश्मन समझो और उनसे भी जंग करो"(क़ुरान 47:20)

यह आयते सिर्फ एक बात बताती हैं कि इस्लाम मैं जब तक रहोगे जब तक इस्लाम में यकीन रखोगे और कुरान को अल्लाह के शब्द मानते रहोगे और इस्लामिक आतंकवाद इसी तरह नंगा नाच करता रहेगा इस्लाम के भीतर के जो लोग सुधार और संवाद स्थापित करने के लिए आवाज उठाते हैं उनकी आवाजों को गैर मुसलमानों के विरुद्ध जंग छेड़ने का हुक्म देने वाली तमाम आयतो वाले कुरान के जानकार आसानी से दबा देते हैं।

"अल्लाह की राह में जंग (ज़िहाद) करो तुम अपनी ज़ात के सिवा किसी और के लिए जिम्मेदार नहीं हो ईमानवालों, काफिरों को जलाने के लिए तैयार रहो अल्लाह काफिरों की ताकत को रोक देगा और अल्लाह की ताकत सबसे अधिक है अल्लाह की सज़ा भी बड़ी सख्त होती है (क़ुरान 4:84)

मुस्लिम मुल्ला विद्वान हर जगह इसी तरह हिंसा को उसकते है इसी वजह से इस्लाम से कट्टरता समाप्त होने का नाम नहीं ले रही है।

मदीना कूच करने के बाद 10 साल की जिंदगी में मोहम्मद ने अपने अनुयायियों से खुद को ताकतवर महसूस किया और मोहम्मद ने गैर मुसलमानों पर 74 हमले करवाये इनमें से कुछ हमलो में लोगों में सामूहिक हत्याएं की गई और कुछ हमलो का परिणाम यह निकला कि हजारों की संख्या में गैर मुसलमानों को अपना घर छोड़कर भागना पड़ा इसमें से केवल 27 में ही मोहम्मद खुद शामिल हुए जिन ज़िहाद में मोहम्मद ने खुद भाग लिया उसे गजवा कहा जाता है।

जब मोहम्मद जंग में भाग लिया करते थे तो वह हमेशा अपनी फौज के साथ विशेष सुरक्षित घेरे में ही खड़े रहते थे मोहम्मद ने किसी भी जंग में कभी भी खुद लड़ाई नहीं लड़ी।

मोहम्मद और उनकी इस्लामिक फौजियों ने नगरों में निवासियों को चेतावनी दिए बिना घात लगाकर हमले किए निहत्थे नागरिकों पर चढ़ाई की और जिन को मार सकते थे मार डाला उन समुदाय के धन दौलत पशु हथियार और अन्य समान को लेकर चले गए साथ में उनके बीवी बच्चों को भी उठा ले गए यह हमलावर कभी-कभी महिलाओं व बच्चों को फिरौती लेकर छोड़ देते थे या फिर महिलाओं व बच्चों को गुलाम बना कर रखते थे अथवा बेच देते थे और उनका यौन शोषण करते थे शारीरिक संबंध बनाते थे उनके साथ बलात्कार करते थे जिस में मोहम्मद खुद भी शामिल होते थे।

इब्ने -औन ने बताया है मैंने नाफ़े को लिखकर यह पूछा कि क्या गैर मुसलमानों के खिलाफ जेहाद छेड़ने से पहले उनको इस्लाम

क़ुबूल करने के लिए दावत देना मुनासिब है, उन्होंने जवाब में मुझे लिखा कि ऐसा इस्लाम में शुरुआती दिनों में आवश्यक था, अल्लाह के रसूल ने बनू मुस्तलिक पर उस वक्त हमले किए थे जब वह सब बेपरवाह थे और अपने पशुओं को पानी पिला रहे थे रसूल ने उन लोगों को मार डाला और जो बच गए उन्हें कैदी बना लिया उसी दिन रसूल ने जुबैरिया बिन अल हारिस को बंदी बनाया, नाफ़े ने कहा कि ये रिवायत उनको अब्दुल बिन उमर ने बताई जो खुद उस हमलावर दल में शामिल था।

मुसलमान आतंकवादी जब बच्चों को मार डालते हैं तो दुनिया सदमे में आ जाती है लेकिन तब भी मुसलमानों की हिमायती इस्लाम मैं बच्चों की हत्या हराम जैसे जुमले सुनकर इस्लाम के नाम पर हो रहे अपराधों पर पर्दा डाल देते हैं जबकि हकीकत यह है कि मोहम्मद खुद रात के हमलों में बच्चों को मारने का आदेश देते थे , साब बिन जस्सामा के हवाले से यह बताया जाता है कि अल्लाह के रसूल से जब रात के हमलों में गैर मुसलमानों की औरतों व बच्चों के क़त्ल के बारे में पूछा गया तो मोहम्मद ने कहा वह काफिरों की महिलाएं और बच्चे हैं।

इस्लामिक लूटपाट में इस इस्लामिक गिरोह को केवल धन दौलत ही नहीं मिलती थी बल्कि सेक्स करने के लिए गुलाम औरतें भी मिलती थी।

जुबैरिया एक खूबसूरत युवा महिला थी मोहम्मद के आदमियों ने उसके पति की हत्या कर दी उसके बाद जुबैरिया को सेक्स गुलाम

बना के ले आया गया और उसे मुसलमान बनाने पर मजबूर किया गया और मोहम्मद ने जुबैरिया से शादी की इस्लाम के हिमायती कहते हैं कि मोहम्मद की बीवियों में अधिकतर विधवा औरतें थी इसमें ऐसा भ्रम होने लगता है कि मोहम्मद ने शादी करके उन पर दया किया करते थे लेकिन यह लोग यह बात गोल कर जाते हैं कि यह सारी विधवाओं युवा व खूबसूरत औरतें थी और वह सब विधवा इसलिए हुई थी क्योंकि मोहम्मद ने उनके पतियों की हत्या कर दी थी जब मोहम्मद ने जुबैरिया से शादी की तो उस वक्त जुबैरिया 20 साल की थी जबकि मोहम्मद 58 साल के थे इस्लामिक इतिहास कार्य स्वीकार करते हैं कि मोहम्मद केवल उन्हीं औरतों से शादी करता है थे जो जवान खूबसूरत बिना बच्चे वाली होती थी केवल एक अपवाद है।

जैसे कि हम पहले भी लिख चुके हैं कि मोहम्मद मानसिक रूप से बीमार थे और बचपन में अकेलेपन की वजह से काल्पनिक जीवन जीने में खुशी महसूस करते थे ऐसे मानसिक रोगियों में सेक्स करने की क्षमता दूसरे अन्य मर्दों से ज्यादा होती है इस कारण मोहम्मद ने इस्लाम जंगो में मिली मालिक नीमच के नाम पर खूबसूरत औरतों के साथ भरपूर सेक्स किया और अपनी निजी जिंदगी में उन्होंने 13 शादियां की पहली बीवी जो अरब की सबसे अमीर महिला खदीजा थी जोकि मोहम्मद से उम्र में दोगुनी थी लेकिन उनके पास भरपूर दौलत थी और मोहम्मद को उस वक्त दौलत की बेहद जरूरत थी क्योंकि वह अपने पागलपन को परवान जमाना चाहते थे और अपने को अल्लाह का पैगंबर बता कर इस्लाम धर्म

स्थापित करना चाहते थे जब तक कि खदीजा जिंदा रही तब तक मोहम्मद ने कोई दूसरी शादी नहीं की हां इस्लामिक दंगों में जरूर खूबसूरत औरतों के साथ सेक्स और बलात्कार किए लेकिन जब खदीजा का देहांत हो गया उस वक्त मोहम्मद की उम्र लगभग 50 वर्ष थी 50 वर्ष से 62 वर्ष की आयु तक मोहम्मद ने 12 शादियां की जिसमें से आयशा जोकि मोहब्बत के सबसे करीबी दोस्त अबू बकर की लड़की थी कहा जाता है कि मोहम्मद ने आयशा से 6 साल की उम्र में ही शादी कर ली थी लेकिन जब आयशा 9 साल की हुई तब मोहम्मद ने आयशा से सेक्स किया इस्लामिक इतिहास मैं मोहम्मद की बीवियों का नाम जो लिखी गई है वह निम्नलिखित है:-

खदीजा बिन्त खुवायलद (595–619)

सोदा बिन्त ज़मआ (619–632)

आयशा बिन्त अबू बक्र (619–632)

हफ्सा बिन्त उमर (624–632)

ज़ैनब बिन्त खुज़ैमा (625–627)

हिन्द बिन्त अवि उमय्या (629–632)

ज़ैनब बिन्त जहाश (627–632)

जुबैरिया बिन्त अल-हरिथ (628–632)

राम्लाह बिन्त अवि सुफ्याँ (628–632)

रय्हना बिन्त ज़यड (629–631)

सफिय्या बिन्त हुयाय्य (629–632)

मयुमा बिन्त अल-हरिथ (630–632)

मरिया अल-क़ीब्टिय्या (630–632)

वर्ष 619 ईसवी में खदीजा जोकि मोहम्मद की पहली पत्नी थी उनका देहांत हुआ और मोहम्मद का देहांत 632 में हुआ यानी कि पहली पत्नी खदीजा के देहांत के बाद लगभग 13 साल में मोहम्मद ने 12 शादियां की।

मोहम्मद की बीवियों में सबसे चर्चित और सेक्स के बारे में खुलकर मोहम्मद के बाद बोलने वाली तीसरी बीवी आयशा थी और आयशा को मोहम्मद सबसे ज्यादा प्यार भी करते थे क्योंकि वह उनकी सभी बीवियों में से सबसे कम उम्र बीवी थी उनको आयशा के साथ सेक्स करने में मजा भी बहुत आता था इस बारे में आयशा ने खुद कहां है जो कि इस्लामिक किताबों में मौजूद है आयशा मोहम्मद के सबसे करीबी दोस्त अबू बकर की लड़की तो थी ही लेकिन 9 साल की उम्र में 50 साल के पुरुष के साथ शादी करके यौन संबंध स्थापित कर चुकी थी लेकिन बचपनए का मिजाज होने की वजह से मोहम्मद के साथ में चंचल स्वभाव करती थी और मोहम्मद आयशा को अपनी सभी बीवियों से सबसे ज्यादा चाहते थे मोहम्मद की मृत्यु भी आयशा की गोद में हुई।

ऐसा कुछ इतिहासकार लिखते हैं मरते समय मोहम्मद ने कलमा नहीं पढ़ा था इस बात के प्रमाण हैं की मुहम्मद की मौत सेक्स की अधिकता से हुई थी हदीस-इब्ने हाशाम -पेज 682

इन से रवायत है की "मैंने आयशा से सुना की जिस दिन नबी की मौत हुई थी, उस दिन उनके साथ सोने की मेरी बारी थी, सम्भोग करने के बाद उनकी मौत मेर घर में हुई थी, मरते वक्त उनका सर मेरे सीने पर था।

मैं उनकी मौत के लिए खुद को दोषी मानती हूँ।

आयशा ने कहा की जिस समय अल्लाह ने रसूल को उठाया था, उनका सर मेरी गर्दन के पास था,और वह मुझे चूम रहे थे,उनका थूक मेर थूक से मिल रहा था। उनकी मौत के लिए मैं खुद को जिम्मेदार मानती हूँ, उस समय मेरी किशोरावस्था थी। मैं नादाँ थी मैं तो नबी को और उत्तेजित करना चाहती थी। और कामक्रीड़ा में उनका सहयोग करना चाहती थी। लेकिन अनुभव हीनता के कारण मुझे पता नहीं था की जब कोई बूढा और बीमार व्यक्ती किसी एक जवान औरत के साथ जंगली की तरह संसर्ग करता है, तो क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं। वरना मैं उनको रोक लेती।

मैंने उस वासना के चरम आनंद के क्षण पर उनको रोकना उचित नहीं समझा। मैं देखती रही, वह मेरी छाती पर लुढ़क गए।

आयशा ने कहा कि, मरते समय नबी ने कलमा नही पढा था। क्योंकि उस समय उनकी जीभ मेरे मुंह के अन्दर थी। सही बुखारी - खंड 7/किताब62/हदीस144

जब नबी मरे तो उनका शरीर अकड़ गया था, और फूल गया था। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि इस दशा में क्या करना चाहिए था। दाउद-किताब20 नंबर 3147

अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास कहते हैं कि नबी कि लाश को तीन कपड़ों में लपेटा गया था जो नाजरान के बने थे। इन्हीं कपड़ों में उन्हें दफनाया गया था।

यह लेख आयशा अहमद के अंगरेजी लेख पर आधारित है।

पूरे यहूदी कबीले के मर्दों को मार कर माल असबाब औरतों की लूट के बाद जब मोहम्मद को बताया गया कि “सफिया” नाम की तेज तर्रार जवान औरत कोई और अपने साथ ले जा रहा है जो “आपके” काबिल है तो किसी और को सफिया ले जाने का हुक्म बदल दिया गया और सफिया हरम में शामिल की गई।

इस सफिया ने खाने में ज़हर मिला दिया जिससे मोहम्मद की ऐसी तबीयत बिगड़ी कि जिबरील से लेकर अल्लाह के तमाम फरिश्ते और तमाम जिन्नात, हकीम, झाड़फूंक करने वाले हार गए और सफिया भोली सी होकर कहती रही कि “अगर तुम सच्चे पैगंबर हो तो ज़हर से मरोगे नहीं और झूठे हो तो मेरे घरवालों की हत्या का बदला तुम्हारी मौत से ही चूकता है।”

आयशा के बारे में इतिहासकारों का कहना

मुहम्मद की पत्नी और इस्लाम के पहले ख़लीफ़ा अबु बक्र की बेटी थी।

सुन्नी परंपरा में, आयशा को और जिज्ञा माना जाता है। उन्होंने मोहम्मद के संदेश में योगदान दिया ,मुहम्मद के निजी जीवन से संबंधित मामलों पर, बल्कि विरासत , और eschatology जैसे विषयों पर भी 221 हदीस, के वर्णन के लिए भी जाना जाता है।

उनके पिता, बकर, मुहम्मद की मौत होने के बाद पहला खलीफा बनाये गए, और उमर दो साल बाद उनका उत्तराधिकारी बन गए। तीसरे खलीफ उस्मान के समय, आयशा के खिलाफ विपक्ष में एक प्रमुख भूमिका थी जो उनके खिलाफ बढ़ी, हालांकि वह या तो उनकी हत्या के लिए जिम्मेदार लोगों के साथ सहमत नहीं थीं और न ही हसरत अली की पार्टी के साथ थी हज़रत अली के शासनकाल के दौरान, वह उस्मान की मृत्यु का बदला लेना चाहती थी, जिस कारण उन्होंने हज़रत अली से ऊंट की लड़ाई करने का प्रयास किया था। उन्होंने अपने ऊंट के पीछे भाषण और प्रमुख सैनिकों को देकर युद्ध में भाग लिया। वह लड़ाई हार गई, बाद में, वह बीस साल से अधिक समय तक मदीना में थी, राजनीति में

कोई हिस्सा नहीं लेती थी, हज़रत अली से दुश्मनी रखती थी और फ़र्ज़ी खलीफा बने मुआविया का विरोध नहीं किया।

पारंपरिक हदीस के अधिकांश स्रोतों में कहा गया है कि आयशा की शादी 6 या 7 वर्ष की आयु में मुहम्मद से हुई थी, या दस इब्न हिशम के अनुसार, जब विवाह समाप्त हो गया था मुथान के आधुनिक समय में कई विद्वानों द्वारा इस समय रेखा को चुनौती दी गई है।

शिया का आम तौर पर आयशा का नकारात्मक विचार है। उन्होंने ऊंट की लड़ाई में अपने खलीफा के दौरान हज़रत अली से खलीफा उस्मान के हत्या का बदला लेने के लिए लड़ने उसे अपमानित करने का आरोप लगाया, जब उसने बसरा में हसरत अली की सेना से, पुरुषों से लड़ा।

आयशा रजी। का जन्म 613 के अंत में या 614 के आरंभ में हुआ था। वह उम्म रुमान और मक्का के अबू बकर रजी। की बेटी थीं, मुहम्मद के सबसे भरोसेमंद साथी थे। आयशा मुहम्मद की तीसरी और सबसे छोटी पत्नी थीं। कोई स्रोत आयशा के बचपन के वर्षों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं देता है।

मुहम्मद के साथ आयशा से मेल खाने का विचार ख्वाला बिंत हाकिम ने सुझाया था। इसके बाद, जुबैर इब्न मुतीम के साथ आयशा के विवाह के संबंध में पिछले समझौते को आम सहमति से अलग कर दिया गया था। अबू बकर पहले अनिश्चित थे "अपनी बेटी से अपने 'भाई' से शादी करने की स्वामित्व या वैधता

के रूप में। ब्रिटिश इतिहासकार विलियम मोंटगोमेरी वाट ने सुझाव दिया कि मुहम्मद ने अबू बकर के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने की आशा की थी संबंधों को सुदृढ़ करना आमतौर पर अरब संस्कृति में विवाह के आधार के रूप में कार्य करता है।

मुहम्मद (आयशा) इस्लाम और बच्चों की आलोचना विवाह, और बाल विवाह मुहम्मद से शादी के समय आयशा की उम्र 15 वर्ष की रही है, और शुरुआती इतिहासकारों द्वारा उनकी उम्र के संदर्भ अक्सर होते हैं। सुन्नी शास्त्र के हदीस के सूत्रों के मुताबिक, आयशा छह या सात साल की थी जब शादी के साथ मुहम्मद से शादी कर ली गई थी, जब तक वह नौ या दस साल की उम्र तक नहीं पहुंच पाई जिसका अर्थ है कई पर्यवेक्षकों द्वारा यह इंगित करने के लिए कि वह इस उम्र में युवावस्था में पहुंची थीं। उदाहरण के लिए, साहिह अल बुखारी ने कहा कि आयशा ने सुना है कि जब वह छः वर्ष की थी तब पैगंबर ने उनसे विवाह किया और उसने उसे पूरा कर लिया शादी जब वह नौ साल की थी, और तब वह नौ साल तक (यानी, उसकी मृत्यु तक) उनके साथ रही। सही अल बुखारी, 7:62:64

हदीस संग्रह में आयशा की उम्र को रिकॉर्ड करना पैगंबर की मृत्यु के कुछ सदियों बाद आया, क्योंकि हदीस (दावा किया गया है) विश्वसनीय गवाहों की एक सत्यापित अखंड श्रृंखला के माध्यम से प्रारंभिक इस्लाम के रिकॉर्ड (देखें: अधिक जानकारी के लिए हदीस अध्ययन)। इस संबंध में हदीस सहित (पूरी तरह से

प्रामाणिक) स्थिति के साथ संग्रह से आते हैं। हालांकि, कुछ अन्य पारंपरिक स्रोत (एक ही स्थिति के बिना) असहमत हैं। इब्न हिशाम ने मुहम्मद की अपनी जीवनी में लिखा था कि वह समाप्ति पर दस साल की हो सकती हैं। इब्न हिशाम ने मुहम्मद के दो सौ साल बाद भी इब्न इशाक के खोए हुए काम पर अपनी जीवनी की आधार पर लिखा, जो मुहम्मद की मृत्यु के 72 साल बाद पैदा हुए थे। आयशा को शादी में नौ साल की उम्र में, और इब्न खल्लीकान (1211-1282) और इब्न साद अल-बगदादी (784-845) दोनों ने समाप्ति पर बारह के रूप में दर्ज किया था, बाद में उनके स्रोत हिशाम इब्न उरवा (मुहम्मद के साथी जुबैर इब्न अल-अवाम के पोते)।

उस समय कई जगहों पर बाल विवाह असामान्य नहीं था, अरब शामिल थे। यह अक्सर राजनीतिक उद्देश्यों की सेवा करता था, और आयशा की मुहम्मद से शादी का राजनीतिक अर्थ था।

मुस्लिम लेखक जो अपनी बहन असमा के बारे में अधिक विस्तृत जानकारी के आधार पर आयशा की उम्र की गणना करते हैं, उनका अनुमान है कि वह तेरह से अधिक थीं और शायद उनकी शादी के समय सत्रह और उन्नीसवीं के बीच थीं। एक ईरानी इस्लामी विद्वान और इतिहासकार मोहम्मद निकनाम अरभाही ने आयशा की उम्र निर्धारित करने के लिए छह अलग-अलग दृष्टिकोण (स्पष्टीकरण की आवश्यकता) पर विचार किया है और निष्कर्ष निकाला है कि वह अपने किशोरों के किशोरों में व्यस्त थीं। एक संदर्भ बिंदु के रूप

में फातिमा रजी। की उम्र का उपयोग करते हुए, लाहौर अहमदीया आंदोलन विद्वान मुहम्मद अली ने अनुमान लगाया है कि शादी के समय आयशा दस साल से अधिक पुरानी थी और इसके समापन के समय पंद्रह वर्ष से अधिक थी।

अमेरिकी इतिहासकार डेनिस स्पेलबर्ग ने आयशा की कौमार्य, विवाह की उम्र और उम्र के दौरान इस्लामी साहित्य की समीक्षा की है जब शादी समाप्त हो गई थी, और अनुमान लगाया गया था कि आयशा के युवाओं को उसकी कौमार्य् के बारे में कोई संदेह नहीं छोड़ने के लिए अतिरंजित किया गया हो सकता है। स्पेलबर्ग कहते हैं, "आयशा की उम्र इब्ने साद में एक प्रमुख प्री-व्यवसाय है जहां उसकी शादी छः से सात के बीच बदलती है, नौ शादी की समाप्ति पर उसकी उम्र के रूप में स्थिर दिखती है।" वह पैगंबर की इब्न हिशम की जीवनी में एक अपवाद बताती है, जो बताती है कि जब आयशा 10 साल की थी, तो इस बात के साथ उनकी समीक्षा का सारांश दिया गया कि "दुल्हन की उम्र के इन विशिष्ट संदर्भों में आयशा की पूर्व-मेनारियल स्थिति को मजबूत किया गया है और, जाहिर है, उनकी कौमार्य्। वे ऐतिहासिक रिकॉर्ड में आयशा की उम्र की विविधता का भी सुझाव देते हैं। प्रारंभिक मुसलमानों ने ऐशा के युवाओं को उनकी कौमार्य का प्रदर्शन करने और इसलिए मुहम्मद की दुल्हन के रूप में उनकी उपयुक्तता के रूप में माना। उनकी कौमार्य का यह मुद्दा उन लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण था जिन्होंने मुहम्मद के उत्तराधिकार की बहस में आयशा की स्थिति का समर्थन किया था । इन समर्थकों ने माना कि मुहम्मद की

एकमात्र कुंवारी पत्नी के रूप में, आयशा का दैवीय इरादा उनके लिए था, और इसलिए बहस के बारे में सबसे विश्वसनीय है।

9 साल की लड़की से 50 साल के आसपास व्यक्ति की शादी यानी कि मोहम्मद की आयशा से शादी को लेकर कुछ मुसलमान इस तथ्य से शर्मिंदा हैं कि उनके नबी 53 वर्ष की उम्र में बच्ची के साथ यौन संबंध रखते थे। हालांकि, उन्हें छोड़ने के बजाय वे आयशा की उम्र के बारे में झूठ बोलते हैं और यह साबित करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं कि वह बड़ी थी । उसने स्वयं असंख्य हदीसों में कहा था। दूसरे तो इतने बेशर्म है कि वे उस दृष्टिकोण की भी कोशिश नहीं करते, बल्कि अपने नबी के Pedophilia (बाल यौन शोषण) को न्यायसंगत साबित करने का प्रयास करते हैं।

मुहम्मद ने कई घिनौने अपराध किए शायद सबसे नीच और शर्मनाक 9 वर्षीय बच्ची के साथ उनके यौन उत्पीड़न का रिश्ता था। कोई सभ्य इंसान नहीं, वास्तव में किसी भी व्यक्ति के इस तरह के अपराध को न्यायसंगत, औचित्य और तर्कसंगत नहीं ठहराया जा सकता है। दुर्भाग्य से, मुसलमानों ने अपनी मानवता को त्याग दिया है इसके उनके पास कोई निशान नहीं है। वे दूसरे लोगों की तरह दिखते हैं, बात करते हैं, खाते हैं और शौच करते हैं । बस कमी है अंतरात्मा की ,यही वह चीज है जो मनुष्यों को सरीसृप और कीड़ों जैसे कमतर प्राणियों से अलग करती है।

अपने नबी के इस अपराध को उचित, न्यायसंगत ठहराना, उनकी भ्रष्टता की गहराई को दर्शाता है। जब कोई एक

PAEDOPHILIAC (छोटों के प्रति यौन आकर्षण रखने वाले व्यस्क) का बचाव करता है तो वे केवल यह साबित करते हैं कि वे कितने निकृष्ट जानवर हैं।

इसका उद्देश्य यह दिखाना है कि यह नीच आदमी अनैतिक, विकृत और मानसिक बिमार है और सही इंसान नहीं है और श्रेष्ठ, आदर्श पुरुष नही है जैसा उन्होंने दावा किया। ऐसा व्यक्ति परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता नहीं हो सकता था उनके कार्य राक्षसी और बुरा थे। उसका अनुकरण नही करना चाहिए बल्की निंदा की जानी चाहिए।

एक वयस्क व्यक्ति के लिए बच्चो के प्रति यौन भावनाए होना सामान्य नहीं है, जब तक कि वो एक pedophile (बालकमुक) न हो, जैसा विषमलैंगिक व्यक्ति के लिए किसी अन्य व्यक्ति के यौन भावना होने के लिए संभव नहीं है, जब तक कि वह एक समलैंगिक न हो। यह नैतिकता या संस्कृति के बारे में नहीं है यह एक मानसिक विकार के बारे में है केवल पीडोफिल ही बच्चो के प्रति कामुक हो सकते हैं।

पूर्व-इस्लामी अरब के अध्ययन के वर्षों में मुझे कभी कोई घटना का वर्णन नही मिला कि एक बूढ़े आदमी ने बच्ची से शादी की हो। अरब के लोग अपने बच्चों को छोटी उम्र में शादी करते थे। बालक बालिका दोनो समान आयु के होते थे। वास्तविक विवाह होती थी जब दोनों ही बच्चे वयस्क हो जाते थे। छोटे बच्चों से शादी करने वाले बूढ़े लोगों की प्रथा मुहम्मद के साथ शुरू हुई, जिन्हे मुसलमानों द्वारा पालन करने के लिए श्रेष्ठ उदाहरण मानते हैं।

इसके अलावा, यह मानते हुए कि यह अरबों का एक पुराना चलन था, क्या यह उचित साबित हो गया ? यह निश्चित रूप से एक नीच कार्य है एक बच्ची के उसके भविष्य के बारे में फैसला करने की मानसिक क्षमता नहीं होती और उसे किसी ऐसे व्यक्ति से शादी करने के लिए मजबूर करना जिसे उसने चुना नहीं है उसके मानवाधिकार का उल्लंघन है, खासकर जब आदमी लडकी की दादा की उमर का हो । मैं उसके शरीर के नुकसान के बारे में भी बात नहीं कर रहा हूं क्योंकि मेरा मानना है कि किसी समझदार व्यक्ति को पहले से ही पता है। सवाल यह है कि इस बुरे चलन की निंदा करने के बजाय मुहम्मद ने इस प्रचलन का अनुकरण किया ? ऐसा करने से उसने अपने मूर्ख और मस्तिष्क मृत अनुयायियों के लिए बुरे चलन को एक सुन्ना बनाया। मुस्लिम मुहम्मद का zombies की तरह अनुकरण करते हैं । इन लोगों में कोई बुद्धि नहीं है ।जो कुछ भी मुहम्मद ने किया, चाहे वो कृत्य कितना भी घिनौना हो । मुसलमान उसका पालन करते हैं । वे ऊंट के मूत्र भी पीते हैं क्योंकि मुहम्मद ने इसे पिया। एक बार जब कोई व्यक्ति मुस्लिम बन जाता है तो मस्तिष्क समाप्त हो जाता है। वह अब मनुष्य नहीं है।

हम एक बूढ़े आदमी के विवाह के बारे में बात कर रहे हैं ।कई संस्कृतियों में कम उम्र में अपने बच्चों के विवाह का प्रचलन रहा। महात्मा गांधी ने अपनी पत्नी से शादी की जब दोनों ही 10 साल के थे। इस तरह के विवाहों का उद्देश्य युगल को एक साथ बढ़ने , सामंजस्य और एक खास बंधन में बाधना था। यह एक पुरानी

मूर्खतापूर्ण विश्वास था, जिसमें पीडोफिलिया से कोई लेना-देना नहीं था, जो मुहम्मद को वैधता प्रदान करे।

सभी यूरोपीय देशों में विवाह की कानूनी आयु 18 है। केवल अल्बानिया और माल्टा ऐसे देश हैं जहा विवाह की न्यूनतम उम्र 16 है । दोनों देशो में इस्लामी संस्कृति का भारी प्रभाव हैं। फिर, हम एक बच्ची के साथ एक बूढ़े आदमी के यौन संबंध की बात कर रहे हैं। दो किशोर एक दूसरे से प्यार करते हैं और अठखेलिया करते हैं। प्यार में पड़ने वाले दो किशोरों के लिए यह सामान्य है लेकिन यह एक सामान्य बात नहीं है कि एक 50 वर्ष का बूढा व्यक्ति 6 वर्षीय बच्ची के लिए कामुक हो।

सहमति से विवाह की उम्र ज्यादातर देशो में 18 से 21 के बीच है, जिसमें बहुत कम अपवाद हैं, जहा की सहमति से विवाह की उम्र 16 वर्ष है।

यह बहुत तार्किक है अगर हमें ऐसा निर्णय करने की अनुमति नहीं है तो हम किसी भी ऐतिहासिक शख्सियत के अपराधों का न्याय नहीं कर सकते। जो इस कार्य को समझने में असमर्थ है नीच है जिसे तर्कसंगत व्यक्ति नही कहा जा सकता है।

इसके अलावा, यह अतीत के बारे में नहीं है मुहम्मद को सभी समय के लिए अनुसरण करने के लिए सबसे अच्छा उदाहरण माना जाता है। इसलिए 21 वीं शताब्दी में हर दिन सभी इस्लामी देशों में बच्चों के साथ बलात्कार किया जाता है क्योंकि मुहम्मद ने 7 वीं शताब्दी में ऐसा किया था।

यह बेवकूफी भरा तर्क नही तो और क्या है ? यदि विचार शत्रुतापूर्ण जनजातियों के साथ गठजोड़ करना था जैसा मुस्लिम कहते हैं, तो क्या इसका मतलब यह है कि बच्चो को राजनीतिक मोहरा के तौर पर इस्तेमाल किया जाए ? उसके अधिकारों के बारे में क्या ? क्यों नहीं एक सही उम्र की महिला से शादी की जा सकती थी। इसके अलावा, अबू बक्र पहले से ही मुहम्मद का भक्त था। अबू.बक्र की दोस्ती को जीतने के लिए मुहम्मद को उनकी मासूम बच्ची का बलात्कार करना पड़ा। अबू बकर एक मस्तिष्क मृत पंथवादी थे उस मूर्ख ने मुहम्मद को अपने बच्ची को स्वर्ग जाने के लालच में बलात्कार करने की अनुमति दी थी, जिससे वो 72 कुंवारियो का सुख ले सके। वे दोनों अब नरक में हैं और कुछ राक्षस उनकी अच्छी खातिरदारी कर रहे हैं। मुहम्मद का अनुकरण करने वाले मुसलमान उनके साथ जुड़ेंगे।

मानव फिजियोलॉजी पिछले दो लाख वर्षों से बदल नहीं गई है मानव भ्रूण 9 महीनों में ही परिपक्व होता है, चाहे कोई भी नस्ल या जलवायु हो और सभी लड़कियां 13 वर्ष की आयु में यौवन को प्राप्त होती हैं। पिछले दो लाख वर्षो में ये संख्याएं नहीं बदली हैं। एक नौ साल की बच्ची अफ्रीका में अलास्का या अरब में बच्ची ही है। आयशा ने कहा कि हालांकि गुड़िया के साथ खेलना इस्लाम में निषिद्ध है, लेकिन मुहम्मद ने कोई आक्षेप नहीं किया कि वह अपनी गुड़िया के साथ नही खेले क्योंकि वह यौवन की उम्र तक नहीं पहुंच पाई थी " नबी " उसे अपने बिस्तर पर ले गए।वह

गुड़िया से खेल रही थी और मुहम्मद उसके साथ यौन संबंध बनाना चाहते थे।

मुसलमान यह जानते हैं, लेकिन फिर भी एक विकृत मानसिकता वाले व्यक्ति का बचाव करते हैं और विडंबना यह है कि वे सम्मान की मांग करते हैं। नहीं! आप सम्मान के योग्य नहीं हैं। भला एक मासूम बच्ची का यौन शोषण करने वाले को "नबी" मानने वाले कैसे सम्मान के हकदार हो सकते है।

विश्व में भारतीय संस्कृति और परम्परा को महान माना जाता है। क्योंकि इस में स्त्रियों को देवी की तरह सम्मान दिया जाता है। यहाँ तक मौसी , बुआ चचेरी बहिन और पुत्र वधु पर सपने में भी बुरी दृष्टि रखने को महापाप और अपराध माना गया है। लेकिन इन्हीं कारणों से कोई भी समझदार व्यक्ति इसलाम को धर्म कभी नहीं मानेगा , क्योंकि मुहम्मद साहब अपनी वासना पूर्ति के लिए कुरान का सहारा लेकर ऐसी ही स्त्रियों से सहवास करने को वैध बना देते थे, जिसका पालन मुसलमान आज भी कर रहे हैं। इस विषय को स्पष्ट करने के लिये कुरान की उन आयतों, हदीसों और उनकी ऐतिहासिक प्रष्ट भूमि को देखना होगा, कि मुहम्मद साहब ने अपनी सगी मौसी , चचेरी बहिन और अपने दत्तक पुत्र की पत्नी से सहवास कैसे किया था। और इस पाप को कुरान की आयत बना कर कैसे जायज बना दिया। इस्लामी परिभाषा में अपने शहर को छोड़ कर पलायन करने को हिजरत (Migration) कहा जाता है। लगभग सन 622 में मुहम्मद साहब को मक्का छोड़ कर मदीना

जाना पडा था। उनके साथ कुछ पुरुष और महिलायें भी थी। साथ में उनकी प्रिय पत्नी आयशा भी थी। इसी घटना की प्रष्ट भूमि में कुरआन की सूरा अहजाब की वह आयतें दीगयी हैं जिनमे मौसी, चचेरी बहिन , और पुत्रवधु से शादी करना या उनसे सम्भोग करने को जायज ठहरा दिया गया है। ऐसी तीन औरतों के बारे में इस लेख में जानकारी दी जा रही है , जिन से मुहम्मद साहब ने कुरान की आड़ में अपनी हवस पूरी की थी।

मौसी के साथ कुकर्म

मुहम्मद साहब की हवस की शिकार होने वाली पहली औरत का नाम "खौला बिन्त हकीम अल सलमिया" था। और उसके पति का नाम "उसमान बिन मजऊम था। खौला मुहम्मद की माँ की बहिन यानि उनकी सगी मौसी (maternal aunt) थी। इसको मुहम्मद साहब ने अपना सहाबी बना दिया था। मदीना की हिजरत में मुहम्मद आयशा के साथ खौला को भी ले गए थे। यह घटना उसी समय की है इस औरत ने अय्याशी के लिए खुद को मुहम्मद के हवाले कर दिया था। यह बात मुसनद अहमद में इस प्रकार दी गयी है। "खौला बिन्त हकीम" ने रसूल से पूछा कि जिस औरत को सपने में ही स्खलन होने की बीमारी हो , तो वह औरत क्या करे , रसूल ने कहा उसे मेरे पास लेटना चाहिए"

"Khaula Bint Hakim al-Salmiya,asked the prophet about the woman having a wet dream .he said she

shoud lay with me ..Translation:26768 (Musnad Ahmad) hadith-26768

तब खौला मुहम्मद साहब के पास सो गयी, और मुहम्मद साहब ने उसके साथ सम्भोग किया।

आयशा ने खौला को धिक्कारा जब आयशा को पता चला कि रसूल चुपचाप खौला के साथ सम्भोग कर रहे हैं तो उसने खौला को धिक्कारा और उसकी बेशर्मी के लिए फटकारा यह बात इस हदीस में दी गयी है, "हिशाम के पिता ने कहा कि खौला एक ऐसी औरत थी जिसने सम्भोग के लिए खुद को रसूल के सामने प्रस्तुत कर दिया था। इसलिए आयशा ने उस से पूछा ,क्या तुझे एक पराये मर्द के सामने खुद को पेश करने में शर्म नही आयी ? तब रसूल ने कुरान की सूरा अहजाब 33:50 की यह आयत सुना दी, जिसमे कहा था" हे नबी तुम सम्भोग के लिए अपनी पत्नियों की बारी (Turn) को टाल सकते हो । इस पर आयशा बोली लगता है तुम्हारा अल्लाह तुम्हें और अधिक मजे करने की इजाजत दे रहा है। (I see, but, that your Lord hurries in pleasing you)

बुखारी -जिल्द 7 किताब 62 हदीस 48,

आयशा को ईर्ष्या हुई कोई भी महिला अपने पति की दूसरी महिला से अय्याशी को सहन नहीं करेगी। आयशा ने रसूल से कहा कि मुझे इस औरत से ईर्ष्या हो रही है। यह बात इस हदीस में इस प्रकार दी गयी है"आयशा ने कहा कि मैं रसूल से कहा मुझे उस औरत से जलन हो रही है जिसने सम्भोग के लिए खुद को तुम्हारे

हवाले कर दिया। क्या ऐसा करना गुनाह नहीं है। तब रसूल ने सूरा अहजाब की 33:50 आयत सुना कर कहा इसमे कोई पाप नहीं है ,क्योंकि यह अल्लाह का आदेश है। तब आयशा ने कहा लगता है , तुम्हारे अल्लाह को तुम्हें खुश करने की बड़ी जल्दी है "(It seems to me that your Lord hastens to satisfy your desire.) सही मुस्लिम -किताब 8 हदीस 3453

चचेरी बहिन से सहवास, मुहम्मद साहब के चाचा अबू तालिब की बड़ी लड़की का नाम "उम्मे हानी बिन्त अबू तालिब था। जिसे लोग "फकीतः और" हिन्दा" भी कहते थे। यह सन 630 ईसवी यानि 8 हिजरी की बात है। जब मुहम्मद साहब तायफ़ की लड़ाई में हार कर साथियों के साथ जान बचाने के लिए काबा में छुपे थे। लेकिन मुहम्मद साहब चुपचाप सबकी नजरें चुरा कर उम्मे हानी के घर में घुस गए, लोगों ने उनको काबा में बहुत खोजा। और आखिर वह उम्मे हानी के घर में पकडे गए। इस बात को छुपाने के लिए मुहम्मद साहब ने एक कहानी गढ़ दी और लोगों से कहा कि मैं जेरुसलेम और जन्नत की सैर करने गया था, मुझे अल्लाह ने बुलवाया था। उस समय उनकी पहली पत्नी खदीजा की मौत हो चुकी थी वास्तव में। मुहम्मद साहब उम्मे हानी के साथ व्यभिचार करने गए थे। उन्होंने कुरान की सुरा अहजाब की आयत 33:50 सुना कर सहवास के लिए पटा लिया था । यह बात हदीस की किताब तिरमिजी में मौजूद है। जिसे प्रमाणिक माना जाता है। पूरी हदीस इस प्रकार है, "उम्मे हानी ने बताया उस रात रसूल ने मुझ से अपने साथ शादी करने का प्रस्ताव रखा , लेकिन मैं इसके लिये उन

से माफी मागी । तब उन्होंने कहा कि अभी अभी अल्लाह की तरफ से मुझे एक आदेश मिला है "। हे नबी हमने तुम्हारे लिए वह पत्नियां वैध कर दी हैं ,जिनके मेहर तुमने दे दिये । और लौंडियाँ जो युद्ध में प्राप्त हो ,और चाचा की बेटीयाँ , फ़ूफ़ियों की बेटियाँ ,मामू की ,खालाओं की बेटियाँ और जिस औरत ने तुम्हारे साथ हिजरत की है ,और वह ईमान वाली औरत जो खुद को तुम्हारे लिए समर्पित हो जाये " यह सुन कर मैं राजी हो गयी और मुसलमान बन गयी।

–तिरमिजी –जिल्द-1 किताब-44 हदीस-3214 पे0-522, पुत्रवधु से सहवास, मुहम्मद साहब के समय अरब में दासप्रथा प्रचलित थी। लोग युद्ध में पुरुषों, औरतों और बच्चों को पकड़ लेते थे। और उनको बेच देते थे। ऐसा ही एक लड़का मुहम्मद साहब ने खरीदा था। जिसका नाम " जैद बिन हारिस" था। (c. 581-629 CE) मुहम्मद साहब ने उसे आजाद करके अपना दत्तक पुत्र बना लिया था अरबी में। दत्तक पुत्र (adopt son) को " मुतबन्ना " कहा जाता है। यह एक मात्र व्यक्ति है जिसका नाम कुरान सूरा अह्जाब 33:37 में मौजूद है। इसी लिए लोग जैद को " जैद मौला "या " जैद बिन मुहम्मद भी कहते थे। यह बात इस हदीस से साबित होती है ,

"तिरमिजी -जिल्द 1 किताब 46 हदीस 3814

कुछ समय के बाद् जैद की शादी हो गयी उसकी पत्नी का नाम "जैनब बिन्त जहश" था वह काफी सुन्दर और गोरी थी। इसलिये

मुहम्मद साहब की नजर खराब हो गयी। उन्होंने घोषित कर दिया कि आज से मेरे दत्तक पुत्र को मेरे नाम से नहीं उसके असली बाप के नाम से पुकारा जाय। और इसकी पुष्टि के लिये कुरान की सूरा 33:5 भी ठोक दी। यह बात इस हदीस से सबित होती है।

रसूल की नीयत में पाप, जैनब को हासिल करने के लिए मुहम्मद साहब ने फिर कुरान का दुरुपयोग किया। और लोगों से जैद को मुहम्मद का बेटा कहने से मना कर दिया, ताकि लोग जैनब को उनके लडके की पत्नी नहीं मानें।

जैनब कुरैश कबीले की सब से सुंदर लड़की थी। और जब अल्लाह ने अपनी किताब में जैद के बार में सूरा 33 की आयत 5 नाजिल कर दी , जिसमे कहा था कि आज से तुम लोग जैद को उसके असली बाप के नाम से पुकारा करो। ,क्योंकि अल्लाह की नजर में यह बात तर्कसंगत प्रतीत लगती है। और यदि तुम्हें किसी के बाप का नाम नहीं पता हो ,तो उस व्यक्ति को भाई कह कर पुकारा करो ,मलिक मुवत्ता -किताब 30 हदीस 212,

कुरान की सूरा 33:5 की व्याख्याकुरान की सूरा अहजाब की आयत 5 के अनुसार दत्तक पुत्र जैद को असली पुत्र का दर्जा नहीं दिया गया, इस आयत की व्याख्या यानी तफ़सीर “जलालुद्दीन सुयूती” ने की है। इनका काल c.1445–1505 AD है।

इन्होने कुरान की जो तफ़सीर की है, उसका नाम “तफ़सीर जलालैन” है। इसमे बताया गया है कि रसूल ने जैद को अपने पुत्र का दर्जा नहीं देने के लिए यह तर्क दिए थे।

1. दत्तक पुत्र रखने की परंपरा अज्ञान काल है, अब इसकी कोई जरुरत नहीं है।

2 . मैंने जिस समय जैद को खरीदा था, उस समय अल्लाह ने मुझे रसू नही बनाया था।

3. लोग जैद को मेरा सगा बेटा मान लेते थे। जिस से मेरी बदनामी होती थी।

4. जैद ने मुझ से जैनब को तलाक देने का वादा कर रखा है। (Tafsir al-Jalalayn) Sura-ahzab 33:5 इन्ही कुतर्कों के आधार पर लगभग सन 625 ईसवी में मुहम्मद साहब ने अपने दत्तक पुत्र जैद की पत्नी से शादी कर डाली। यानी जैनब के साथ व्यभिचार किया।

-Prophet Muhammad lusts after & steals his adopted son's wife Pt. 2अपने निकट सम्बन्ध की स्त्रियों के साथ शारीरिक संबंध बनाने को इनसेस्ट (incest) कहा जाता है , विश्व के सभी धर्मों और हर देश के कानून में इसे पाप और अपराध माना गया है। लेकिन मुहम्मद साहब अपनी वासना पूर्ति के लिए तुरंत कुरान की आयत सूना देते थे। और इस निंदनीय काम को जायज बना देते थे। कुरान की इसी तालीम के कारण हर जगह व्यभिचार और बलात्कार हो रहे हैं। क्योंकि मुसलमान इन नीच कर्मों को गुनाह नहीं मानते ,बल्कि रसूल की सुन्नत मानते हैं।

विश्व में जितने भी धर्म, और महापुरुष हुए हैं, सबने ही लोगों को सदाचार की शिक्षा दी है। और लोगों से अनैतिक कामों से दूर रहने की प्रेरणा दी है। यही नहीं सभी धर्म और सभी धर्म के महापुरुषों का सम्मान करने की शिक्षा भी दी है। लेकिन मुसलमान बलपूर्वक लोगों से इस्लाम को सर्वश्रेष्ठ धर्म और मुहम्मद को सर्वोतम, आदर्श व्यक्ति मनवाने के लिए दूसरे धर्मों और दुसरे धर्म के महापुरुषों का अपमान करते रहते हैं।

लेकिन खुद मुहम्मद की पत्नी आयशा मुहम्मद को झूठा समझती थी। मुहम्मद के साथी मुहम्मद की पत्नी पर बुरी नजर रखते थे। और अपने हरेक कुकर्म को जायज करवाने के लिए तरकीबें सोचते रहते थे। मुहम्मद की प्रिय पत्नी आयशा बेशर्म होकर मुहम्मद के साथियों को सेक्स की तालीम देती थी। लेकिन फिर भी मुहम्मद लोगों से उसका अनुसरण करने के लिए कहते थे। और यही बात उन्होंने कुरान में भी लिख दी थी।

इस लेख में यही बात प्रमाण सहित विस्तार से दी जा रही है –

मुसलमानों के लिए उत्तम आदर्श

निश्चय ही तुम लोगों के लिए रसूल का सुन्दर चरित्र एक आदर्श है।

“Indeed, you have in the Prophet a beautiful patter“

Al-Qur’an, Surah Al-Ahzab, 33Ayah 21

आयशा मुहम्मद को झूठा मानती थी।

एक बार किसी बात पर रसूल और आयशा में तकरार हो गयी। और फैसला करने के लिए आयशा ने अपने पिता अबूबकर को मुंसिफ बनाया। तब आयशा ने रसूल से कहा, बोलो तुम झूठ नहीं बोलोगे और सिर्फ केवल सच ही कहोगे। इस पर अबूबकर ने आयशा को इतनी जोर से थप्पड़ मारी कि उसके मुंह से खून निकल आया।

Once there was an altercation between the Prophet and Ayesha when they found Abu Bakr as judge. Hazrat Ayesha said to the Prophet: ‘You speak but don’t speak except truth. At once Abu Bakr gave her such a slap that blood began to ooze out from her mouth’

Ihya Ulum-id-din by Imam Ghazzali, Volume 2 page 36

सहबियों की नजर मुहम्मद की पत्नी पर वैसे तो मुसलमान मुहम्मद के सहबियों को भी अपना आदर्श मानते हैं। लेकिन वह सब चरित्रहीन थे। इसका प्रमाण इस हदीस से मिलता है।

कतदा ने कहा कि एक सहाबी ने कहा “,अगर रसूल मर जाये तो मैं उसकी पत्नी आयशा से शादी कर लूँगा “इसके बाद कुरान में

यह आयत लिखी गयी थी "कि रसूल की पत्नियाँ तुम्हारे लिए माता है।

Qatada said: 'A man said: 'If Allah's messenger (s) died, I would marry Ayesha'. Hence Allah revealed '{Nor is it right for you that ye should annoy Allah's Messenger}' then revealed '{and his wives are their mothers sura ahzab 33:6}

कुरान की इस आयत की व्याख्या में "अस्यार अल तफ़सीर में लिखा है कि जब रसूल बीमार थे तो "तल्हा ने कहा अगर हम मर जाते हैं तो रसूल हमारे चाचा की बेटियों से शादी कर लेता है। लेकिन हमें अपने चाचा की लड़की से शादी करने से रोकता है" (आयशा तल्हा की चचेरी बहिन लगती थी)

Aysar al-Tafasir, Volume 4 page 1422:

this verse descended in honour of Talha who expressed his intention of marrying Ayesha in the eventuality of Rasulullah (s) dying".

Talha said, "Muhammad refrains us from marrying our cousin's, and yet marries our women when we die, after his death we shall marry his wives' after this, the verse descended "You cannot marry the wives of Rasulullah"

तुम रसूल की पत्नी से शादी नहीं कर सकते "(तल्हा बिन उबैदुल्लाह अबू बकर का cousin था। उस से मुहम्मद ने यह कहा था।

Tafseer Ibn Katheer Volume 6 page 506 commentary of Surah Azhab, 33:6

उमर ने फातिमा को धमकाया

इतिहास गवाह है कि मुसलमान सत्ता के भूखे होते हैं। और सता के लिए कोई भी अपराध कर सकते हैं। इसी तरह जब मुहम्मद के दामाद अली ने उमर को खलीफा मानने से इंकार कर दिया तो। उमर फातिमा मुहम्मद की पुत्री को धमकाने लगा।

Umar's threat to bibi Fatima

"उमर अली के घर पर गया ,वहां तल्हा ,जुबैर और मुहाजिरों का पूरा गिरोह मौजूद था। उमर ने धमकी देकर कहा "अल्लाह की कसम अगर तुम लोग म्रेरे साथ बैयत (वफ़ादारी का वचन) नहीं करोगे तो मैं तुम्हारे पूरे घर वालों को जिन्दा जलवा दूंगा। यह सुन कर जुबैर तलवार लेकर बाहर निकला ,लेकिन गिर गया और तलवार भी हाथ से छुट गयी ,बाद में उमर के लोग उसे कैद कर के ले गए। "

Umar came to the house of ali asws, when talha, zubair and a group of mohajareen was there in the house; umar said: by god! i will burn you people

or come out for bayat; zubair came with sword but he fell and sword moved out of his hand; so people catch him and took him into custody

[tareekh tibri; tibri; vol 2, page 233; printed by dar ul kutb ilmia; beirut]

अब आपको बताया जा रहा है कि मुहम्मद के साथी कितने चालाक और दुराचारी थे, और किस तरह से हरेक कुकर्म को जायज और वैध बना देते है। अगर यही काम कोई दुसरे धर्म का व्यक्ति करता तो मुसलमान धिक्कार की बरसात कर देते। लेकिन इस्लाम में हरेक ऐसा कुकर्म हलाल है। इसे पढ़ कर मुसलमानों को शर्म से डूब कर मर जाना चाहिए। इसके कुछ नमूने देखिये –

पत्नी से गुदामैथुन (Sodomy) हलाल है।

हसन बिन सुफ़यान ने अपनी मसनद "तबरानी अल असवात "के अन्दर हकीम और नईम अल अस्तखरज में इसके बारे में हदीसों की एक श्रृंखला पेश की है। जिसमे इब्ने उमर ने कहा है कि रसूल ने इस आयत में औरत के साथ उसकी गुदा में सम्भोग करने की इजाजत देदी है। और गुदा मैथुन (Sodomy) को हलाल बताया है।

Abdullah Ibn Umar deemed sodomy to be Halaal

Hasan bin Sufiyan in his Musnad, Tabarani in Al-Awsat, Hakim and Abu Naeem in Al-Mastakhraj

with a ‘Hasan’ chain of narration narrated from Ibn Umar who said: ‘This verse was revealed on Holy Prophet (s) in respect to permissibility of performing sex in the anus of a woman’

Tafseer Durre Manthur, Volume 1 page 638

वेश्यावृति हलाल है।

दुर्र अल मुख़्तार में लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति सूचित करता है। कि मैं पैसे देकर किसी औरत के साथ सम्भोग करता हूँ तो, इस्लामी कानून के अनुसार उसका यह काम दंडनीय नहीं हो सकता है।

The Permissibility to pay a woman for sex

”if a man informs a woman that he is paying her for sex then he cannot be subject to any manner of Islamic penalty.”

Dur al-Mukhtar, Volume 2, Page 474

माँ के साथ सम्भोग जायज है।

फतवा गाजी खान में उन बातों के बारे में कहा गया है जो हराम है और जिन बातों के लिए इस्लामी कानून में किसी भी सजा का प्रावधान नहीं है वह इस प्रकार हैं ,अपनी पत्नी की बहिन से शादी करना ,अपनी माँ से शादी करना ,या ऐसी औरत से शादी

करना जो पहले से ही विवाहिता हो। यह सब इस्लाम के अनुसार हलाल हैं।

Permissibility of Having Sex with One's Mother"

Of things which are haram but for which there is no Islamic penalty, these include marrying your wife's sister, or her mother, or a woman who is already married.

Fatawa Qadhi Khan, Volume 4, Page 820

इस्लाम की शिक्षा के कारण आज मुसलमान राक्षस बन गए हैं। यहाँ तक उनकी औरतें भी यातो आतंकवादी बन जाती है ,या फिर लड़कियों से वेश्यावृति करवाती है। एक तरफ मुहम्मद लोगों को जिहाद के इए उक्साते रहते थे, तो दूसरी तरफ उनकी पत्नी आयशा मोहम्मद के साथियों को सेक्स के तरीके सिखाती रहती थी। जिसमे मोहम्मद भी साथ देते थे। आप इन हदीसों को ध्यान से पढ़िए –

'आयशा' सहबियों को सेक्स सिखाती थी।

रसूल की पत्नी आयशा ने कहा कि एक आदमी रसूल के पास गया, और उनसे पूछा कि मैं जब अपनी पत्नी के साथ सम्भोग करता हूँ तो स्खलित नहीं होता। क्या ऐसे सम्भोग के बाद स्नान करना जरुरी है ?उस समय वहां आयशा भी मौजूद थी। रसूल ने

कहा कि जब भी मैं और ईमान वालों की माता (आयशा) सम्भोग करते हैं, तो स्नान करते हैं।

Ayesha would give sex advice to the Sahaba"

'A'isha the wife of the Apostle of Allah (may peace be upon him) reported. A person asked the Messenger of Allah (may peace be upon him) about one who has sexual intercourse with his wife and parts away (without orgasm) whether bathing is obligatory for him. 'A'isha was sitting by him. The Messenger of Allah (may peace be upon him) said: I and she (the Mother of the Faithful) do it and then take a bath".

Sahih Muslim Book Haid 003, Number 0685

अबू मूसा ने कहा कि मुहाजिरों और अंसारों में बहस हो रही थी अंसारों ने कहा कि सम्भोग के बाद नहाना जरुरी है। चाहे वीर्य निकले या नहीं। एक मुहाजिर बोला आपकी बात ठीक है। तभी अबू मूसा उठा और आयशा के पास जाकर बोला, मुझे आपसे एक राय चाहिए लेकिन मुझे शर्म आ रही है। आयशा ने कहा तुम बिना किसी शर्म के कहो क्या बात है। उसने आयशा से पूछा कि क्या सम्भोग के बाद नहाना जरुरी है ?आयशा ने कहा यदि कोई व्यक्ति औरत बीच में इस तरह घुसे कि जिससे उसका

खतना वाला अंग और बाकी के चार अंग औरत के अंगों से स्पर्श करें तो स्नान करना जरुरी है।

Abu Musa reported:

There cropped up a difference of opinion between a group of Muhajirs (Emigrants and a group of Ansar (Helpers) (and the point of dispute was) that the Ansar said: The bath (because of sexual intercourse) becomes obligatory only-when the semen spurts out or ejaculates. But the Muhajirs said: When a man has sexual intercourse (with the woman), a bath becomes obligatory (no matter whether or not there is seminal emission or ejaculation). Abu Musa said: Well, I satisfy you on this (issue). He (Abu Musa, the narrator) said: I got up (and went) to 'A'isha and sought her permission and it was granted, and I said to her: O Mother of the Faithful, I want to ask you about a matter on which I feel shy. She said : Don't feel shy of asking me about a thing which you can ask your mother, who gave you birth, for I am too your mother. Upon this I said: What makes a bath obligatory for a person? She replied: You have

come across one well informed! The Messenger of Allah (may peace be upon him) said: When anyone sits amidst four parts (of the woman) and the circumcised parts touch each other a bath becomes obligatory.

Sahih Muslim Book 3, Number 0684:

इसके विषय की गंभीरता को समझें। और बताएं कि मुसलमान किस बात के आधार पर इस्लाम को सवश्रेष्ठ धर्म कहते है। मुसलमान इसी लिए अपनी उन किताबों को छुपा देते है ,जिनमे उनके कुकर्मो का उल्लेख होता है। आज मुसलमान जिस इस्लाम की महानता का ढिंढोरा पीटते वह दिखावा है और भोले भले लोग इनके जाल फस जाते हैं। आज भी मुसलमानों की असली किताबें उर्दू या अरबी में हैं। और अधिकांश लोग उनसे अनजान है। और जो लोग खिसिया कर कमेन्ट के रूप में गालियाँ और अपशब्दों का प्रयोग करके इस्लाम की वकालत करते हैं ,और दूसरों के धर्मग्रंथों में कमियां निकालते है। उन से मेरा यही कहना है कि हिन्दू धर्म की कहानिया इतिहास नहीं हैं ,और केवल मिथक है। इन से आज तक समाज का कोई बुरा नहीं हुआ लेकिन जब मुसलमान अपनी किताबों को सच्चा बताते हैं ,तो उसका जवाब देना जरुरी हो जाता है। क्योकि दुनिया का शायद ही कोई ऐसा कुकर्म ,अपराध ,और अनैतिक कार्य बचा होगा जो इस्लाम में जायज और हलाल न होगा।

दुष्कर्म करना और कराना यही इस्लाम है। मुसलमान जितना बड़ा होगा उतना ही दुश्चरित्र होगा।

यह तो कुछ बातें मोहम्मद और उनके कुछ सहाबीयो (दोस्तो) की अय्याशी के सिलसिले में हुई मोहम्मद ने लूटपाट हत्याएं बलात्कार यौन शोषण बाल विवाह सबको अल्लाह की मर्जी बताते हुए बताते हुए अपने अपने अनुयायियों के हित में किया।

मोहम्मद की पहली बीवी खदीजा से मोहम्मद की एक बेटी थी जिसका नाम फातिमा था मोहम्मद ने फातमा की शादी अपने चाचा के बेटे हजरत अली से की फातिमा और हजरत अली क्योंकि मोहम्मद के परिवार से सीधे तौर पर आते थे इसलिए फातमा से और उनके पति अली से मोहम्मद के दोस्त मोहम्मद की दूसरी पत्नियां खास करके आयशा बेहद नफरत करते थे मोहम्मद के देहांत के बाद फातमा जो मोहम्मद की बेटी थी और अली की पत्नी थी ज्यादा दिन तक जिंदा नहीं रहे और उनकी शहादत हो गई उनकी शहादत के पीछे मोहम्मद के दोस्त उमर जो बाद में दूसरा खलीफा बना उसका हाथ था उमर ने फातमा के घर पर अपने साथियों के साथ हमला किया और दरवाजे में आग लगा दी जो दरवाजा फातमा के ऊपर गिरा और फातमा की पसलियां टूट गई यह सब मोहम्मद के देहांत के कुछ दिनों के बाद ही घटित हुआ और फातमा की मौत हो गई।

अब अब यह जानना भी जरूरी है की फातिमा के मोहम्मद की बेटी थी और मोहम्मद से बेहद प्यार करती थी और मोहम्मद द्वारा

फैलाए गए इस्लामिक जाल को समझ ना सके शायद अपने बाप की मोहब्बत के कारण फातिमा के बारे में भी समझना बहुत जरूरी है क्योंकि वह भी मोहम्मद द्वारा फैलाए गए इस्लाम के कट्टरपंथ की शिकार मोहम्मद के मौत के बाद वे स्वयं हो गई थी।

फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (पवित्र महिला)

फ़ातिमा को हज़रत फ़ातिमा ज़हरा (पवित्र महिला) कहा जाता है। उनकी उपाधियां ज़हरा, सिद्दीक़ा, ताहिरा, ज़ाकिरा, राज़िया, मरज़िया, मुहद्देसा व बतूल हैं। वे मुहम्मद और ख़दीजा की पुत्री, अली की पत्नी, हसन और हुसैन की मां थीं।

फ़ातिमा (पवित्र महिला) 'मुस्लिम दुनिया' का अत्यंत लोकप्रिय बालिकाओं का नाम है।

हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला) के पिता मुहम्मद और आपकी माता ख़दीजा इस्लाम को स्वीकार करने वाली पहली स्त्री थीं। खदीजा अरब की एक धनी महिला थीं जिनका व्यापार पूरे अरब में फैला हुआ था। उन्होंने विवाह उपरान्त अपनी सारी सम्पत्ति इस्लाम प्रचार के लिए दे दी थी। और स्वंय साधारण जीवन जीती थीं। अधिकाँश इतिहासकारों ने उल्लेख किया है कि उनकी पुत्री हज़रत फातिमा ज़हरा (पवित्र महिला) का जन्म मक्का नामक शहर में जमादियुस्सानी (अरबी वर्ष का छटा मास) मास की 20 वी तारीख को बेसत के पांचवे वर्ष हुआ। कुछ इतिहास कारों ने इनके जन्म को बेसत के दूसरे व तीसरे वर्ष में भी लिखा है। एक सुन्नी इतिहासकार ने आपके जन्म को बेसत के पहले वर्ष में लिखा है।

हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला) का पालन पोषन स्वंय मोहम्मद की देख रेख में घर में ही हुआ। आप का पालन पोषन उस गरिमा मय घर में हुआ जहाँ पर अल्लाह का संदेश आता था। जहाँ पर कुरऑन उतरा जहाँ पर सर्वप्रथम एक समुदाय ने एकईश्वरवाद में अपना विश्वास प्रकट किया तथा मरते समय तक अपनी आस्था में दृढ रहे। मोहम्मद ने अपनी पुत्री को फ़ातिमा (पवित्र महिला) को इस प्रकार प्रशिक्षित किया कि उनके अन्दर मानवता के समस्त गुण विकसित हो गये।जो मोहम्मद मनोवैज्ञानिक कल्पना व मानसिक बीमारी से अलग थे तथा आगे चलकर वह एक आदर्श नारी बनीं। फ़ातिमा (पवित्र महिला) का विवाह 19 वर्ष की आयु में हज़रत अली के साथ हुआ। वे विवाह उपरान्त 9 वर्षों तक जीवित रहीं। उन्होने चार बच्चों को जन्म दिया जिनमे दो लड़के तथा दो लड़कियां थीं। जिन के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं। पुत्रगण (1) हज़रत इमाम हसन (अ0) (2) हज़रत इमाम हुसैन (अ0)। पुत्रीयां (3) हज़रत ज़ैनब (स0) (4) हज़रत उम्मे कुलसूम (स0)। आपकी पाँचवी सन्तान गर्भावस्था में ही स्वर्गवासी हो गयी थी। वह एक पुत्र थे तथा उनका नाम मुहसिन (अ0) रखा गया था। पिता के निधन के बाद फातिमा केवल 90 दिन जीवित रहीं। हज़रत पैगम्बर के स्वर्गवास के बाद मोहम्मद के करीबी करीबी दोस्तों जो मोहम्मद की सत्ता पर काबिज हो गए थे उन्होंने जो अत्याचार आप पर किए आप उनको सहन न कर सकीं तथा स्वर्गवासी हो गईं। इतिहासकारों ने उल्लेख किया है कि इस्लाम के दूसरे खलीफा उमर और उनके साथियों ने जब आप के घर को आग लगायी गई,

उस समय आप द्वार के पीछे खड़ी हुई थीं। जब किवाड़ों को धक्का देकर शत्रुओं ने घर में प्रवेश किया तो उस समय आप दर व दीवार के मध्य भिच गयीं। जिस कारण आपके सीने की पसलियां टूट गयीं, व आपका वह बेटा भी स्वर्गवासी हो गया जो अभी जन्म भी नहीं ले पाया था। जिनका नाम गर्भावस्था में ही मोहसिन रख दिया गया था।

निधन के समय फातिमा (पवित्र महिला) परिवार बहुत ही भयंकर स्थिति से गुज़र रहा था। चारों ओर शत्रुता व्याप्त थी और वह वही सब लोग थे जो मोहम्मद के बहुत करीबी थे और मोहम्मद के साथ खून खराबे लूट ऐयाशियों में शामिल थे और मोहम्मद के बाद इस्लामिक सत्ता पर काबिज हो गए थे।

मोहम्मद की पुत्री फातिमा (पवित्र महिला) ने स्वंय भी वसीयत की थी कि मुझे रात्री के समय दफ़्न करना तथा कुछ विशेष व्यक्तियों जैसे के खलीफा अबू बकर, खलीफा उमर, खलीफा उस्मान को मेरे जनाज़े में सम्मिलित न करना। अतः हज़रत अली ने वसीयतानुसार आपको चुप चाप रात्री के समय फातिमा (पवित्र महिला) को दफ़्न कर दिया। अतः आपके जनाज़े (अर्थी) में केवल आपके परिवार के सदस्य व हज़रत अली के विश्वसनीय मित्र ही सम्मिलित हो पाये थे। और दफ़्न के बाद कई स्थानो पर आपकी की कब्र के निशान बनाये गये थे। इस लिए विश्वसनीय नहीं कहा जासकता कि आपकी समाधि कहाँ पर है। परन्तु कुछ सुत्रों से ज्ञात

होता है कि आपको जन्नातुल बक़ी नामक क़ब्रिस्तान में दफ़नाया गया था।

हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला) स्त्रीयों को अच्छे धार्मिक निर्देशों की शिक्षा देती व उनको उनके कर्तव्यों के प्रति सजग करती रहती थीं। आप की मुख्यः शिष्या का नाम फ़िज़्ज़ा था जो गृह कार्यों में आप की साहयता भी करती थी। हज़रत फ़ातिमा दूसरों को मानवता और अच्छी शिक्षा देने से कभी नहीं थकती थीं तथा सदैव अपनी शिष्याओं का धैर्य बंधाती रहती थी।

एक दिन की घटना है कि एक स्त्री ने आपकी सेवा में उपस्थित हो कर कहा कि मेरी माता बहुत बूढी है और उसकी नमाज़ सही नहीं है। उसने मुझे आपके पास भेजा है कि मैं आप से इस बारे में प्रश्न करू ताकि उसकी नमाज़ सही हो जाये। आपने उसके प्रश्नो का उत्तर दिया और वह लौट गई। वह फिर आई तथा फिर अपने प्रश्नों का उत्तर लेकर लौट गई। इसी प्रकार उस को दस बार आना पड़ा और आपने दस की दस बार उसके प्रश्नों का उत्तर दिया। वह स्त्री बार बार आने जाने से बहुत लज्जित हुई तथा कहा कि मैं अब आप को अधिक कष्ट नहीं दूँगी।

आप ने कहा कि तुम बार बार आओ व अपने प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करो। मैं अधिक प्रश्न पूछने से क्रोधित नहीं होती हूँ।

हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला) रात्री के एक पूरे चरण में इबादत में लीन रहती थीं। वह खड़े होकर इतनी नमाज़ें पढ़ती थीं कि उनके पैरों पर सूजन आजाती थी। सन् 110 हिजरी में मृत्यु पाने वाला

हसन बसरी नामक एक इतिहासकार उल्लेख करता है कि" पूरे मुस्लिम समाज मे हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला) से बढ़कर कोई ज़ाहिद, (इन्द्रि निग्रेह) संयमी व तपस्वी नही है।" मोहम्मद जोकि एक फर्जी अल्लाह के पैगंबर थे उनकी पुत्री संसार की समस्त स्त्रीयों के लिए एक आदर्श थी जब वह गृह कार्यों को समाप्त कर लेती थीं तो इबादत में लीन हो जाती थीं। इबादत अगर अच्छी नियत से की जाए मानवता के साथ की जाए हृदय में प्रेम रखकर की जाए दूसरे को तकलीफ दिए बगैर की जाए तो वह चाहे जिसकी की जाए वह उस शक्ति की मादत होती है जो इस दुनिया का रचयिता है।

हज़रत इमाम सादिक़ अलैहिस्सलाम अपने पूर्वज इमाम हसन जो कि हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला) के बड़े पुत्र थे उनके इस कथन का उल्लेख करते हैं कि "हमारी माता हज़रत फ़ातिमा ज़हरा बृहस्पतिवार व शुक्रवार के मध्य की रात्री को प्रथम चरण से लेकर अन्तिम चरण तक इबादत करती थीं। तथा जब दुआ के लिए हाथों को उठाती तो समस्त आस्तिक नर नारियों के लिए अल्लाह से दया की प्रार्थना करतीं परन्तु अपने लिए कोई दुआ नही करती थीं। एक बार मैंने कहा कि माता जी आप दूसरों के लिए अल्लाह से दुआ करती हैं अपने लिए दुआ क्यों नही करती? उन्होंने उत्तर दिया कि प्रियः पुत्र सदैव अपने पड़ोसियों को अपने ऊपर वरीयता देनी चाहिये।" हम तो यह मानते हैं कि मोहम्मद के बजाय मोहम्मद की पुत्री ने अगर इस्लाम धर्म स्थापित किया होता तो शायद आज मुसलमान कट्टरपंथी ना होता हृदय में किसी के लिए नफरत ना

रखता हर एक धर्म के मानने वालों के साथ हमदर्दी रखता और धर्म का असली मतलब यही है की एक शक्ति है जिसमें पूरी दुनिया को बनाया है और हर मनुष्य को पैदा किया है कोई भी धर्म किसी भी रूप में उस व्यक्ति को मानता है तो उसे मतभेद धर्म के नाम पर नहीं करना चाहिए।

नौ वर्ष की आयु तक फ़ातिमा (पवित्र महिला) अपने पिता के घर पर रहीं। जब तक उनकी माता हज़रत ख़दीजा जीवित रहीं वह गृह कार्यों में पूर्ण रूप से उनकी साहयता करती थीं। माता के स्वर्गवास के बाद उन्होने अपने पिता की खूब सेवा की। मोहम्मद खुद फातिमा (पवित्र महिला) का बहुत सत्कार करते थे। जब फातिमा (पवित्र महिला) मोहम्मद के पास आती थीं तो मोहम्मद फातिमा (पवित्र महिला) के आदर में खड़े हो जाते थे, तथा आदर पूर्वक अपने पास बैठाते थे। जब तक वह अपने पिता के साथ रही उन्होने मोहम्मद की हर आवश्यकता का ध्यान रखा। उनके पति हज़रत अली ने विवाह उपरान्त का अधिकाँश जीवन उनकी अनुपस्थिति में गृह कार्यों व बच्चों के प्रशिक्षण का उत्तरदायित्व वह स्वंय अपने कांधों पर संभालती व इन कार्यों को उचित रूप से करती थीं। उन्होने कभी भी अपने पति से किसी वस्तु की फ़रमाइश नहीं की। वह घर के सब कार्यों को स्वंय करती थीं। वह अपने हाथों से चक्की चलाकर जौं पीसती तथा रोटियां बनाती थीं। वह पूर्ण रूप से समस्त कार्यों में अपने पति का सहयोग करती थीं। मोहम्मद के देहांत के बाद के बाद जो विपत्तियां उनके पति पर पड़ीं उन्होने उन विपत्तियों में हज़रत अली के सहयोग में मुख्य भूमिका निभाई।

तथा अपने पति की साहयतार्थ अपने प्राणो की आहूति दे दी। जब हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला) का स्वर्गवास हो गया तो हज़रत अली ने कहा कि आज मैने अपने सबसे बड़े समर्थक को खो दिया।

उन्होंने एक आदर्श माता की भूमिका निभाई। उनहोनें अपनी चारों संतानों को इस प्रकार प्रशिक्षित किया कि आगे चलकर वे महान व्यक्तियों के रूप में विश्वविख्यात हुए। उनहोनें अपनी समस्त संतानों को सत्यता, पवित्रता, सदाचारिता, वीरता, अत्याचार विरोध, समाज सुधार, की शिक्षा दी। वे अपने बच्चों के वस्त्र स्वंय धोती थीं व उनको स्वंय भोजन बनाकर खिलाती थीं। वे कभी भी अपने बच्चों के बिना भोजन नहीं करती थीं। तथा सदैव प्रेम पूर्वक व्यवहार करती थीं। उन्होंने अपनी मृत्यु के दिन रोगी होने की अवस्था में भी अपने बच्चों के वस्त्रों को धोया, तथा उनके लिए भोजन बनाकर रखा।

मोहम्मद का रोग उनके जीवन के अन्तिम चरण में अत्याधिक बढ़ गया था। फ़ातिमा हर समय अपने पिता की सेवा में रहती थीं। उनकी शय्या की बराबर में बैठी उनके चेहरे को निहारती रहती व ज्वर के कारण आये पसीने को साफ़ करती रहती थीं। जब हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला) अपने पिता को इस अवस्था में देखती तो रोने लगती थीं यह उनका पिता प्रेम था जो उनसे सहन नहीं हुआ। उन्होंने हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला) को संकेत दिया कि मुझ से अधिक समीप हो जाओ। जब हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला)

निकट हुईं तो मोहम्मद ने उनके कान में कुछ कहा जिसे सुन कर हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला) मुस्कुराने लगीं। इस अवसर पर हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला) का मुस्कुराना आश्चर्य जनक था। अतः आप से प्रश्न किया गया कि आपके पिता ने आप से क्या कहा आपने उत्तर दिया कि मैं इस रहस्य को अपने पिता के जीवन में किसी से नहीं बताऊँगी। मोहम्मद के देहांत के बाद फातिमा (पवित्र महिला) ने इस रहस्य को प्रकट किया और कहा कि मेरे पिता ने मुझ से कहा था कि ऐ फ़ातिमा आप मेरे परिवार में से सबसे पहले अल्लाह के यहाँ मुझ से भेंट करोगी। और मैं इसी कारण हर्षित हुई थी यानी कि वह पिता प्रेम में उन गहराइयों में जा चुकी थी कि वे पिता की मृत्यु के बाद इस दुनिया में ना रहने से खुश थी।

एक दिन मोहम्मद अपने मित्रों के साथ मस्जिद में बैठे हुए थे। उसी समय एक व्यक्ति वहाँ पर आया जिसके कपड़े फ़टे हुए थे तथा उस के चेहरे से दरिद्रता प्रकट थी। वृद्धावस्था के कारण उसके शरीर की शक्ति क्षीण हो चुकी थी। मोहम्मद उस के समीप गये तथा उससे उसके बारे में प्रश्न किया। उसने कहा कि मैं एक दुखिःत भिखारी हूँ। मैं भूखा हूँ मुझे भोजन कराओ, मैं वस्त्रहीन हूँ मुझे पहनने के लिए वस्त्र दो, मैं कंगाल हूँ मेरी आर्थिक साहयता करो। मोहम्मद ने कहा कि इस समय मेरे पास कुछ नहीं है परन्तु मोहम्मद ने उसको हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला) के घर का पता बता दिया। क्योकि उनका घर मस्जिद से मिला हुआ था अतः वह शीघ्रता से उनके द्वार पर आया व साहयता की गुहार की। हज़रत फ़ातिमा (पवित्र

महिला) ने कहा कि इस समय मेरे पास कुछ नहीं है जो मैं तुझे दे सकूँ। परन्तु मेरे पास एक माला है तू इसे बेंच कर अपनी आवश्य़क्ताओं की पूर्ति कर सकता है। यह कहकर अपने गले से माला उतार कर उस को देदी। ग़ह माला मोहम्मद के चचा हमज़ा ने हज़रत फ़ातिमा (पवित्र महिला) को उपहार स्वरूप दी थी जो बहुत ही कीमती थी।

मोहम्मद जैसे मानसिक बीमार और लूटपाट खून खराबा बलात्कार हिंसा करने वाले व्यक्ति के घर में एक ऐसी बेटी थी जो मोहम्मद के चरित्र से बिल्कुल विपरीत थी।

यही कारण है कि मोहम्मद का परिवार जो कि उनकी बेटी फातिमा (पवित्र औरत) से शुरू हुआ और फातमा (पवित्र औरत) की शहादत के बाद उनकी 12 नस्लो तक कट्टरपंथी मोहम्मद के अनुयायियों, फर्जी मुसलमानों द्वारा जुल्मो जाति का दौर जारी रहा और मोहम्मद की लड़की फातिमा (पवित्र औरत) की सभी 11 नस्लों तक के पुरुषों की हत्या कर दी गई जिनको इस्लाम में इमाम का दर्जा दिया गया है। यह सभी हत्यारे मोहम्मद के अनुयाई थे और मोहम्मद के बाद अबू बकर, उमर और उस्मान को इस्लाम का खलीफा मानने वालों में से थे, जो मोहम्मद के जमाने से और आज तक जुल्म, लूटपाट और निर्दोषों की हत्या कर रहे हैं, महिलाओं के साथ बलात्कार कर रहे हैं, यह मोहम्मद के मानने वाले मुसलमान पूरी दुनिया में आतंक का एक घिनौना चेहरा बन चुके हैं।

मोहम्मद और मोहम्मद का परिवार जोकि फातिमा (पवित्र औरत) से शुरू हुआ उन सभी को मुसलमानों ने कत्ल किया और आज भी मोहम्मद अरब में एक आलीशान मजार में अपने दाएं और बाएं इस्लाम के दो वह खलीफा जिन्होंने मोहम्मद को अय्याशियां करवाई थी और मोहम्मद की उम्र से बहुत छोटी अपनी बेटियों को मोहम्मद के हवाले किया था वह दोनों खलीफा मोहम्मद की ही कब्र के पास आलीशान कब्र में सो रहे है और मोहम्मद की बेटी फातिमा (पवित्र औरत) खुले मैदान में एक टूटी हुई कब्र में सो रही है उस कब्र के ऊपर कभी एक मजार बना हुआ था जिसको कट्टरपंथी सुन्नी मुसलमान जो मोहम्मद जैसे मानसिक रोग से पीड़ित व्यक्ति को रसूल मानते हैं / मानती है और उनके साथ चरित्रहीन खलीफाओं को अपना आदर्श मानते हैं। उन्होंने फातिमा (पवित्र औरत) का मकबरा जुड़वा दिया यही फर्क है कट्टरपंथी मानसिकता रखने वाले जाहिल मुसलमानों में और मानवता रखने वाले मुसलमानों में जो मोहम्मद जैसे मानसिक तौर पर बीमार चरित्रहीन व्यक्ति द्वारा काल्पनिक सोच का सहारा लेकर इस्लाम धर्म स्थापित किया गया रात और मुसलमान जो मोहम्मद और उनके अनुयायियों खलीफाओ को अपना आदर्श मानते हुए मोहम्मद ने जो कट्टरता सिखाई है उस पर चल रहे हैं और कुछ मोहम्मद की कट्टरता से दूर होकर इस्लाम को मानते हैं।

लेकिन मोहम्मद द्वारा चरित्रहीन काल्पनिक इस्लाम को वैसे नहीं मानते जैसे कि मोहम्मद द्वारा स्थापित किया गया है।

मोहम्मद की तानाशाही और झूठी काल्पनिक बातें

मोहम्मद के सिलसिले में यूं तो लाखों ऐसी हदीसे हैं जिन्हें लिखा जाए तो हजारों किताबें लिखी जा सकती हैं हम तो सिर्फ कुछ हदीसो पर आधारित और इस्लामिक किताबें तथा कुरान पर आधारित कुछ ही बातें लिख रहे हैं जिससे यह स्पष्ट है कि इस्लाम जो मोहम्मद के द्वारा लाया गया वह एक मानसिक रूप से बीमार काल्पनिक सोच पर आधारित एक घमंडी अय्याश व्यक्ति की उपज है जो अपने मकसद के लिए एक शक्ति जिसने पूरी दुनिया बनाई है उसको अल्लाह का नाम देकर इस्लाम को इस दुनिया में लाया और आज यह इस्लाम के मानने वाले मुसलमान जो मोहम्मद द्वारा 1400 साल पहले गुमराह किए गए थे पूरी दुनिया को अपने चरित्र, अपनी हैवानियत जो कि उनके लिए सुन्नत (यानी कि जो रसूल किया करते थे) है से खतरे में डाले हुए हैं।

यह भी एक उदाहरण है जिससे साबित होता है कि मोहम्मद अपनी खुशी के लिए जो कोई भी काम करते थे और वह अपने काल्पनिक अल्लाह से अपने मनमाने कार्य की अनुमति दिलवा लेते थे।

मोहम्मद पर और मोहम्मद के मानने वाले मुसलमानों पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता। उनके वादे का कोई मतलब नहीं होता वह अपने वादे पर टिके नहीं रह सकते उनकी कसमो के कोई मायने नहीं होते एक दिन मोहम्मद अपने दत्तक पुत्र ज़ैद से मिलने गए और वहां उसकी बीवी जेनब को घर के उत्तेजक वस्त्रों में देखा उसकी सुंदरता देखकर मोहम्मद के मुंह से लार टपकने लगी और वह अपनी इच्छा दबा ना सका तो धीरे से बोला अल्लाह की प्रशंसा करो वही दिलों को मिलाता है उसने जेनब पर गलत दृष्टि डालते हुए कहा और वहां से निकल गया, ज़ैद को पता चला तो उसे लगा कि मोहम्मद के करीब पहुंचने का इससे अच्छा अवसर नहीं मिलेगा इसलिए उसने सोचा जेनब को तलाक देना चाहिए ताकि मोहम्मद उसको रख सके मजे की बात यह है कि कुछ सालों पहले मोहम्मद ने जब दावा किया था कि वह जन्नत की सैर करके आये थे तो उसने कहा था कि वहां उसे एक औरत मिली थी उस औरत के बारे में पूछा तो जन्नत में बताया गया कि वह जेनब है ज़ैद की बीवी बाद में उसने यह भ्रम पैदा करने वाली कहानी ज़ैद को सुनाई तो उसे लगा कि उसकी जोड़ी ऊपर के जहान में बनाई गई है और इसलिए उसने जेनब से शादी कर ली थी।

हालांकि जब मोहम्मद ने सेना को अर्धनग्न देखा तो उसकी नियत खराब हो गई और वह अपने ही सुनाएं जन्नती किससे को भूल गया जाहिर है कि मोहम्मद से बेहतर इस बात को कोई नहीं जान सकता की जन्नत की सैर का किस्सा उसका खुद का गड़ा हुआ था। जब ज़ैद ने मोहम्मद से कहा कि वह जेनब को तलाक दे देगा

तो उसने कहा अपनी बीवी अपने पास रखो अल्लाह से डरो (क़ुरान 33:37) जैसे ही ज़ैद वहां से गया मोहम्मद जान आपके होठों मुलायम जाघों और उन्नती उरोज़ों के ख्याल में डूब गया और फिर मोहम्मद ने अपने काल्पनिक अल्लाह से कहलवाया:-

ऐ रसूल वह वक्त याद करो जब तुम उस शख्स(ज़ैद) से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने अहसान(अलग) किया था और तुमने उस पर अलग अहसान किया था की अपनी बीवी(जेनब) को अपनी जौज़ियत में रहने दें और अल्लाह से डर कर खुद तुम इस बात को अपने दिल में छुपाते थे जिसको अल्लाह जाहिर करने वाला था और तुम लोगों से डरते थे हालांकि अल्लाह इसका अधिक हकदार है कि तुम उस से डरो जब ज़ैद ने हाजत पूरी कर दी मतलब उसे तलाक दे दिया और उसे तुम्हें शादी के लिए दे दिया ताकि भविष्य में मोमिनो को दत्तक पुत्र की बीवियों से शादी करने में दिक्कत ना आए जब दत्तक पुत्र बीवियों को रखने की इच्छा ना हो तो उसे अपनी बीवी क्यों नहीं बनाते ये अल्लाह का हुक्म है और इसे करो।

(क़ुरान 33:37)

मोहम्मद द्वारा अपनी ही बहु से शादी करने के लिए अनुराई भौचक्के रह गए पर सवाल यह था कि अल्लाह से सवाल-जवाब कौन करें अपने अनुयायियों को चुप करने के लिए मोहम्मद ने अपनी आस्तीन से अल्लाह को फिर निकाला और एक आयत को

करवाया की मोहम्मद किसी का पिता नहीं है बल्कि वह पैगंबर है और उस पर रसूल होने की मोहर है (क़ुरान 33:40)

मोहम्मद ने दावा किया कि ज़ैनब के साथ उसकी शादी अल्लाह ने करवाई ताकि वह यह बता सके कि गोद लेना बुरा है और उसे रद्द किया जाना चाहिए जैसे कि आप देख सकते हैं मोहम्मद क्योंकि अपनी वासना पर नियंत्रण नहीं रख पा रहे थे अतः उन्होंने फर्जी अल्लाह से कहलवाया कि बच्चा गोद लेना गलत है।

ऐसा करके मोहम्मद ने बहुत से अनाथ बच्चों को दोबारा जीवन मिलने से वंचित कर दिया कैसे सर्वशक्तिमान अल्लाह जिसने यह दुनिया बनाई है किसी बच्चे को गोद लेने से मना कर सकता है इस विषय से जुड़ा एक रोचक किस्सा है मोहम्मद द्वारा गोद लेने की प्रथा को रद्द किए जाने के बाद अब्बू हुजैफा और उसकी बीवी सहला मोहम्मद के पास आई इन दोनों के पास भी सलीम नाम का एक दत्तक पुत्र था सलीम अबू हुजैफा का मुक्त किया हुआ गुलाम था जिसे उसने दत्तक पुत्र बना लिया था। सहला ने मोहम्मद से कहा ए रसूल सलीम मेरे साथ हमारे घर में रह रहा है वह जवान मर्द हो गया है और यौन संबंधित समस्याओं को समझने लगा है मोहम्मद ने एक होशियारी भरा जवाब देते हुए कहा उसे अपने स्तन से दूध पिलाओ इस जवाब से सहला हक्का-बक्का हो गई और पूछा उसे कैसे दूध पिला सकती हूं वह बड़ा हो गया है मोहम्मद मुस्कुराए और बोले हां मैं जानता हूं कि वह जवान मर्द है वास्तव में सलीम काफी बड़ा था और उसने बद्र की जंग में भाग भी लिया था एक

और हदीस कहती है कि मोहम्मद सलाह की बात सुनकर जोर से हंसा मोहम्मद ने यह बात इसलिए कही की यह सलाह अगर सलीम को अपने स्तन से दूध पिलाती तो दत्तक पुत्र का रिश्ता खत्म हो जाता क्योंकि सलीम एक जवान मर्द था।

मोहम्मद और ज़ैनब की शादी और अल्लाह की आयतों से मोहम्मद की चींटी और छोटी बच्ची जैसी बीवी आयशा को शायद मोहम्मद और ज़ैनब की शादी की बात अच्छी नहीं लगी क्योंकि युवा चंचल और संवेदनशील आयशा को मोहम्मद की मनमानी समझ में आ गई थी इसलिए उसने चढ़कर कहा अथवा अनजाने में कहा मुझे लगता है कि तुम्हारा अल्लाह तुम्हारी तमन्ना और अरमानों को पूरा करने की जल्दबाजी में रहता है, आयशा ने यह कब कहा जब मोहम्मद ने अपने अल्लाह से अपनी रिश्ते की बहू ज़ैनब को बीवी बनाने की अनुमति दिलाई थी।

आयशा के हवाले से एक हदीस यह भी है कि आयशा ने कहा कि रसूल जहश की बेटी जैनब (मोहम्मद के मुंहबोले बेटे जैद की पत्नी) के घर छुपकर शहद पीने के बहाने "मगफिर" नामकी एक बदबूदार शराब पीते थे। मैंने और हफ्शा ने मिलकर इसकी जाँच करने की योजना बनाई। अगर वह शराब पियेंगे तो उसकी गंध सूंघने से पता चल जाएगी। बाद में यही बात सही निकली। पकडे जाने पर रसूल बोले मैं कसम खाता हूँ कि अब ऐसा नहीं करूंगा। और तुम भी वादा करो कि यह बात किसी को नहीं कहोगी।

"Narrated 'Aisha: Allah's Apostle used to drink honey in the house of Zainab, the daughter of Jahsh, and would stay there with her. So Hafsa and I agreed secretly that, if he come to either of us, she would say to him. "It seems you have eaten Maghafir (a kind of bad-smelling resin), for I smell in you the smell of Maghafir," (We did so) and he replied. "No, but I was drinking honey in the house of Zainab, the daughter of Jahsh, and I shall never take it again. I have taken an oath as to that, and you should not tell anybody about it".

Sahih Bukhari Volume 6, Book 60, Number 434:

आयशा की शादी से यह साफ जाहिर होता है की मोहम्मद अय्याशी के दौरान नशे का भी इस्तेमाल करते थे।

मोहम्मद दिमागी बीमार और औरतों के साथ यौन संबंध कर मजा लेने वाले व्यक्ति थे लेकिन कभी भी अपनी खुद की जान खतरे में नहीं डालते थे ऐसे वक्त वे बेहद चालाकी से काम लेते थे।

किसी भी जंग में मोहम्मद अपनी जिंदगी दांव पर नहीं लगाते थे वह अपनी फौज के पीछे खड़े रहते थे और उनके चारों तरफ मजबूत सुरक्षा कवच होता था यह मजबूत सुरक्षा कवच कितना भारी होता था कि उसे खड़े होने या चलने के लिए किसी के सहारे की जरूरत होती थी यह स्थिति में वह अपने आदमियों को जंग में

जीतने पर जन्नत में 72 कुंवारी व खूबसूरत कन्याओं और देव भोजन का लालच देते हुए अपने आगे खड़ी पौधों को चिल्लाकर उत्साहित करते थे और कहते थे कि मौत से डरे बिना बहादुरी से लड़ो।

अपनी फौज के खर्च के लिए अल्लाह का यह रसूल अपने अनुयायियों पर धन देने का दबाव बनाते थे, वह अनुयायियों से कहते थे कि वह उसकी सेवा करें और उसमें विश्वास बनाए रखें वह अपनी चापलूसी को मंज़ूरी देते थे और किसी भी तरह के असंतोष पर उनको गुस्सा आ जाता था।

कुरैश क़ाबिले की ओर से वार्ताकार उरवा हुदैबियाह में मोहम्मद से मिलने गया तो उसने देखा कि मोहम्मद के चेले उस पानी को लेने के लिए दौड़ पड़े थे, जो उनके नहाने के बाद बचा था, यही नहीं मोहम्मद जब थूकते थे तो वह लोग उसे लेने के लिए दौड़ पड़ते और यदि उनका कोई बाल गिर रहा होता तो उस पर भी झपट पड़ते थे।

एक हदीस के हवाले से पेशाब पीने की एक घटना का वर्णन किया गया हदीस में कहा गया है उम्मे-एमन ने मोहम्मद का पेशाब पिया और मोहम्मद ने उस औरत से कहा कि अब दोज़ख की आग में तुम्हारी हड्डियां नहीं जलेगी क्योंकि उस पेशाब में अल्लाह के रसूल का अंश है।

मोहम्मद घमंडी अहंकार पूर्वक व्यवहार करते थे, दूसरों द्वारा उनकी बात काटने पर अथवा चुनौती मिलने पर गुस्से से क्रोधित हो जाते थे।

मोहम्मद में यह सभी लक्षण थे अपने विचारों के अतिरिक्त वह अल्लाह का जादू पैगंबर थे, और पैगंबरों के प्रतीक चिन्ह थे, (क़ुरान 33:40) जिसका मतलब हुआ कि मोहम्मद के बाद अल्लाह किसी और को पैगंबर नहीं बनाएगा, मोहम्मद स्वयं को खैर-उल-खल्क अर्थात ब्राह्मण में सर्वोत्तम मानते थे। स्वयं के 'वरीय' होने (क़ुरान 17:55) और दुनिया के लिए रहमत (क़ुरान 21:107) के रूप में भेजे जाने का दावा किया करते थे। मोहम्मद ने दावा किया कि उन्हें सबसे ऊंची जगह बिठाला गया है। और यह स्थान किसी अन्य को नहीं मिलेगा। अल्लाह के सिहासन के बगल में दाहिनी ओर स्थित है यह सिंहासन है (क़ुरान 17:79) अन्य शब्दों में वह ऐसा व्यक्ति होगा जो अल्लाह को सलाह देगा कि किसे जन्नत और किसे जहन्नुम भेजना है अपने इस ऊंचे स्थान को लेकर मोहम्मद ने कुछ ऐसे अहंकार भरे दावे किए हैं, जो कुरान में दिए गए हैं नीचे लिखी दो आयते मोहम्मद द्वारा केवल खुद को महत्त्व देने और सबसे बड़ा बताने का बयान करती है:-

इसमें भी कोई शक नहीं कि अल्लाह और उसके फरिश्ते पैगंबर मोहम्मद पर दुआएं और रहमत हमेशा भेजते रहते हैं ऐ बईमान वालों तुम भी पैगंबर के गुणगान करो और दुआएं दो (क़ुरान33:56)

(मुसलमानों) तुम लोग अल्लाह और उसके रसूल मोहम्मद पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसको बड़ा समझो और सुबह और शाम उसकी तस्बीह पढ़ो (क़ुरान 48:9)

मोहम्मद अपने आप पर इतना क्रूर था कि उन्होंने अपनी कठपुतली अल्लाह के मुंह से कहलवाई:-

बेशक रसूल तुम्हारे चरित्र बड़े आला दर्जे के हैं (क़ुरान 48:4)

तुम्हें ईमान और हिदायत का रौशन चिराग बनाकर भेजा है (क़ुरान 33:46)

उपरोक्त दोनों आयतों का मिलान अब आप ऊपर लिखे गए रसूल के चरित्र से करें तो अपने आप पता चल जाएगा कि रसूल कितने ईमान वाले थे और हिदायत के कितने बड़े रोशन चिराग थे।

मोहम्मद के पास आसाधना कल्पनाशील शक्ति थी हालांकि उसकी सोच विकृत थी हकीकत की दुनिया में ऐसी विकृत इंसान को जगा देना तो दूर मन में भी नहीं लाना चाहिए।

मोहम्मद ने कहा की उसने ऐसा फरिश्ता देखा जो ब्राह्मण से भी बड़े आकार का था यह बात अपने आप में विरोधाभासी है।

इस फरिश्ते के 70000 सिर प्रत्येक सिर्फ 70000 चेहरे थे।

प्रत्येक चेहरे पर 70000 मुख थे।

प्रत्येक मुख में 70000 जीभ थी।

प्रत्येक जीभ 70000 भाषाएं बोलती थी।

अब आप खुद सोचिए कि अल्लाह को ऐसी कौन सी आवश्यकता पड़ी होगी कि वह इतना विशाल दत्त का ए फरिश्ता लाखों भाषाओं में अपने गुणगान के लिए बनाएगा कोई भी आम व्यक्ति ऐसी बातें करने वालों को दिमाग का बीमार पागल व्यक्ति के रूप में ही समझेगा।

मोहम्मद का जन्नत का सफर

मोहम्मद के मेहराज अर्थात रात में जन्नत का कथित सफर के बहुत से पैसे हैं इब्ने-इसहाक ने मोहम्मद के साथियों खासकर उनकी बीवी आयशा द्वारा बताई गई कहानियों के आधार पर इन रिवाजों के बारे में लिखा है।

इब्ने-इसहाक के मुताबिक मोहम्मद ने कहा जब मैं अपने घर में सोया हुआ था जिब्रील आए और उन्होंने अपने पैरों से ठोकर मार कर मुझे हिलाया मैं उठ कर बैठा तो आसपास कोई नहीं दिखा मैं फिर से सो गया वह फिर आए और पैरों से मुझे ठोकर मार कर जगाया मैं फिर उठ बैठा पर आस-पास कोई नहीं दिखा फिर तीसरी बार जिब्रील आए और मेरी बांह पकड़ कर उठाया मैं उनके साथ खड़ा हो गया वह मुझे मस्जिद के दरवाजे के बाहर ले आए वहां एक अजीब तरह का सफेद रंग का जानवर खड़ा था इस जानवर का आधा शरीर खच्चर और बाकी गधे का था इसके दोनों ओर पंख थे जिसकी सहायता से वह अपने परों को हिलाता था और जितनी दूर तक देख सकता था उतनी दूर आगे पैरों को मारता था मुझे इस पर बिठाया फिर वह फरिश्ता मुझे अपने शरीर रख कर ले चला जब मैं उस जानवर पर बैठने जा रहा था तो विदा करने लगा इस पर जिब्राईल ने उसकी गर्दन पर अपना हाथ फेरा और बोला तुम रसूल के साथ ऐसा व्यवहार कर रहे हो तुम्हें शर्म नहीं आती है अल्लाह की नजर में मोहम्मद से बढ़कर सम्मानित कोई नहीं है

क्या इससे पहले मोहम्मद कभी तुम पर सवार नहीं हुए,नही न? फिर इस तरह का गलत व्यवहार क्यों कर रहे हो उस जानवर ने शर्म से सर झुका दिया और उसका पूरा शरीर पसीने से तरबतर हो गया वह खड़ा हो गया ताकि मैं उस पर चढ़ा सकूं।

इब्ने-इसहाक आगे लिखते हैं रसूल और जिब्राईल अपने रास्ते जा रहे थे सिल्वर जेरूसलम के मंदिर पहुंचे वहां उन्होंने पैगंबर की सोबत में इब्राहिम, और ईसा मसीह मिले रसूल ने वहां इबादत में उन सब का इमाम बनकर प्रार्थना की फिर मोहम्मद के सामने दो कटोरे आए जिसमें एक में शराब और दूसरे में दूध भरा हुआ था रसूल ने शराब का कटोरा छोड़कर दूध का कटोरा ले लिया और पिया जिब्राइल ने कहा मोहम्मद तुम दुनिया के सबसे सत्य व प्राचीन धर्म के प्रकृति के रास्ते पर चल रहे हो तुम्हारे अनुयाई भी इसी मार्ग पर चलेंगे तुम्हारे लिए शराब हराम है इसके बाद रसूल रात में ही मक्का लौट आए वहां क़ुरैशयो को रात की पूरी घटना बताई अधिकांश लोगों ने मोहम्मद की कहानी को बकवास बताया और कहने लगे कि कारवां को मक्के से सीरिया जाने के लिए 1 माह और लौटने में 1 माह लगता है मोहम्मद एक रात में यह यात्रा कैसे कर लेंगे इब्ने साद कहता है यह कहानी सुनने के बाद जो लोग मोहम्मद के साथ आए थे और इस्लाम कुबूल किया था उनमें से बहुत से लोग धर्म द्रोही हो गए और इस्लाम छोड़ दिया।

कहा जाता है जब मोहम्मद ने इस्लाम छोड़ने वालों को जवाब देते हुए कुरान की आयत दी" हमने यह सच सिर्फ तुम लोगों को बताया था कि तुम्हारे ईमान को परख सके"।

एक और हदीस कहती है कि मोहम्मद के दावे को परखने के लिए अबू बकर ने उनसे जरूर सलम का वर्णन करने को कहा और जब उन्होंने वर्णन किया तो अबू बकर बोला सत्य है मैंने परख लिया है कि तुम अल्लाह के रसूल हो यह स्पष्ट नहीं है कि क्या अब बकर ने कभी जेरूसलम देखा था अरबों के लिए जेरूसलम कभी महत्वपूर्ण शहर नहीं रहा हालांकि यह भी आश्चर्यजनक है कि अबू बकर ने जेरूसलम के उस मंदिर का कभी उल्लेख नहीं किया।

इससे एक और संस्करण है जिसे संभवत सबसे अधिक विश्वसनीय माना जाता है क्योंकि कुरान में भी इसका उल्लेख है इस संस्करण में मोहम्मद कहता है:-

जेरूसलम में मैंने जैसे ही अपना काम पूरा किया एक सीढ़ी मेरे ऊपर लाई गई ऐसी सुंदर सीढ़ी मैंने पहले कभी नहीं देखी थी यह वह सीढ़ी थी जो इंसान को तब दिखती है जब मौत उसके पास आती है मेरा साथी मुझे लेकर इस पर चढ़ा हम इस पर ऊपर चढ़ते हुए जन्नत के प्रथम द्वार पर पहुंच गए इस द्वार को पहला द्वार कहा जाता है फरिश्ते जिब्राईल ने इस द्वार के पहरेदार इस्माइल को पुकारा इस्माइल के अधीन 12000 फरिश्ते थे और इन फरिश्तों में से प्रत्येक के पास 12000 फरिश्ते थे।

जब जिब्राईल ने मुझे दरवाजे के भीतर प्रवेश कराया इस्माइल ने मेरे बारे में पूछा कि मैं कौन हूं तब उसे बताया गया कि मैं मोहम्मद हूं तो उसने पूछा कि क्या मुझे कोई मिशन दिया गया है या किसी विशेष उद्देश्य के लिए भेजा गया है जब उसे इत्मीनान हो गया तो उसने मुझे सलाम किया।

जब मैं निकला, जन्नत में प्रवेश कर रहा था तो मौजूद फरिश्तों ने मुस्कुराते हुए मेरा स्वागत किया पर एक फरिश्ता ऐसा था जिसने ना तो मुझे कुछ कहा और ना ही मुझे देख कर उसके चेहरे पर खुशी और मुस्कुराहट आई मैंने जिब्राइल से इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि यह वह आज तक किसी को देख कर नहीं मुस्कुराया है यदि वह आज मुस्कुराया तो तुम पहले इंसान होगे जिसके लिए वह मुस्कुराएगा वह मुस्कुराता नहीं है क्योंकि वह दोज़ख का मालिक है।

मैंने जिब्राइल से कहा वह अल्लाह के वास्ते इस मुकाम पर है जिसके बारे में उन्होंने तुमसे बताया है यह फरिश्ता सभी फरिश्तों का सरदार अमानत दार है और इसके हुक्म की तामील सभी करते हैं और सबको उस पर भरोसा है (क़ुरान 81:21) और मैंने जिब्रील से कहा क्या इस फरिश्ते को हुकुम देकर मुझे दोज़ख नहीं दिखाओगे जवाब मिला जरूर ए मालिक मोहम्मद को दोज़ख दिखाओ इसके बाद इस फरिश्ते ने पर्दा हटा दिया वहां हवा में आग की लपटें उठ रही थी मुझे लगा कि वह लगते सब कुछ राख

कर देंगे मैंने जिब्राइल से कहा कि वह फरिश्ते को इस सब चीजों को अपने स्थान पर वापस भेजने को कहे जो मालिक ने किया।

मैं उन लपटों को वापस लौटने की तुलना उस समय से करता हूं जो धीरे-धीरे लुप्त हो रही हो जिसके बाद लपटे उसी और लौट गई जिधर से आई थी मालिक ने फिर उस पर पर्दा डाल दिया।

जब मैंने जन्नत के पहले दरवाजे के भीतर प्रवेश किया तो एक व्यक्ति को बैठा देखा जिसके सामने से इंसानों की रूहे गुजर रही थी किसी से वह बहुत अच्छे से बात करता है और कहता है तुम अच्छे इंसान की आत्मा हो जबकि दूसरे से गुस्से से कहता है तुम बुरे इंसान थे और तुम्हारी आत्मा भी बुरी है।

मेरे सवाल के जवाब में जिब्राइल ने बताया कि वह व्यक्ति हम सबका पिता आदम था और वहां अपने वंशजों की रूह को अच्छाई और बुराई के तराजू पर तोल रहा था जब वह किसी मोमिन की रूप देखता तो खुश हो जाता था और जब किसी गैर मुस्लिम को देखता था तो घृणा होती थी उसे।

वहां मुझे ऊंट की शक्ल जैसे इंसान दिखे उनके हाथों में आग की तरह जलते हुए पत्थर थे और वह इन पत्थरों को अपने मुंह में डाल रहे थे और यह पत्थर उनके पीछे से निकल रहे थे मुझे बताया गया कि यह वह लोग हैं जिन्होंने अनाथो का धन हड़पा था फिर मुझे फिरऔन (मिस्र के राजा) के परिवार के लोगों के रास्ते पर आदमी दिखे उन आदमियों की तोंदें इतनी भयानक थी ऐसी भारी तोंद वाले इंसान मैंने कभी नहीं देखे थे यह आदमी उनके ऊपर चढ़कर

जा रहे थे। जब इन राज परिवार के लोगों को दोज़ख में डाला गया तो वहां प्यास से पागल ऊंट राज परिवार के लोगों को रोते हुए भाग रहे थे यह लोग वहां से हिलडुल भी नहीं पा रहे थे राज परिवार के लोगों को दोज़ख में इसलिए डाला गया था क्योंकि वह सूतखोर थे।

तब मैंने औरतों को देखा जिन्हें उनके स्तन से लटकाया गया था यह वह औरतें थी जिन्होंने शौहर के होते हुए किसी दूसरे से यौन संबंध बनाकर दोगले बच्चों को जन्म दिया।

इसके बाद मुझे जन्नत के दूसरे दरवाजे पर लाया गया वहां पर दो ममेरे भाई मरियम के बेटे ईसा और जकरिया के बेटे याहिया मिले जब मुझे जन्नत के तीसरे दरवाजे पर लाया गया तो वहां एक आदमी मिला जिसका चेहरा पूर्ण रूप से चांद की तरह था वह मेरा भाई और याकूब का बेटा युसूफ था, जन्नत के चौथे दरवाजे पर इदरीस नाम का व्यक्ति मिला। (क़ुरान 19:58) और मैंने (अल्लाह ने) उन्हें (इदरीस) ऊँची जगह बुलंद कर पहुंचा दिया है जन्नत के पांचवे द्वार पर सफेद व लंबी दाढ़ी वाला एक व्यक्ति मिला मैंने अपनी जिंदगी में इससे खूबसूरत मर्द नहीं देखा था इस व्यक्ति का अपने लोगों के बीच बहुत प्यार सम्मान था यह इमरान का छोटा बेटा हारून था छठी जन्नती दरवाजे पर शानूआ (यमनी कबीले के लोग जो लंबे चौड़े होते हैं) के जैसी टेढ़ी नाक वाला काला सा आदमी मिला यह आदमी मेरा भाई और इमरान का बेटा मूसा था फिर मैं जन्नत के सातवें दरवाजे पर पहुंचा तो मैंने देखा कि अदन

के बाग में स्थित बहुत बड़ा महल है गेट पर सिंहासन पर एक आदमी बैठा है इस महल में प्रति दिन 7000 फरिश्ते भीतर जाते थे और वह कयामत के दिन तक वहां से बाहर नहीं निकलेंगे मैंने इससे पहले अपने जैसा कोई इंसान नहीं देखा था यह मेरे पिता अब्राहीम थे वह मुझे महल के भीतर ले गए महल के भीतर मैंने एक कुंवारी युक्ति को देखा जिसके होंठ सुर्ख लाल थे मैंने उनसे पूछा कि वह कौन है, मैंने उसकी तरफ देखा तो एक परम आनंद का अहसास हुआ उसने बताया कि वह ज़ैद बिन हारिस है रसूल ने ज़ैद को वह अच्छी खबर सुनाई।

मोहम्मद कहते है जब मैं अल्लाह से मिलकर जन्नत से वापस आते समय मैं मूसा के पास से गुजरा, मुसलमानों मूसा तो तुम्हारा बहुत अच्छा दोस्त निकला, मूसा ने मुझसे पूछा कि दिन में कितनी बार इबादत का हुक्म मिला है मैंने बताया कि 50 तो उसने कहा इबादत भारी काम है तुम्हारे लोग कमजोर है ऐसा नहीं कर पाएंगे अल्लाह के पास फिर जाओ और उनसे निवेदन करो कि तुम्हारे समुदाय के लिए नमाज की संख्या कम कर दें मैंने ऐसा ही किया और अल्लाह ने 10 कम कर दिए मैं फिर मूसा के पास से गुजरा तो उसने वही सवाल किया उसने फिर मुझसे कहा अल्लाह के पास जाओ और इबादतओं की संख्या कम करने की गुजारिश करो मैंने फिर ऐसा ही किया जब तक कि अल्लाह ने दिन में नमाज की संख्या 5 तक नहीं कर दी साथ ही अल्लाह के रात के वक्त नमाज न पढ़ने की छूट भी दे दी हालांकि मूसा ने इसके बाद भी मुझसे अल्लाह के पास जाने और नमाज की संख्या कम करने की

दरखास्त लगाने की सलाह दी लेकिन मैंने कहा कि इतनी बार जा चुका हूं कि खुद मुझे शर्मिंदगी महसूस हो रही है अब अल्लाह के पास और कम करने नहीं जाऊंगा अल्लाह ने कहा है कि तुम में से जो दिन में 5 बार नमाज पड़ेगा वह 5 बार नमाज पढ़ने का फल पाएगा।

कुछ मुसलमान कहते हैं कि यह घटना भौतिक जगत में नहीं हुई थी बल्कि यह अध्यात्मिक अनुभव था हालांकि मुसलमानों के इस दावे की धज्जियां तब उड़ जाती है जब मोहम्मद दावा करता है कि उसने जन्नत की सैर पर जाते समय रास्ते में अनु के कारवां को देखा था उनके घडो में से पानी लिया था और कारवां का एक ऊँट बिदक कर भागने लगा था मोहम्मद को यह अनुभव भौतिक संसार में हुआ था इसका सबसे बड़ा सबूत कुरान में मिलता है, कुरान कहता है कि मोहम्मद का जन्नत गमन इसलिए हुआ था कि मोमिनो के ईमान को परखा जा सके जब तक किसी बेतुकी बात पर अंधविश्वास का तमगा चिपका रहता है तो लोग उसमें भरोसा करते हैं लेकिन जब यह अनुभव किसी संसार में होने का दावा किया जाए तो लोगों के मन में शक होने लगता है।

यह स्पष्ट है कि मोहम्मद अपने अनुयायियों को अंधविश्वास की तरफ ले जाते थे। जो बातें हो ही नहीं सकती मोहम्मद काल्पनिक बातों को सच बता कर उस वक्त के जाहिल मुसलमानों में अपना रुतबा बड़ा करते थे। और जहन्नुम और जन्नत की व्याख्या

मोहम्मद ने यह झूठा किस्सा सच बता कर अपने अनुयायियों को अपने अधीन रहने के लिए उत्साहित किया था।

मोहम्मद द्वारा किये गए आसमानी सफर का वैज्ञानिक विश्लेषण, विज्ञान और धर्म दोनो में कोई तालमेल ही नही है। जहां विज्ञान तर्क शोध और परीक्षण पर आधारित होता है वही धर्म आस्था और विश्वाश पर टिका होता है। इसलिए धर्म का विज्ञान से दूर दूर तक कोई संबंध ही नही है।

सच तो ये है कि आज धर्म पूरी तरह विज्ञान की बैसाखी पर चल रहा है दिन रात धर्म अध्यात्म या ईश्वर के चमत्कारों की बकवासे करने वाले धर्मगुरु आज विज्ञान की बदौलत ही धर्म का प्रचार करते हैं और फिर भी धर्म को विज्ञान से श्रेष्ठ बतातें हैं।

दुनिया भर में बन रहे मंदिर, मस्जिद, चर्च के स्ट्रक्टर पर गौर कीजिए पूरा विज्ञान नजर आएगा यहां धर्म का कोई रोल नही आर्किटेक्टर से लेकर ईंट, सीमेंट, छड़, लेंटर, प्लास्टर और रंग सब विज्ञान ही तो है। इन धार्मिक इमारतों में बिजली पानी, एसी, पंखे, लाइट भी विज्ञान की देन ही है लेकिन दोगलापन देखिये की इन्ही धर्मस्थलों से मिले धार्मिक ज्ञान से विज्ञान की धज्जियां उड़ाई जाती हैं।

ये लोग इन धर्मस्थलों की चारदीवारी के अंदर बैठ कर कितना भी धर्म की मिथकीय कहानियों का गुणगान करें किसने रोका है ?

लेकिन दुख तब होता है जब यही लोग धर्म की कपोलकल्पनाओं को साइंटिफिक साबित करने की नाकाम कोशिश करना शुरू कर देते हैं।

ऐसे ही एक मौलाना साहब जो शायद जाकिर नाइक के शिष्य हैं, आजकल यूट्यूब पर इस्लामिक मान्यताओं का साइंटिफिक एक्सप्लेनेशन करने की जद्दोजहद में लगे हुए है।

अभी हाल ही में मैंने उनका एक वीडियो देखा जिसमे वो मिराज की घटना का वैज्ञानिक विश्लेषण कर रहे हैं।

उनके इस वीडियो का पोस्टमार्टम करने से पहले थोड़ा मैं बता दूं कि मिराज की कहानी है क्या ?

बुखारी शरीफ और मुस्लिम शरीफों की हदीसों के अनुसार मुहम्मद ने एक दिन अपने लोगों को इकठ्ठा किया और उन्हें बताया की "कल रात इश्वर ने मुझे बहुत ही सम्मान प्रदान किया मैं सो रहा था की ईश्वर के एक दूत आये उनके साथ उनका एक खच्चर भी था जिसपर बैठकर हम दोनों बैतूल मक़दिस पहुंच गए"

बैतूल मक़दिस वही जगह है जिस पर अधिकार के लिए यहूदी, ईसाई और मुसलमान तीनों दशकों से लड़ रहे हैं। अरब से यहां तक पहुंचने के लिए उस समय ऊंट से जाने में दो महीने लग जाते थे जहां महोम्मद क्षण भर में पहुंच गए थे।

इसके बाद दूत उन्हें लेकर एक तीसरे पवित्र स्थान पहुंचा जहाँ उन्होंने दो बार नमाज अदा की दूत उनके सामने दो प्याले लेकर

आया एक दूध से भरा था और दूसरा शराब से लबरेज, महोम्मद ने दूध वाला प्याला स्वीकार किया तो दूत ने कहा की आपने दूध वाला प्याला स्वीकार कर धर्माचार का परिचय दिया है।

इसके बाद आसमान का सफ़र आरम्भ हुआ जब दोनो पहले आसमान पर पहुंचे तो दूत ने वहां तैनात चौकीदार से दरवाजा खोलने को कहा उसने पूछा "तुम्हारे साथ कौन है ? और क्या ये बुलाये गए हैं?" दूत ने कहा "हाँ बुलाये गए हैं "यह सुनकर पहले आसमान के उस चौकीदार ने दरवाजा खोलते हुए कहा "ऐसी हस्ती का आना मुबारक हो" जब दोनो अन्दर दाखिल हुए तो उनकी मुलाकात दुनिया के पहले मनुष्य आदम से हुई।

इसके बाद दुसरे आसमान पर पहुंचे और पहले की तरह यहाँ भी चौकीदार को परिचय देने के बाद अन्दर दाखिल हुए जहाँ दो पुराने जमाने के मस्सेंजरो से परिचय हुआ इनको सलाम करने के बाद इसी तरह तीसरे, चौथे, पांचवे और छठे आसमान पर गए और अंत में सातवे आसमान पर पहुंच गए, जहां उनकी मुलाकात सर्वशक्तिमान अल्लाह से हुई अल्लाह ने उन्हें कई तोहफे भी दिए जैसे रोजा और नमाज।

इस यात्रा में महोम्मद को स्वर्ग और नर्क लाइव दिखाया गया। स्वर्ग में उन्होंने देखा कि कुछ लोग यहां जन्नत का मजा ले रहे हैं और दोजख में उन्होंने देखा कि यहां कुछ लोग अपने कुकर्मों की भयंकर सजा भोग रहे हैं। इसके बाद वे अपने घर वापस लौटे, इस

तरह यह स्वर्ग यात्रा समाप्त होती है। इसी घटना को मिराज कहा जाता है।

सुबह जब इन्होंने अपनी इस स्वर्ग यात्रा का विवरण लोगो को बताया तो उनके अनुयाइओ ने उनकी इस कहानी के एक-एक शब्द को सच मान लिया परन्तु उस समय भी कुछ तर्कशील लोग मौजूद थे जिन्हें ये बात बिल्कुल हजम नही हुई उन्होंने इस बात को ये कह कर ख़ारिज कर दिया "तू तो बस हमारे ही जैसा एक आदमी है। हम तो तुझे झूठे लोगों में से ही पाते हैं" (कुरान -अश-शुअरा, आयत 186)

जब हम इस यात्रा विवरण की कहानी को तर्क की कसौटी पर कसते हैं तो कई प्रश्न खड़े हो जाते हैं जैसा की हदीसों में कहा गया है की सुबह उन्होंने लोगों को ये बात बताई इसके अलावा इस बात का और कोई प्रमाण नहीं है।

हदीसों में तो और भी कई सारी कपोलकल्पित बातें भरी पड़ी हैं जिन्हें सच मानना सत्य का गला घोंटने के बराबर है मिराज की इस घटना में महोम्मद के अलावा किसी ने न तो उस दूत को देखा न उस खच्चर को देखा बस मान गए।

इस विवरण से तो यही पता चलता है की इस घटना से पहले इनके अन्दर इमान नही था तभी तो ईश्वर का दूत उन्हें पवित्र स्थान ले जाकर उनका सीना फाड़ के इमान घुसेड़ देता है अगर उनके अन्दर ईमान था तो फिर दूत को ऐसा करने की क्या आवश्यकता पड़ी ?

और क्या इस बात का कोई आधार है की इमान सीने में होता है ? धर्म या इमान अच्छाई या बुराई तो इन्सान के मस्तिष्क की देन है ये इस बात पर निर्भर करता है की व्यक्ति को बचपन में कैसे संस्कार मिले या उसका विकास किस प्रकार हुआ है?

इस तरह ईमान दिमाग के अन्दर होता है न की सीने में परन्तु क्या सर्वज्ञान संपन्न परमात्मा को इतना भी ज्ञान नहीं था जिसे वह अपने दूत को सिखाते की बेटा इमान सीने में नहीं दिमाग में होता है जाओ और उनका दिमाग खोल के उसको साफ़ करना सीने को नहीं क्योंकि वहां दिल होता है जो दिमाग को खून पहुँचाने का काम करता है।

इसके बाद हम चलते हैं दूध पीने वाली घटना पर जब देवदूत उनको दूध और शराब से भरा गिलास देते हैं तो साहब जी दूध को स्वीकार करते हैं और शराब से इंकार करते हैं इस पर दूत कहता है की शराब को मना कर निश्चय ही आपने धर्माचार का परिचय दिया है।

अब इस घटना पर भी कई प्रश्न खड़े हो जाते है जैसे की जब दूत उनका सीना धोकर ईमान घुसेड देते हैं तब तो आदमी धर्माचार ही करेगा न ?

ये पूरी कहानी इतनी हास्यास्पद है कि इसे तो उसी दौर में नकार दिया गया था लेकिन अफसोस कि बात है कि आज के इस दौर में भी मुसलमान इस तरह की अवैज्ञानिक कहानियों पर यकीन करते हैं।

इस पूरी घटना में सात आसमानों का जिक्र बार बार आता है गौर करने वाली बात है कि एक आसमान से दूसरे आसमान के इस हवाई सफर में हर आसमान का एक दरवाजा है और उस दरवाजे पर एक पहरेदार बैठा है जो आनेवाले के लिए आसमान का दरवाजा खोलता है।

हदीसों की इन बातों से मुझे आश्चर्य नही होता क्योंकि इनमें कल्पनाओ की भरमार है मुझे हैरानी तब होती है जब इन मिथकीय बातों को विज्ञान से जोड़ने की कोशिश की जाती है।

जो लोग ऐसा करते है उन्हें विज्ञान की सतही जानकारी भी नही होती मान लीजिए कि वो खच्चर प्रकाश की गति से दौड़ता था तब भी उसे हमारी गैलेक्सी को पार करने में ही एक लाख साल लग जाते क्योंकि मिल्कीवे के एक छोर से दूसरे छोर तक जाने में ही दो लाख लाइट ईयर की दूरी तय करनी पड़ती और प्रकाश की गति से चलने के बावजूद भी उस खच्चर को हमारे यूनिवर्स के आखिरी छोर तक पहुंचने में 7 अरब साल लग जाते क्योंकि ब्रह्मण्ड के एक छोर से दूसरे छोर की दूरी 13 अरब 70 करोड़ प्रकाश वर्ष है।

तो इसका अर्थ हुआ कि वो खच्चर लाइट की स्पीड से भी यूनिवर्स के आखिरी छोर की यात्रा नही कर सकता।

रही बात वार्म होल की तो उस फरिस्ते से वॉर्म होल बनाने की उम्मीद भी कैसे की जा सकती है। जिसे इतनी भी समझ न हो कि ईमान दिमाग मे होता है। दिल तो केवल शरीर मे ब्लड को पम्प

करने के लिए होता है। और इससे भी हैरानी की बात तो यह है कि जाकिर नाइक जैसे नकली डॉक्टर और उनके कुछ चेले आज कल धर्म की अवैज्ञानिक कहानियों का वैज्ञानिक विश्लेषण भी करने लगे हैं हालांकि इस हरामखोरी में सभी धार्मिक गिरोह माहिर होते हैं कमाल की बात तो यह है कि जिनकी बुनियाद ही झूठ पर टिकी हो वे लोग विज्ञान की बातें करते हैं वाह, दुनिया के तमाम धार्मिक गिरोह और उनके एजेंट मिलकर अपने धार्मिक ज्ञान से एक माचिस की तीली तक जला नही सकते और बातें करते हैं प्रकाश की गति को मात देने की इतना समझ लीजिए कि धार्मिक कहानियों में सिवा बकवासों के ऐसा कुछ भी नही जिसे आप विज्ञान की संज्ञा दे सकें इनका विज्ञान से कुछ भी लेना देना नही है विज्ञान निरंतर खोज की एक प्रक्रिया है जिस दिन वो ईश्वर को खोज लेगा उसे स्वीकार भी कर लेगा।

झूठ और शोषण पर आधारित धर्म ही दिन रात ईश्वर के होने का राग अलापता है लेकिन अफसोस कि कोई भी धर्म आज तक उसके होने का एक भी सबूत नही दे पाया है।

धर्म नही होगा तो धर्म द्वारा पैदा की गई घृणात्मक द्वेषपूर्ण झूठी और घिनौनी मानसिकता भी नही होगी और जब ऐसी अमानवीय सोच ही नही होगी तब राजनैतिक और सामाजिक व्यवस्था मानवता पर आधारित होगी जिसमें नफरत के लिए कोई जगह नही होगी।

मुसलमान मोहम्मद के चरित्र पर बात करने से क्यों डरते हैं ?

मोहम्मद का कार्टून बना तो पूरी दुनिया के मुसलमानों ने अपनी-2 जगहों पर बवाल किया। दुनिया को इतनी बुरी तरह से बदलने वाला व्यक्ति रहस्य बना हुआ हैं। कोई कुछ जानता ही नहीं उसके बारे में। प्रश्न तो ये उठता हैं के इसाई ईशा मसीह के नाटक मंच पर दोहराते हैं ताकि उनके अच्छे गुण अन्य लोंग जान सके और ले सके। हिंदू राम लीला रचाते हैं ताकि राम के अच्छे कृत्यों को दिमाग में रख सके। अच्छाई की बुराई पर जीत। पर मोहम्मद के नाम पर ऐसा क्या की उनका कोई चित्र नहीं हो सकता। मुस्लिम कहते हैं इस्लाम में बुत परस्ती मना हैं इसलिए। बुत परस्ती मना होने से चित्रण का क्या लेना देना ? क्या काबा मंदिर (उनके लिये मस्जिद) की तस्वीर रखना नहीं गलत हैं पर रखते हैं। तस्वीर रखने से उसकी बुत परस्ती थोड़े हो जाती हैं बल्कि अपने आदर्श के कृत्यों की याद बनी रहती हैं। जैसे आर्य समाजी ऋषि दयानंद की तस्वीर रखते हैं। दूसरा तर्क ये दे सकते के इस से उनका अपमान होगा। मान-अपमान तो जीवित लोगो का होता हैं अगर ये भेद नहीं पता उन्हें तो बुत परस्ती भी नहीं पता। इसी लिए वे हजरे अस्वाद को सरक्षित करे हुए हैं और बुत परस्ती के विरोध में होने का ढोंग करते हैं।

वास्तविक बात तो ये हैं के मोहम्मद का कोई चरित्र ही नहीं था जिसका चित्रण किया जाए। क्या दिखाएंगे मुसलमान की कैसे मोहम्मद के दादा अबू मत्लिब काबा, मंदिर का सरक्षण करते थे। तीर्थ यात्रियों का प्रबंध करते थे। किस प्रकार मोहम्मद को बचपन में मिर्गी के दौरे पड़ते थे। कैसे उन्होंने अपने से 20 वर्ष आयु में बड़ी और अरब की अमीर बुडिया से शादी की। उस अमीर बुढ़िया के मरते ही किस प्रकार 51 वर्षीया मोहम्मद ने 6 वर्ष की बच्ची से शादी (माफ़ी चाहूँगा इस गंदे कृत्य को मुस्लिम शादी कहते हैं) की। किस प्रकार 9 वर्ष की होने पर उस बच्ची से सम्भोग किया। अपनी मू-बोले बेटे की बीवी से शादी की और कैसे भिन्न-भिन्न 31 से ऊपर औरते रखी। कैसे मोहम्मद ने उम् किर्फा की वृद्ध नेत्रानी बनू फस्रह के हाथ पावो को 2 उटो से बंधवा के फड़वा दिया। ऊट की चोरी करने वाले 7 लोगो के हाथ पाँव कटवा दीये। वो ऊट जो खुद मोहम्मद ने चुराए थे।

बनू कुइनैका, बनू नादिर, बनू कुरैज़ा के लोगो पर कितने अमानुषी अत्याचार किये। दुनिया का सबसे पहला इस्लामी आतंकवादी मोहम्मद ही तो था जो ये सब देखने पर सब समझ जाएगा। जो मोहम्मद को बचपन से जानता था उसका चाचा जिसने ना जाने कितनी बार उसकी जान बचाई पर मरते दम तक कभी कुरैशो का मजहब नहीं छोड़ा और इस्लाम नहीं स्वीकार किया, क्योंकी उसे पता था की उसका भतीजा पागल हैं। खुद आयशा ने हफ्सा के साथ मिल कर मोहम्मद को जेहर दे दिया कहते हैं। मोहम्मद फिर एक बच्ची से शादी की योजना बना रहे थे। फिर लाभ तो आयेशा

के बाप अबू बक्र को मिला पहला खलीफा वही हुआ। जिसने कुरान लिखी उसीने खुद मोहम्मद को मरवा दिया । पूरी दुनिया आज इस्लामीकरण के खतरे के तले डगमगा रही हैं, बेकसूर मारे जा रहे हैं। इन सब का कारण मोहम्मद थे। जो कोई भी ये सब देख लेगा उसे समझने में एक पल नहीं लगेगा।

पर मोहम्मद को तो ऐसा हौवा बना रखा है की उसके बारे में तो बात करनी ही नहीं। वो इसलिए क्यों की खुद मोहम्मद ने उन सबको बुरी तरह क़त्ल करवा दिया जिसने भी उसके पैगम्बर होने का प्रमाण माँगा। खुद मोहम्मद ना जाने कितनी बार अपनी बात से पलटा है। इसका प्रमाण कुरान की विपरीत बाते हैं । इसी लिए मुसलमान मोहम्मद को छुपा के रखते हैं। मोहम्मद ने ज़न्नत में खुद की सिफारिश का पेच भी फसा रखा है। ताकि कोई उसके गलत कामो पर ऊँगली ना उठाए । पर खुद जिनको भी ये बाते पता चलती हैं, उनका मानवीय पक्ष इस्लाम छुडवा देता हैं । पर जो वाकई शैतान हैं, वो सही जगह हैं, क्योंके दुनिया के सारे गलत काम इस्लाम में जायज हैं। अगर वो गैर-मुसलमान के साथ किये जाए तो कोई क्यों लूटने, बलात्कार, हत्या, झूठ बोलने की इजाजत छोड़ेगा अगर वह अपराधी प्रवर्ति का है।

एक बात और है कि मोहम्मद देखने में बदसूरत थे हदीसो की माने तो । जिस व्यक्ति ने उसकी तस्वीर बनाई मोहम्मद ने उसे देश निकाला दे दिया । औरते उस से नफरत करती थी । शायद इसी लिए वो औरतो का बलात्कार करते थे।

अब आइए देखते हैं मौहम्मद पैगम्बर ने अपने जीवन में क्या क्या किया।

1- मक्का पर विजय करते ही मौहम्मद पैगम्बर ने सबसे पहले काबे में घुसकर वहां पर मूर्तियों को तोड़ा।

2- जो व्यक्ति उनकी पकड़ में आया उसे इस्लाम ग्रहण करने के लिए धमकाया।

3- उसके बाद अपने आस पास के राज्यों के इस्लाम ग्रहण करने, युद्ध करने, अथवा जजिया देने, तीनों में से एक को ग्रहण करने को कहा।

यही सारा कार्य तो मुसलमान भारत में आज तक करते आए हैं।

1- मुसलमानों ने हिन्दुओं के हजारों मंदिर इसी कारण तोड़े हैं।

2- इसीलिए मुसलमान गैर-मुसलमान को मुसलमान बनने के लिए विवश करते हैं।

एक गैर-मुसलमान को जो प्रश्न मुसलमानों से पूछने चाहिए सारे गैर-मुसलानों को इस प्रयास में युद्ध स्तर पर लग जाना चाहिए। एक गैर मुसलमान को जो प्रश्न मुसलमानों से पूछने चाहिए :-

1- सउदी अरब में मंदिर या चर्च बनाने की इजाजत क्यों नहीं है।

2- मौहम्मद ने मक्का विजय के बाद, काबा में मूर्तियों को क्यों तोड़ा था।

3- मौहम्मद व उनके बाद के इस्लामी शासकों ने अन्य देशों पर इस्लाम स्वीकार करने जजिया देने या युद्ध का विकल्प रखने के लिए क्यों संदेश भेजा था।

4- कश्मीर से सारे कश्मीरी पंडितों को किसने निकाला है।

5- गर्भ निरोधक क्यों हराम है ।

6- इन दोनों फतवों का क्या अर्थ है ।

(1) क्या ग़ैर-मुस्लिम पर इस्लाम स्वीकार करना अनिवार्य है?

(2) धर्मों की एकता के लिए निमंत्रण का हुक्म

यह एक अटल सत्य है कि ‘‘जैसी मति वैसी गति ‘‘अर्थात व्यक्ति जीवन जैसे विचार और आचार रखता है, उसकी मौत भी वैसी ही होती है। मुसलमान भले मुहम्मद को रसूल और महापुरुष कहते रहें, लेकिन वास्तव में वह एक अत्याचारी, और बलात्कारी व्यक्ति था। वह औरत के लिए हत्या भी करवाता था। मुहम्मद का यही दुर्गुण उसकी दर्दनाक मौत का कारण बन गया। मुहमद कुदरती मौत नहीं मरा, उसकी जहर देकर हत्या की गयी थी। मुसलमान इस बात को छुपाते हैं। और टाल जाते हैं। लेकिन इसके पुख्ता सबूत मौजूद है।

1 -मुहमद की हत्या के निमित्त

हमने पिचले लेख में बताया था कि सन 628 में मुहम्मद ने अपने साथियों के सात बनू कुरेजा के कबीले पर धन के लिए हमला

किया था। इस हमले से उसने कबीले के यहूदी पुरुषों ,बच्चों और काबिले के सरदार "किनाना बिन अल रबी "की हत्या करा दी थी। और उसकी पत्नी साफिया के साथ जबरन शादी कर ली थी। और उसी दिन सफिया ने मुहम्मद के खाने में जहर मिला दिया था। जो मुहम्मद के शरीर में धीमे-धीमे असर करता रहा। और आखिर वह उसी जहर के कारण ऐसी मौत मरा कि मुसलमान दुनिया में यह बात बताने से कतराते हैं।

2 -साफिया ने मुहम्मद को जहर दिया

"अब्दुर रहमान बिन अबूबकर ने कहा कि रसूल ने एक भेड़ का बच्चा जिबह किया, और उसे पकाने के लिए साफिया के पास भिजवा दिया। साफिया ने उसे पकाया। बुखारी -जिल्द 3 किताब 47 हदीस 787

"अनस बिन मालिक ने कहा कि। रसूल की एक यहूदी पत्नी ने भेड़ का बच्चा पकाया था, जिसमे जहर था। रसूल प्लेट से लेकर वह गोश्त खा गए।

बुखारी -जिल्द 3 किताब 47 हदीस 786

3 -जहर से मुहम्मद बीमार रहते थे

"आयशा ने कहा कि रसूल कहते थे कि मैं सीने में दर्द महसूस करता हूँ ,लगता है यह उसी खाने के कारण है, जो मैंने खैबर के हमले के समय खाया था। मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरे गर्दन की धमनी कट गयी हो। बुखारी- जिल्द 5 किताब 59 हदीस 713

4 -मुहम्मद मौत से डरते थे –

“आयशा ने कहा कि उस दिन (मौत के दिन) रसूल के साथ सोने की मेरी बारी थी, रसूल ने कहा मुझे पता नहीं है, कि मैं कहाँ जाऊँगा, कहाँ सोऊंगा और मेरे साथ कौन होगा। मैंने कहा यद्यपि मेरी बारी है, फिर भी आप किसी के साथ सो सकते है। मुझे पता नहीं था कि रसूल अगली दुनिया की बात कर रहे थे। बुखारी -जिल्द 7 किताब 62 हदीस 144

5 -मुहम्मद की नफरत भरी इच्छा

“इब्ने अब्बास ने कहा जिस दिन रसूल मरे। वे मुझ से कह रहे थे, सारे अरब से काफिरों, यहूदियों और ईसाइयों को निकाल दो, उनके उपासना स्थलों को गिरा दो। और उनको कबरिस्तान में बदल दो। बुखारी -जिल्द 4 किताब 56 हदीस 660

6 -मुहम्मद की मौत का हाल

मुहम्मद कि मौत 8 जून सन 632 को हुयी थी आयशा उसके साथ थी।

आयशा ने कहा कि रसूल की तबीयत खराब थी ,मैं पानी लेकर आई और रसूल को पानी पिला कर उनके चेहरे पर पानी मला। रसूल आपने हाथ ऊपर करके कुछ कहना चाहते थे, लेकिन उनके हाथ नीचे लटक गए। बुखारी -जिल्द 5 किताब 59 हदीस 730 “आयशा ने कहा कि उस दिन रसूल के साथ सोने की मेरी बारी थी, रसूल मेरे पास थे, लेकिन अल्लाह ने उन्हें उठा लिया। मरते

समय उनका सर मेरे दोनों स्तनों के बीच था। उनकी लार मेरे थूक से मिल कर मेरी गर्दन से बह रही थी। बुखारी -जिल्द 7 किताब 62 हदीस 144 -145

“रसूल की लाश को अली बिन अबू तालिब और अल अब्बास ने पकड़ कर जमीन पर रख दिया। बुखारी -जिल्द 1 किताब 11 हदीस 634 इस्लाम और जिहाद एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते। यदि इस्लाम शरीर है, तो जिहाद इसकी आत्मा है, और जिस दिन इस्लाम से जिहाद निकल जायेगा उसी दिन इस्लाम मर जायेगा इसीलिए इस्लाम को जीवित रखने के लिए मुसलमान किसी न किसी बहाने और किसी न किसी देश में जिहाद करते रहते हैं। इनका एकमात्र उद्देश्य विश्व के सभी धर्मों, संस्कृतियों को नष्ट करके इस्लामी हुकूमत कायम करना है। अभी तक तो मुसलमान आतंकवाद का सहारा लेकर जिहाद करते आये है, लेकिन बीते साल के अगस्त महीने में जिहाद का एक नया और अविश्वसनीय स्वरूप प्रकट हुआ है, जो कुरान से प्रेरित होकर बनाया गया है।

लोगों ने इसे “सेक्स जिहाद” (Sex Jihad) का नाम दिया है। क्योंकि जिहादियों की मदद करना भी जिहाद माना जाता है, इसलिए सीरिया में चल रहे युद्ध (जिहाद) में जिहादियों की वासना शांत करने के लिए औरतों की जरुरत थी। Indiatv में छपी इस खबर के मुताबिक जिसके लिए अगस्त में बाकायदा एक फ़तवा जारी किया गया था, और उसे पढ़कर ट्यूनीसिया की औरतें सीरिया पहुँच गयी थी, और जिहादियों के साथ सम्भोग करने के

लिए तैयार हो गयीं और मुल्लों ने कुरान का हवाला देकर इस निंदनीय कुकर्म को जायज भी ठहरा दिया है।

अल्लाह चाहता है कि मुसलमान जिहाद के लिए अपने बाप ,भाई और पत्नियों को भी छोड़ दें ,तभी अल्लाह खुश होगा, जैसा की कुरान में कहा है।

"अल्लाह तो उन्हीं लोगों को अधिक पसंद करता है, जो अल्लाह की ख़ुशी के लिए पंक्ति बना कर जिहाद करते हैं"(क़ुरान 61 :4)

"हे नबी कहदो ,तुम्हें अपने बाप ,भाई , पत्नियाँ और जो माल तुमने कमाया है ,जिन से तुम जितना प्रेम करते हो और उनके छूट जाने का डर लगा रहता है, लेकिन उसकी तुलना में अल्लाह के रसूल को जिहाद अधिक प्रिय है" (क़ुरान 9 :24)

खुद को रसूल के हिबा करने के पीछे यह ऐतिहासिक घटना है, हिजरी सन 5 के शव्वाल महीने में मुहम्मद साहब को जब यह पता चला कि मदीना के सभी कबीले के लोग उनके विरुद्ध युद्ध की तैयारी कर रहे हैं और उन्होंने खुद के बचाव के लिये खन्दक भी खोद रखी है, तब मुहम्मद साहब ने खुद आगे बढ़ कर उन पर हमला करने के कूच का हुक्म दे दिया। इसके लिए 1500 तलवारें 300 कवच , 2000 भाले 1500 ढालें जमा कर लीं थी। इस जिहादी लश्कर में जिहादियों की औरतें भी थी। जिहादी तो युद्ध में नयी औरतों के लालच में गए थे और अपनी औरतें रसूल को हिबा कर गए थे और रसूल ने उन औरतों के साथ सम्भोग को जायज बना दिया, तभी कुरान की यह आयत नाजिल हुई थी, जिसके

अनुसार खुद को जिहाद के लिए अर्पित करने वाली औरतों से सम्भोग करना जायज है।

अंगरेजी अखबार डेली न्यूज (DailyNews) दिनांक 20 सितम्बर 2013 में प्रकाशित खबर के अनुसार सीरिया में होने वाले युद्ध (जिहाद) में जिहादियों लिए ऐसी औरतों की जरुरत थी जो जिहादियों के साथ सम्भोग करके उनकी वासना शांत कर सकें ताकि वह बिना थके जिहाद करते रहे, इसके लिए अगस्त के अंत में एक सुन्नी मुफ़्ती ने फतवा भी जारी कर दिया था, जो फारस न्यूज (FarsNews) ने छापा था। इस फतवे की खबर पढ़ते ही " ट्यूनीसिया (Tunisia) की हजारों विवाहित और कुंवारी औरतें सीरिया रवाना हो गईं और जिहाद के नाम पर जिहादियों के साथ सम्भोग करने के लिए राजी हो गयीं।

ट्यूनिसिया के आतंरिक मामले के मंत्री (Interior Minister) लत्फी बिन जद्दू ने ट्यूनिसिया की National Constituent Assembly में बड़े गर्व से बताया कि जो औरतें सीरिया गयी है ,उनमे अक्सर ऐसी औरतें हैं जो एक दिन में 20 -30 और यहां तक की 100 जिहादियों के साथ सम्भोग कर सकती हैं और जो औरतें गर्भवती हो जाती हैं , उन्हें वापिस भेज दिया जाता है , जिस मुफ़्ती ने इस प्रकार के जिहाद का फतावा दिया था ,उसने इस का नाम "जिहाद अल निकाह का नाम दिया है। सुन्नी उलमा के अनुसार यह एक ऐसा पवित्र और वैध काम है जिसमे एक औरत कई कई जिहादियों के साथ सम्भोग करके उनकी वासना शांत कराती है।

लत्फी बिन जददू ने यह भी बताया कि मार्च से लेकर अब तक छह हजार औरतें सीरिया जा चुकी हैं,और कुछ की आयु तो केवल 14 साल ही है।

सेक्स करने के लिए औरतों की जरुरत थी, इस लिए एक सुन्नी मुफ़्ती शेख मुहम्मद अल आरिफी ने इसी साल अगस्त में एक फतवा जारी कर दिया था। इस फतवा में कहा है कि, "सीरिया के जिहादियों की कामेच्छा पूरी करने के लिए और शत्रु को मारने उनके निश्चय में मजबूती प्रदान करने के लिए "सम्भोग विवाह" जरूरी है। फतवा में कहा है, जो भी औरत इस प्रकार के सेक्स से जिहादियों की मदद करेगी उसे जन्नत का वादा किया जाता है।

यह फतवा कुरान की इस आयत के आधार पर जारी किया गया है,

"जिन लोगों ने अपने मन और शरीर से जिहाद किया तो ऐसे लोगों का दर्जा सबसे ऊंचा माना जाएगा" (क़ुरान 9 :29)

मुसलमान जानते हैं कि भारत में अभी प्रजातंत्र है, और इसमे जनसंख्या का महत्व होता है। इसलिए वह लगातार बच्चे पैदा करने में लगे रहते हैं और लगातार बच्चे पैदा करने से उनकी औरतों की योनि इतनी ढीली हो जाती है, कि उसमे उनका पति अपना सिर घुसा कर अन्दर देख सकता है और अपनी औरतों की योनि को संकोचित (Vaginal Shrink) करवाने के लिए धनवान मुसलमान "हिम्नोप्लास्टी -hymenoplasty" नामक ओपरेशन करवा लेते है।

विश्व के जितने भी प्रमुख धर्म हैं , उनके धार्मिक ग्रंथों , में दिए गए आदेशों के अनुसार ,और उन धर्मों की मान्यताओं में दो ऐसी समानताएं पाई जाती हैं। जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि यह धर्म सच्चे हैं। पहली बात यह है कि यह धर्म अपने जिस भी महापुरुष , अवतार , या नबी को अपना आदर्श मानते हैं, उसके द्वारा किये गए सभी सभी अच्छे कामों का अनुसरण करते हैं। और दूसरी समानता यह है कि इन सभी धर्मों के अनुयायी किसी भी शुभ कार्य का प्रारंभ करते समय ईश्वर का नाम जरुर लेते हैं। या ईश्वर की जयकार करते हैं।

और इन्हीं दो बातों के आधार पर ही कहा जा सकता है कि इस्लाम धर्म नहीं है। बल्कि यदि कोई इस्लाम को सच्चा धर्म कहता , या मानता है। तो उस से बड़ा मूर्ख कोई दूसरा नहीं होगा, क्योंकि मुसलमान चुन चुन कर मुहम्मद सभी दुर्गुणों का अनुसरण करते हैं। इसी तरह मुसलमान हर बुरा काम लेते समय अल्लाह का नाम लेते हैं। यह तो सब जानते हैं कि जानवरों के गलों पर छुरी फिराते समय मुसलमान अल्लाह का नाम लेते है। लोग यह भी जानते हैं कि जिहादी , क़त्ल करते समय, बम विस्फोट करते समय ,या मुसलमान लूट करते या चोरी करते समय भी अल्लाह और रसूल का नाम लेते है। लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि मुसलमान सार्वजनिक रूप से सामूहिक बलात्कार करते समय भी" अल्लाहु अकबर " का नारा लगाते हैं। क्योंकि वह मुहम्मद को अपना आदर्श मानते हैं। चूंकि कुरान की सूरतें (अध्याय) का संकलन घटनाक्रम (Chronological Order) के अनुसार नहीं

किया गया है। इसलिए हदीसों से पता चलता है कि मुहम्मद साहब ने कौनसी आयत किस समय , किस परिस्थिति में कही थी। और यह भी पता चलता है कि मुहम्मद साहब का असली उद्देश्य क्या था।

इस लेख में प्रमाणों के साथ यही सिद्ध किया जा रहा है कि इस्लाम सच्चा धर्म तो छोडिये , धर्म कहने के योग्य भी नहीं है। इसलिए इस लेख को ध्यान से पढ़िए।

1-अल्लाह से प्रेम की शर्त

मुहम्मद साहब की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह जो कुछ भी करते थे वही काम अपने लोगों से करने को कहते थे। और उनका अनुसरण करने को ही अल्लाह से प्रेम का प्रमाण मान लिया जाता था , जैसा कि कुरान में लिखा है।

"यदि तुम अल्लाह से प्रेम करना चाहते हो तो ,मेरा अनुसरण करो। ऐसा करने से अल्लाह भी तुम से प्रेम करेगा , और तुम्हारे सभी गुनाह माफ़ कर देगा"

सूरा -आले इमरान 3:31

वासना पिशाच

मुस्लिम विद्वान् अपने रसूल मुहम्मद को दूसरों के नबियों, अवतारों और महापुरुषों से बड़ा साबित करने में लगे रहते हैं । यहाँ तक सेक्स के मामले में भी मुसम्मद साहब को “सुपर-मेन ऑफ़ सेक्स – Superman of Sex” तक कह देते हैं। लेकिन यूरोप के विद्वान् मुहम्मद साहब की अदम्य और असीमित वासना के कारण उनको "सेक्स डेमोन\Sex Demon" यानी "वासना पिशाच" कहते हैं। यह बात इन हदीसों से प्रमाणित होती है।

"अनस बिन मलिक ने बताया कि रसूल बारी-बारी से अपनी औरतों के साथ लगातार सम्भोग करने में लगे रहते थे। सिर्फ नमाज के लिए घर से निकलते थे। उनको अल्लाह तीस या चालीस मर्दों के बराबर सम्भोग शक्ति प्रदान की थी"

सही बुखारी -जिल्द 7 किताब 62 हदीस 6

यही बात दूसरी हदीस में भी कही गयी है।

"अनस बिन मलिक ने कहा कि रसूल लगातार रात-दिन अपनी औरतों के साथ सम्भोग करते रहते थे। जब कटदा ने अनस से पूछा कि क्या रसूल में इतनी शक्ति है। तो अनस ने कहा कि रसूल में 30 मर्दों के बराबर सम्भोग शक्ति है, और उनकी 9 नहीं 13 औरत थी।

(बुखारी, वॉल्यूम-1, किताब-5, नंबर-268), बुखारी की इस हदीस की व्याख्या करते हुए सुन्नी विद्वान् "इमाम इब्ने हंजर सकलानी" ने अपनी किताब “फतह अल बारी” - में बताया है कि जब रसूल जिन्दा थे तो रसूल में 40 जन्नती व्यक्तियों के बराबर सम्भोग शक्ति थी। और जन्नत के एक व्यक्ति की सम्भोग शक्ति दुनिया के एक हजार व्यक्तिओं के बराबर होती है , अर्थात रसूल में 40 हजार मर्दों के बराबर सम्भोग करने की शक्ति थी , इसी लिए वह हमेशा सम्भोग करने की इच्छा रखते थे। इस बात की पुष्टि इस्लाम के प्रचारक "शेख मुहम्मद मिसरी" ने भी की है।

यही कारण था कि मुहम्मद साहब के साथी भी मुहम्मद साहब की नक़ल करके रात दिन औरतों के साथ सम्भोग में लगे रहते थे। और स्वाभाविक है कि लगातार सहवास करने से मुहमद साहब और उनके साथियों की औरतें। शिथिल, थुलथुली हो गयी होंगी और उनके स्तन लटक गए होंगे । इस लिए मुहम्मद साहब अपने साथियों को ऐसी औरतों का लालच देते रहते थे, जिनके स्तन कठोर और उभरे हुए हों, कुरान में यही लालच दिया गया है।

3-कठोर स्तन वाली स्त्रियाँ

मुहम्मद साहब के दिल में जो बात होती थी, वह कुरान में जरुर शामिल कर देते थे। ताकि वह बात अल्लाह का वचन समझा जाये। मुहम्मद साहब शिथिल स्तनोंवाली अपनी औरतों से ऊब गए होंगे, और उनको कठोर स्तन वाली औरतों की तलाश थी।

इसलिए कुरान में यह आयत जोड़ दी। ताकि जिहादी लालच में आ जाएँ, कुरान में कहा है।

"बेशक डर रखने वालों के लिए फायदा है ,बाग़ और अंगूर ,और नवयुवतियां समान आयु वाली " (क़ुरान 78:31-33)

इस आयत में अरबी में नव युवतियों के लिए अरबी में "कवायिब" शब्द आया है। लेकिन मुल्लों ने इसका अर्थ "शानदार - splendid" कर दिया है। जबकि इस शब्द का असली अर्थ "गोल स्तन -This means round breasts" होता है। तात्पर्य यह है कि ईमान वालों को अल्लाह ऐसी औरतें देगा जिनके स्तन गोल, उभरे और कठोर होंगे। और जिनकी आयु ईमान वाले मुसलमानों की आयु के बराबर होगी (This means round breasts. They meant by this that the breasts of these girls will be fully rounded and not sagging, because they will be virgins, equal in age. This means that they will only have one age. The explanation of this has already been mentioned in Surat Al-Waqi`ah. 56:35 - Concerning Allah's statement)

"हमने उन स्त्रियों के विशेष उभार को उठान पर उठाया है (क़ुरान 56:35)

हुनैन का बलात्कार कांड

मक्का और तायफ के बीच में एक घाटी थी, जिसमे "हवाजीन" नाम का एक बद्दू कबीला रहता था। जो कुरैश का ही हिस्सा था। इस कबीले की औरतें भी मेहनती होने के कारण स्वस्थ थी। और उन औरतों के स्तन उभरे हुए थे। मुहम्मद ने उन पर हमला करने के लिए बहाना निकाला कि यह लोग काफ़िर है। लेकिन मुहम्मद और उनके अय्याश साथियों की नजर हवाजिन कबीले की औरतों पर थी। इसी लिए रात में ही हमला कर दिया। चूँकि यह कांड हुनैन नाम की सकरी घाटी में हुआ था। जिस से बहार निकलना कठिन था, इसलिए बद्दू लोग हार गए इतिहासकार इब्ने इशाक के अनुसार इस्लाम में हुनैन की जंग का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि इस लड़ाई के बाद ही मुसलमानों को युद्ध में या कहीं से भी पकड़ी गयी औरतों के साथ सम्भोग करने का अधिकार प्राप्त हो गया। हालांकि मुसलमान हुनैन की इस लड़ाई को युद्ध कहते है।

लेकिन इसे युद्ध कहना ठीक नहीं होगा, क्योंकि एक तरफ से मुहम्मद के 12 हजार प्रशिक्षित हथियारधारी लुटेरे थे तो दूसरी तरफ से 6 हजार साधारण बद्दू थे, जिनमे औरतें, बूढ़े, बीमार और बच्चे भी थे। यह घटना इस्लामी महीने शव्वाल की 10 तारीख हिजरी सन 8 में हुई थी ,यानी ईसवी सन 630 की बात है। इब्ने इशाक के अनुसार इस युद्ध में कोई धन नहीं मिला था लेकिन 6000 औरतें पकड़ी गयी थी। मुहम्मद की तरफ से जिन लोगों ने

इस लड़ाई में हिस्सा लिया था ,उनमे 13 साल से लेकर 54 साल के लोग थे। और कई ऐसे थे जो रिश्ते में बाप बेटा ,चाचा भतीजे थे।

पति के सामने बलात्कार

"सईद अल खुदरी ने कहा कि जब रसूल ने हुनैन के औतास कबीले पर हमला करके वहां के लोगों को पराजित करके उनकी औरतों को बंधक बना लिया। तब रसूल ने अपने साथियों को आदेश दिया कि तुम इस युद्ध में पकड़ी गयी औरतों के साथ बलात्कार करो , लेकिन कुछ लोग उन औरतों के पतियों के सामने ही ऐसा करने से झिझक रहे थे। तब रसूल ने उसी समय सूरा -निसा 4:24 की आयत सुना दी, जिसमे कहा है कि तुम पकड़ी गयी औरतों के साथ सम्भोग नहीं कर सकते हो , यदि वह मासिक धर्म से रजस्वला हो। अबू दाऊद किताब 2 हदीस 215 05 - समआयु की औरतें - मुहम्मद साहब बहुत होश्यार थे, उन्होंने कुरान में पहले ही लिखा दिया था कि ईमान वालों को पुरस्कार के रूप में समान आयु वाली और कठोर स्तन वाली औरतें मिलेंगी, और जब हुनैन के हमले में मुसलमानों ने छह हजार औरतें पकड़ लीं, तो छांट छांट कर अपनी आयु की औरतों के साथ बलात्कार किया था। जो इस हदीस से पता चलता है। सईदुल खुदरी ने कहा कि जब रसूल के सैनिकों ने हुनैन में औताफ के लोगों पर हमला करके हरा दिया तो उनकी औरतों को बंधक बना लिया, फिर अपने सैनिकों को आदेश दिया कि वह पकड़ी गयी औरतों में से अपने बराबर की आयु वाली औरतों के साथ सम्भोग कर सकते हैं, सिवाय उन औरतों के जिनकी इद्दत पूरी नहीं हो (यानी मासिक धर्म पूरा नहीं

हो)। रसूल ने उसी समय क़ुरान की 4:24 की यह आयत लोगों को सुनायी थी। "सही मुस्लिम - किताब 8 हदीस 3432 कुरान की इस आयत में जो लिखा था वही मुसलमानों ने किया था, कुरान में लिखा है "हमने प्रेयसी सम आयु वाली पसंद की" (क़ुरान 56:37) मुसलमान हुनैन की लड़ाई का कारण कुछ भी बताते रहें, लेकिन वास्तव में औरतें पकड कर, उनसे सामूहिक बलात्कार की मुहम्मद की एक कुत्सित योजना थी। अब तक आपने पढ़ा है ,मुहम्मद की वासना राक्षसी थी, और लगातार सम्भोग करते रहने से उनकी औरतों के स्तन शिथिल हो गए होंगे, इसलिए मुहम्मद ने कुरान में भी अपने साथियों को कठोर स्तन वाली औरतें देने का लालच दिया था। चूँकि हवाजिन कबिले की औरतें मेहनती थी। और इसीलिए उनके स्तन उभरे और कठोर थे। जो मोहम्मद की पसंद थी। आपने यह भी पढ़ा कि मुहम्मद साहब जो भी कुकर्म करते थे उसे जायज ठहराने के लिए कुरान में कोई न कोई आयत रच देते थे, ताकि आगे भी मुस्लमान ऐसा ही करते रहें।

रसूल का उत्तम आदर्श

मुहम्मद साहब ने अपने इसी चरित्र को खुद ही आदर्श घोषित करते हुए कुरान में भी लिखवा दिया

"निश्चय ही तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल का चरित्र उत्तम आदर्श है" (कुरन 33:21)

आज भी मुसलमान जितने भी बलात्कार करते है, सब मुहम्मद साहब के इसी आदर्श चरित्र का पालन करते हैं । और हर गैर मुस्लिम लड़की या महिला से बलात्कार को अल्लाह की जीत समझते हैं, ऐसी ही एक सत्य घटना दी जा रही है।

7-अल्लाह के नाम से बलात्कार

मुहम्मद साहब को अपना आदर्श मानकर और उनका अनुसरण करते हुए कुरान की मानवविरोधी शिक्षा पर अमल करने से मुसलमान इतने अपराधी, क्रूर और बलात्कारी हो गए कि बलात्कार जैसे जघन्य कुकर्म को भी अल्लाह के प्रति अपना प्रेम समझने लगे हैं। इसी कारण बलात्कार की घटनाएँ बढ़ रही है । इस बात को सिद्ध करने के लिए मिस्र देश की यह एक ही सच्ची घटना काफी है।

मिस्र को इजिप्ट (Egypt) भी कहा जाता है । यह इस्लामी देश है, लेकिन यहाँ कुछ ऐसे ईसाई भी रहते हैं, जो इस्लाम के पूर्व से ही

यहाँ रहते आये हैं। इनको "कोप्टिक ईसाई - Coptic Christian" कहा जाता है । अरबी में इनको "नसारा" कहते हैं। मुसलमान अक्सर इनकी लड़कियों का अपहरण करके बलात्कार करते रहते है।

यह सन 2009 की घटना है। कुछ मुस्लिम युवकों ने एक ईसाई लड़की को बीच रस्ते से पकड़ लिया, और सबके सामने उसकी जींस उतार कर उसके साथ सामूहिक बलात्कार किया। जब लड़की ने भागने का प्रयत्न किया तो दर्शक मुसलमान चिल्लाये पकड़ो, नसारा को पकड़ो। और जब उस लाचार लड़की से बलात्कार हो रहा था , तो वहां कुछ मुल्ले भी मौजूद थे, जो कलमा पढ़ रहे थे "ला इलाहा इल्लालाह, मुहम्मदुर रसूल अल्लाह" यही नहीं लड़की दर्द के कारण जितनी जोर से चिल्लाती थी। मुसलमान उतनी ही जोर से "अल्लाहु अकबर " का नारा लगाते थे। यही नहीं इन दुष्ट मुसलमानों में इस घटना का विडियो भी बना लिया था। जो किसी तरह से 11/4/2013 को लोगों के सामने आ सका है। यह विडियो इस साईट में उपलब्ध है।

Video: Christian Girls Gang Raped to Screams of “Allahu Akbar” in Egypt

इस्लामी आतंकवाद मोहम्मद की देन

हाल के कुछ सालों में हुए इस्लामिक आतंकवादी हमलो की कुछ घटनाएं इस्लामी आतंकवाद, इस्लामिक आतंकवाद या कट्टरपन्थी इस्लामी आतंकवाद हिंसक इस्लामवादियों द्वारा किये गये निर्दोष नागरिकों के विरुद्ध आतंकवादी कार्य हैं जिनकी एक पान्थिक प्रेरणा होती है।

इस्लामी आतंकवाद अपने को मुसलमान कहने वाले चरमपन्थियों द्वारा किये गये आतंक को 'इस्लामी आतंकवाद' कहते हैं। ये तथाकथित अपने भाँति-भाँति के राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये आतंक फैलाते हैं।

इस्लामी आतंकवाद के कारण से सबसे अधिक घटनाएँ और मौतें भारत, इराक, अफ़गानिस्तान, नाइजीरिया, यमन, सोमालिया, सीरिया और माली में हुई हैं। गलोबल टेररिज़्म इण्डेक्स 2016 के अनुसार, 2015 में इस्लामिक आतंकवाद से सभी मौतों के 74% के लिए इस्लामिक चरमपन्थी समूह उत्तरदायी थे: आई०एस०आई०एस०, बोको हराम, तालिबान और अल-कायदा। सन् 2000 के बाद से, ये घटनाएँ वैश्विक स्तर पर हुई हैं, जो न केवल अफ्रीका और एशिया में मुस्लिम-बहुल राज्यों को प्रभावित करती हैं, बल्कि गैर-मुस्लिम बहुमत वाले राज्यों को जैसे संयुक्त

राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, बेल्जियम, स्वीडन, रूस, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, श्रीलंका, इजरायल, चीन, भारत और फिलीपींसको भी प्रभावित करती हैं। इस प्रकार के हमलों ने गैर-मुस्लिमों को निशाना बनाया है।एक फ्रांसीसी गैर-सरकारी संगठन द्वारा किये गये एक अध्ययन में पाया गया कि 80% आतंकवादी पीड़ित मुस्लिम हैं।सबसे अधिक प्रभावित मुस्लिम-बहुल क्षेत्रों में, इन आतंकवादियों को सशस्त्र, स्वतन्त्र प्रतिरोध समूहों राज्य प्रायोजित आतंकवादी संगठन और उनके समर्थकों, और अन्य जगहों पर प्रमुख इस्लामी आँकड़ों से आने वाली निन्दा द्वारा मिले हैं।

इस्लामी चरमपन्थी समूहों द्वारा नागरिकों पर हमलों के लिए दिए गए औचित्य इस्लामी पवित्र पुस्तकों (कुरान और हदीस साहित्य)की चरम व्याख्याओं से आते हैं। इनमें मुसलमानों के खिलाफ अविश्वासियों के कथित अन्याय के लिए सशस्त्र जिहाद द्वारा प्रतिशोध (विशेष रूप से अल-कायदा द्वारा) शामिल हैं यह विश्वास कि कई स्व-घोषित मुसलमानों की हत्या की आवश्यकता है क्योंकि उन्होंने इस्लामी कानून का उल्लंघन किया है और वास्तव में अविश्वासवादी हैं (कफ़र); विशेष रूप से इस्लामिक राज्य (विशेष रूप से आईएसआईएस) के रूप में खलीफ़ा को बहाल करके इस्लाम को बहाल करने और शुद्ध करने की आवश्यकता; शहादत की महिमा और स्वर्गीय पुरस्कार; अन्य सभी पन्थों पर इस्लाम की सर्वोच्चता।

कुछ मुस्लिम विद्वान इस बात पर जोर देते हैं कि इस्लाम में चरमपन्थ 7वीं शताब्दी में अस्तित्व में आए खैरों के दौरान से है, अपनी अनिवार्य राजनीतिक स्थिति से, उन्होंने चरम सिद्धान्त विकसित किए जो उन्हें मुख्यधारा के सुन्नी और शिया मुसलमानों दोनों से अलग करते हैं। खाक्रिजियों को विशेष रूप से तकफ़ीर के लिए एक कट्टरपन्थी दृष्टिकोण अपनाने के लिए जाना जाता था, जिससे उन्होंने घोषणा की कि अन्य मुस्लिम अविश्वासी थे और इसलिए मृत्यु के योग्य थे।

1960-1970 आतंकी इतिहास पढ़े

1960 और 1970 के दशक के दौरान अरब और इस्लामी दुनिया ने मार्क्सवादी और पश्चिमी परिवर्तन और आन्दोलनों की एक शृंखला देखी। ये आन्दोलन क्रान्तिकारी-राष्ट्रवादी थे, न कि इस्लामी, लेकिन उन्हें लगा कि आतंकवाद एक प्रभावी रणनीति है, जिसने आधुनिक युग में अन्तरराष्ट्रीय आतंकवाद के पहले चरण को जन्म दिया। छह-दिवसीय युद्ध के बाद, फिलिस्तीनी नेताओं ने महसूस किया कि अरब दुनिया इजरायल को नियमित युद्ध में नहीं हरा सकती है। फिलिस्तीनी समूहों ने तब क्रान्तिकारी आन्दोलनों का अध्ययन किया, जिससे उन्हें शहरी क्षेत्रों में गुरिल्ला युद्ध से आतंकवाद पर ध्यान केन्द्रित करने में सहायता मिली। इन आन्दोलनों ने पूरी दुनिया में आतंकवादी रणनीति फैलाई।

छह-दिवसीय युद्ध बनाम इजरायल में अरब राष्ट्रवादियों की विफलता के बाद, पान्थिक रूप से प्रेरित समूह, मुस्लिम-भाईचारे के प्रसिद्ध होने के साथ, सऊदी अरब के समर्थन से प्रभाव में वृद्धि हुई और मध्य पूर्व में पन्थनिरपेक्ष राष्ट्रवादियों के साथ टकराव में आ गया।

1980-1990 आतंकी इतिहास पढ़े

1979 की ईरानी क्रांति, अन्तरराष्ट्रीय इस्लामी आतंकवाद की एक प्रमुख घटना थी। सोवियत-अफ़गान युद्ध और 1979 से 1989 तक चलने वाले निम्नलिखित मुजाहिदीन टकराव ने इस्लामी आतंकवादी समूहों को अनुभवी जिहादियों में परिवर्तित किया। 1996 में गठन के बाद से, अफ़गानिस्तान में पाकिस्तान समर्थित तालिबान सैन्य समूह ने आतंकवाद के राज्य प्रायोजकों से जुड़ी कई विशेषताओं का अधिग्रहण किया है।

RAND के ब्रूस हॉफ़मैन ने कहा कि 1980 में 64 में से केवल 2 आतंकवादी संगठनों को पान्थिक के रूप में वर्गीकृत किया गया था, 1995 तक 56 (लगभग आधे) आतंकवादी संगठन पान्थिक रूप से प्रेरित थे, इन समूहों में इस्लाम पन्थ की कट्टरता थी।

1989 से, पान्थिक चरमपन्थी अपने तत्काल क्षेत्र के बाहर लक्ष्य पर हमला करने के लिए अधिक सचेत थे, वर्ल्ड ट्रेड सेण्टर की 1993 की बमबारी और 2001 के 11 सितम्बर के हमले इस प्रवृत्ति को दर्शाते हैं।

2000-2010 आतंकी इतिहास पढ़े

जर्मन अखबार वेल्ट एम सोनटैग के शोध के अनुसार, 11 सितम्बर 2001 और 21 अप्रैल 2019 के बीच 31,221 इस्लामवादी आतंकवादी हमले हुए, जिसमें कम से कम 1,46,811 लोग मारे गए, जिनमें से कई पीड़ित मुस्लिम थे।

इस्लामी आतंकवादियों की प्रेरणा सदैव विवादित रही है। कुछ (जैसे जेम्स एल॰ पायने) ने इसे "यू॰एस॰ / पश्चिम / यहूदी आक्रामकता, उत्पीड़न, और मुस्लिम भूमि और लोगों के शोषण के विरुद्ध संघर्ष के लिये उत्तरदायी ठहराया"।

धार्मिक प्रेरणा

डैनियल बेंजामिन और स्टीवन साइमन ने अपनी पुस्तक ‘‘द एज ऑफ़ सेक्रेड टेरर’’ में लिखा है कि इस्लामी आतंकवादी हमले विशुद्ध रूप से पान्थिक हैं। उन्हें "एक संस्कार के रूप में देखा जाता है। ब्रह्माण्ड को बहाल करने का इरादा एक नैतिक आदेश है जो इस्लाम के दुश्मनों द्वारा दूषित किया गया था।" यह न तो राजनीतिक या रणनीतिक है बल्कि "मोचन का कार्य" का अर्थ "ईश्वर के आधिपत्य को नकारने वाले को अपमानित करना और उनका वध करना है"।

चार्ली हेब्डो के ऊपर गोलीबारी के लिए उत्तरदायी कोउची भाइयों में से एक ने फ्रांसीसी पत्रकार को यह कहते हुए बुलाया, "हम पैगंबर मोहम्मद के रक्षक हैं।"

इण्डोनेशियाई इस्लामी नेता याह्या चोलिल स्टाक्फ के 2017 के टाइम मैगजीन के साक्षात्कार में, शास्त्रीय इस्लामी परम्परा के भीतर मुसलमानों और गैर-मुस्लिमों के बीच सम्बन्ध अलगाव और दुश्मनी में से एक माना जाता है। उनके विचार में चरमपन्थ और आतंकवाद रूढ़िवादी इस्लाम से जुड़े हैं और कट्टरपन्थी इस्लामी आन्दोलन कोई नयी बात नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि पश्चिमी राजनेताओं को यह दिखावा करना बन्द कर देना चाहिए कि चरमपन्थ इस्लाम से नहीं जुड़ा है।

इस दुनिया और इस दुनिया जैसी बहुत सी दुनिया बनाने वाली बस एक ही शक्ति है। और उस शक्ति का कोई धर्म नहीं है। जब से पृथ्वी पर मनुष्य विकसित हुए तब से मनुष्यों ने उस व्यक्ति को पहचाना और किसी न किसी तरह से उस शक्ति की पूजा की उसकी प्रार्थना की और उसके आगे अपना सर झुकाया धर्म चाहे जितने हो मनुष्य एक है। मनुष्य को बनाने वाला एक है। हम मनुष्यों ने उस एक शक्ति को अपने अनुसार मानकर मनुष्य के कल्याण के लिए कार्य किए हैं। यह बात अलग है। कि जिस धर्म को मानने वाले ने अपने धर्म के हिसाब से उस शक्ति को पूजा उसने उस शक्ति को किस रूप में इस दुनिया में जनवाया और पहचानवाया यह उसके धर्म के प्रचारको की देन है। जिसको आप भगवान, ईश्वर, अल्लाह, गॉड या और किसी नाम से अपने धर्म के अनुसार पहचनवाते रहे। अगर आप उसकी छवि खुद खराब कर देंगे तो जाहिर सी बात है कि आगे जाकर उस पर धार्मिक प्रचारक के अनुयाई उसको उसी हिसाब से मानेंगे जैसा कि आपने उस शक्ति को जिसने दुनिया बनाई है, पहचानवाया है। अगर आप किसी सनातन धर्म के मानने वाले से पूछे की गॉड के मायने क्या है, तो वह कहेगा "ईश्वर" अगर आप मुसलमान से गॉड के मायने पूछे तो वह कहेगा "अल्लाह" और ईसाइयों ने अपने अल्लाह भगवान को गॉड के रूप में पहचान दिलाई है। लेकिन सब अपने अपने धर्म के हिसाब से मनुष्य को पैदा करने वाली शक्ति को "शक्ति" मानते हैं। महान मानते हैं। और उसके आगे सर झुकाते हैं।

पूरी दुनिया के मुसलमानों को यह बात समझनी चाहिए की इस्लाम को इस दुनिया में लाने वाले मोहम्मद थे, लेकिन उनका खुद का चरित्र ऐसा था जिसके कारण उस इस्लाम को मानने वाले आज दुनिया के लिए भयानक और आतंक का चेहरा बन गए हैं। हम यह नहीं कहते कि अल्लाह को ना मानो आप अल्लाह को उस शक्ति के रूप में मानो जिसने इस पूरी दुनिया को बनाया है। जिसने सभी धर्म के लोगों को बनाया है। सभी धर्म के लोग आपस में भाई बहन के समान है। कोई मां के समान है तो कोई बाप के, यह गलती तो 1400 साल पहले मोहम्मद ने अपने काल्पनिक विचारों की वजह से और दिमागी बीमारी के कारण की लेकिन आज हम दिमागी बीमार नहीं है और ना ही कल्पनाओं में जी रहे हैं, अंधविश्वास अगर किसी का भला करता है, तो भी ठीक है, लेकिन अगर किसी अंधविश्वासी बात या धर्म से किसी मनुष्य को कोई नुकसान पहुंचा रहा है तो वह अंधविश्वासी बात और धर्म स्वीकार करने योग्य नहीं है।

मेरे ये लेख और मेरी सोच जो तथ्यों पर आधारित है। जिसे पढ़कर हर व्यक्ति को चाहिए के बात को किसी धर्म से न जोड़ते हुए बल्कि इंसानियत के धर्म से मानवता से जोड़ कर देखें।

राहत इंदौरी जी ने क्या खूब कहा है की:-

तूफ़ानों से आंख मिलाओ, सैलाबों पर वार करो।
मल्लाहों का चक्कर छोड़ो, तैर के दरिया पार करो।

References

1. Ibn Warraq. Leaving Islam. Apostates Speak Out. Amherst: Prometheus Books. p.136

2. Maxime Rodinson: Islam et communisme, une ressemblance frappante, in Le Figaro [Paris, daily newspaper], 28 Sep. 2001

3. B.Russell, Theory and Practice of Bolshevism, London, 1921 pp .5, 29, 114

4. A.Koestler, et al, The God That Failed, Hamish Hamilton, London, 1950, p.7

5. Ibid. p16

6. Qur'an Sura 93: Verses 3-8 (Translations of the Qur'an in this book are either by Yusuf Ali or by Shakir.) My work is not about the sacred scriptures of Islam, but it is based directly on them. The passages I cite are taken from the Qur'an and the Hadith. The Qur'an purports to be not the work of any human, but the very words of Allâh himself, from beginning to end. The Ahadith (plural for Hadith) are short, collected anecdotes and sayings about Muhammad regarded by Muslims as essential to the understanding and practice of their religion. It is not necessary for me, in this book, to discuss the innumerable questions raised by the Qur'an and the Hadith, their translation into other languages, or the disputes over subtle nuances in those texts. For purposes of this book, the passages I cite will mostly speak for themselves. I have taken them from widely accepted sources.

7. Muhammad had four daughters and two sons. His male children, Qasim and Abd al Menaf (named after deity Menaf) died in infancy. His daughters reached adulthood and married, but they all died young. The youngest daughter, Fatima, was survived by two sons. She outlived Muhammad by only six months.

8. Studies have shown that the newborns of the mothers with prepartum and postpartum depressive symptoms had elevated cortisol and norepinephrine levels, lower dopamine levels, and greater relative right frontal EEG asymmetry. The infants in the prepartum group also showed greater relative right frontal EEG asymmetry and higher norepinephrine levels. These data suggest that effects on newborn physiology depend more on prepartum than postpartum maternal depression but may also depend on the duration of the depressive symptoms. ncbi.nlm.nih.gov

9. www.health.harvard.edu/newsweek/Depression_during_pregnancy_and_after_0405.htm

10. Sirat Ibn Ishaq, page 72: Ibn Ishaq (pronounced Is-haq, Arabic for Isaac) was a Muslim historian, born in Medina approximately 85 years after Hijra (704. died 768). (Hijra is Muhammad's immigration to Medina and the beginning of the Islamic calendar), He was the first biographer of Muhammad and his war expeditions. His collection of stories about Muhammad was called "Sirat al-Nabi" ("Life of the Prophet"). That book is lost. However, a systematic presentation of Ibn Ishaq's material with a commentary by Ibn Hisham (d. 834) in the form of a recension is available and translated into English. Ibn Hisham, admitted that he has deliberately

omitted some of the stories that were embarrassing to Muslims. Part of those embarrassing stories were salvaged by Tabari, (838–923) one of the most prominent and famous Persian historians and a commentator of the Qur'an.

11. W. Montgomery Watt: Translation of Ibn Ishaq's biography of Muhammad (p. 36)

12. Tabaqat Ibn Sa'd p. 21 . Ibn Sa'd (784-845) was a historian, student of al Waqidi. He classified his story in eight categories, hence the name Tabaqat (categories). The first is on the life of Muhammad (Vol. 1), then his wars (Vol. 2), his companions of Mecca (Vol. 3), his companions of Medina (Vol. 4), his grand children, Hassan and Hussein and other prominent Muslims (Vol. 5), the followers and the companions of Muhammad (Vol. 6), his later important followers (Vol. 7) and some early Muslim women (Vol. 8). The quotes from Tabaqat used in this book are taken from the Persian translation by Dr. Mahmood Mahdavi Damghani. Publisher Entesharat-e Farhang va Andisheh. Tehran, 1382 solar hijra (2003 A.D.).

13. Tabaqat Volume 1, page 107

14. The Life of Muhammad by Sir. William Muir [Smith, Elder, & Co., London, 1861] Volume II Ch. 1. P. XXVIII

15. Katib al Waqidi, p. 22

16. Tabaqat Vol I. P 108,

17. The Life of Muhammad by Sir. William Muir Vol. II Ch.1. P. XXXIII

18. Sirat, Ibn Ishaq page. 195

19. Life of Muhammad, Muir Vol 2 p.195

20. Bukhari Volume 5, Book 58, Number 224:

21. Abu Abdullah Muhammad Bukhari (c. 810-870) was a collector of hadith also known as the sunnah, (collection of sayings and deeds of Muhammad). His book of hadith is considered second to none. He spent sixteen years compiling it, and ended up with 2,602 hadith (9,082 with repetition). His criteria for acceptance into the collection were amongst the most stringent of all the scholars of ahadith and that is why his book is called Sahih (correct, authentic). There are other scholars, such as Abul Husain Muslim and Abu Dawood who worked as Bukhari did and collected other authentic reports. Sahih Bukhari, Sahih Muslim and Sunnan Abu Dawood are recognized by the majority of Muslims, particularly Sunnis, as complementing the Qur'an.

22. Bukhari: Volume 4, Book 56, Number 762:

23. Tabaqat Volume I, page 191

24. Qur'an, 53:19-22

25. Sahih Bukhari Volume 5, Book 58, Number 207

26. Al-Dalaa'il, 2/282

27. Sir William Muir: The Biography of Mahomet, and Rise 0f Islam. Chapter IV page 126

28. http://www.usc.edu/dept/MSA/quran/maududi/mau109.html

29. Qur'an, 4:97: “When angels take the souls of those who die in sin against their souls, they say: 'In what (plight) were ye?' They reply: 'Weak and oppressed were we in the earth.' They say: 'Was not the earth of Allâh spacious enough for you to move yourselves away?' Such men will find their abode in Hell, - What an evil refuge!”
30. Sir William Muir, Life of Muhammad, Vol. 2, chap. 5,. p. 162.

31. A collection of poems in many volumes compiled by Abu al-Faraj Ali of Esfahan. It contains poems from the oldest epoch of Arabic literature down to the 9th cent. It is an important source of information on medieval Islamic society.

32. Sirat Ibn Ishaq, P.197

33. Jalal al-Din al-Suyuti says: “A group of people from Mecca accepted Islam and professed their belief; as a result, the companions in Mecca wrote to them requesting that they emigrate too; for if they don't do so, they shall not be considered as those who are among the believers. In compliance, the group left, but were soon ambushed by the nonbelievers (Quraish) before reaching their destination; they were coerced into disbelief, and they professed it.” [Jalal al-Din al-Suyuti "al-Durr al-Manthoor Fi al- Tafsir al-Ma-athoor," vol.2, p178;]

34. Suyuti writes that in one hadith Allâh's Apostle said, "There is no Hijra (i.e. migration) (from Mecca to Medina) after the Conquest (of Mecca), but Jihad and good intention remain; and if you are called (by the Muslim ruler) for fighting, go forth immediately.”

35. This shows that prior to the conquest of Mecca, emigration from that town was one of the requisites for Muslims. This is additional evidence of the fact that Muslims were coerced by Muhammad to abandon their homes, while their families did everything they could to keep their loved ones from following this man.

36. Jalal al-Din al-Misri al-Suyuti al-Shafi`i al-Ash`ari, also known as Ibn al-Asyuti (849-911) was the mujtahid imam and renewer of the tenth Islamic century. He was a hadith master, jurist, Sufi, philologist, and historian. He authored works in virtually every Islamic science.

37. http://www.youtube.com/watch?v=BJLsdydjSPo

38. Daily Muslims, July 12, 2006

39. Qur'an, 8:69. See also Qur'an, 8:74: "Those who believe, and adopt exile, and fight for the Faith, in the cause of Allâh as well as those who give (them) asylum and aid, - these are (all) in very truth the Believers: for them is the forgiveness of sins and a provision most generous." One who is not familiar with Muhammad's style of writing (actually, of reciting, as he was illiterate) may wonder how the order to loot people can be reconciled with the command to fear Allâh. However, those who read the Qur'an in Arabic notice that the verses rhyme, and Muhammad often added words or phrases that are out of place, such as 'fear Allâh,' 'Allâh is most merciful,' 'He is all knowing, all wise,' etc., just to make his verses rhyme. Otherwise, it is inconceivable to fear the wrath of God and at the same time pillage and murder innocent people. By doing so—by associating God with looting, genocide and rape— Muhammad lowered the moral standards

of his followers and sanctified evil. Thus pillage became holy pillage, killing became holy killing, and iniquity was sanctioned and even glorified. He assured his men that those who fight for their Faith would be rewarded, not only with the spoils of war but with forgiveness for their sins.

40. Malfuzat-i Timuri, or Tuzak-i Timuri, by Amir Tîmûr-i-lang In the History of India as told by its own historians. The Posthumous Papers of the Late Sir H. M. Elliot. John Dowson, ed. 1st ed. 1867. 2nd ed., Calcutta: Susil Gupta, 1956, vol. 2, pp. 8-98.

41. Qur'an, Chapter 47, Verse 38: “Behold, ye are those invited to spend (of your substance) in the Way of Allâh: But among you are some that are niggardly. But any who are niggardly are so at the expense of their own souls. But Allâh is free of all wants, and it is ye that are needy. If ye turn back (from the Path), He will substitute in your stead another people; then they would not be like you!”

42. See also Chapter 63, Verse 10.

43. An affidavit made public in federal court in Virginia in August 19, 2003, contends that the Muslim charities gave $3.7 million to BMI Inc., a private Islamic investment company in New Jersey that may have passed the money to terrorist groups. The money was part of a $10 million endowment from unnamed donors in Jiddah, Saudi Arabia. http://pewforum.org/news/display.php?NewsID=2563, Also on July 27, 2004, the U.S. Justice Department unsealed the indictment of the nation's largest Muslim charity and seven of its top officials on charges of

funneling $12.4 million over six years to individuals and groups associated with the Islamic Resistance Movement, or Hamas, the Palestinian group that the U.S. government considers to be a terrorist organization. http://www.washingtonpost.com/wp-dyn/articles/A18257-2004Jul27.html

44. See also Qur'an, 8:72, "Those who believed and those who suffered exile and fought (and strove and struggled) in the path of Allâh, - they have the hope of the Mercy of Allâh: And Allâh is Oft-forgiving, Most Merciful." and Qur'an Chapter 8, Verse 74: "Those who believe, and adopt exile, and fight for the Faith, in the cause of Allâh as well as those who give (them) asylum and aid, - these are (all) in very truth the Believers: for them is the forgiveness of sins and a provision most generous."

45. http://metimes.com/articles/normal.php?StoryID=20060918-110403-1970r
46. Ibid.
47. http://www.faithfreedom.org/debates/Ghamidip18

48. Tabaqat, Vol. 2, pp. 1-2.

49. Sahih Bukhari Volume 5, Book 59, Number 702:

50. William Muir, Life of Muhammad Volume II, Chapter 2, Page 6.

51. Sahih Bukhari, Vol. 3. Book 46, Number 717

52. Ibid.

53. Sahih Muslim Book 019, Number 4321, 4322 and 4323

54. Sahih Muslim Book 019, Number 4292:

55. http://66.34.76.88/alsalafiyat/juwairiyah.htm

56. Aisha has narrated that Sauda gave up her (turn) day and night to her in order to seek the pleasure of Allâh's Apostle (by that action). [Bukhari Volume 3, Book 47, Number 766]

57. Muhammad ibn Jarir al-Tabari (838–923) was one of the earliest, most prominent and famous Persian historians and exegetes of the Qur'an, most famous for his Tarikh al-Tabari and Tafsir al-Tabari.

58. Persian Tabari, Vol. IV, page 1298.

59. Bukhari Volume 3, Book 34, Number 310:

60. Bukhari, Volume 5, Book59, Number 459. Many other canonical hadiths recount how Muhammad approved intercourse with slave women, but said coitus interruptus was unnecessary because if Allâh willed someone to be born, that soul would be born regardless of coitus interruptus. See the following: Bukhari 3.34.432: “Narrated Abu Saeed Al-Khudri: that while he was sitting with Allâh's Apostle he said, 'O Allâh's Apostle! We get female captives as our share of booty, and we are interested in their prices, what is your opinion about coitus interruptus?' The Prophet said, 'Do you really do that? It is better for you not to do it. No soul that which Allâh has destined to exist, but will surely come into existence.'” Sahih Muslim is another source considered factual and accurate by virtually all Muslims. Here is Sahih Muslim 8.3381: “Allah's Messenger (may peace be upon him) was

asked about 'azl, (coitus interruptus) whereupon he said: The child does not come from all the liquid (semen) and when Allâh intends to create anything nothing can prevent it (from coming into existence)." Muslims also consider Abu Dawood highly accurate and factual. Here is Abu Dawood, 29.29.32.100: "Yahya related to me from Malik from Humayd ibn Qays al-Makki that a man called Dhafif said that Ibn Abbas was asked about coitus interruptus. He called a slave-girl of his and said, 'Tell them.' She was embarrassed. He said, 'It is alright, and I do it myself.' Malik said, 'A man does not practise coitus interruptus with a free woman unless she gives her permission. There is no harm in practicing coitus interruptus with a slave-girl without her permission. Someone who has someone else's slave-girl as a wife does not practice coitus interruptus with her unless her people give him permission.'" See also Bukhari 3.46.718, 5.59.459, 7.62.135, 7.62.136, 7.62.137, 8.77.600, 9.93.506 Sahih Muslim 8.3383, 8.3388, 8.3376, 8.3377, and several more.

61. Qur'an, 4:24: "Also (prohibited are) women already married, except those whom your right hands possess: Thus hath Allâh ordained (Prohibitions) against you." Qur'an, 33:50): "O Prophet! We have made lawful to thee thy wives to whom thou hast paid their dowers; and those whom thy right hand possesses out of the prisoners of war whom Allâh has assigned to thee."

62. Qur'an, 4:3: "If ye fear that ye shall not be able to deal justly with the orphans, marry women of your choice, two or three or four; but if ye fear that ye shall not be able to deal justly (with them), then only one, or

(a captive) that your right hands possess, that will be more suitable, to prevent you from doing injustice.”

63. Sirat Rasul Allâh, p. 515.

64. Sahih Bukhari, 1.8.367, In this hadith the commentator narrates how they [the Muslims] raided the city of Khaibar, during the dawn taking the population off guard. “Yakhrab Khaibar” (Khaibar is ruined) exclaimed Muhammad, as he passed from one stronghold triumphantly to another: "Great is Allâh! Truly when I light upon the coasts of any people, wretched for them is that day! After the conquest of the town, it came time to share the booty. Dihya, one of the warriors, received Safiya as his share. Safiya's father who was the chief of the Bani Nadir had been beheaded by the order of Muhammad three years earlier. After the conquest of Khaibar, her young husband Qinana was tortured and murdered by his order too. Someone informed Muhammad that the seventeen year old Safiya was very beautiful. So Muhammad offered Dihya two girls, the cousins of Safiya, in exchange and got Safiya for himself.

65. Bukhari Volume 4, Book 52, Number 261:

66. Bukhari, 5.59.369

67. The Kitab al Tabaqat al kabir, Vol. 2, p 31

68. From pp. 675-676 of The Life of Muhammad, which is a Guilaume's translation of Sirat Rasul Allâh.

69. Ibid.

70. Ibn Sa'd narrates another version of this story: “Bint Marwan, of Banu Umayyah ibn Zayd, when five nights had remained from the month of Ramadan, in the beginning of the nineteenth month from the hijrah of the apostle of Allâh. `Asma' was the wife of Yazid ibn Zayd ibn Hisn al-Khatmi. She used to revile Islam, offend the prophet and instigate the (people) against him. She composed verses. Umayr Ibn Adi came to her in the night and entered her house. Her children were sleeping around her. There was one whom she was suckling. He searched her with his hand because he was blind, and separated the child from her. He thrust his sword in her chest till it pierced up to her back. Then he offered the morning prayers with the prophet at al-Medina. The apostle of Allâh said to him: 'Have you slain the daughter of Marwan?' He said: 'Yes. Is there something more for me to do?' He [Muhammad] said: 'No. Two goats will not butt together about her.' This was the word that was first heard from the apostle of Allâh. The apostle of Allâh called him `Umayr, 'basir' (the seeing).” -- Ibn Sa`d's in Kitab al-Tabaqat al-Kabir, translated by S. Moinul Haq, Vol. 2, p.24.

71. Qur'an 3:151 “Soon shall We cast terror into the hearts of the Unbelievers, for that they joined companions with Allâh, for which He had sent no authority: their abode will be the Fire: And evil is the home of the wrong-doers!

72. 68 Bukhari, 4.52.220.

73. 69 From the Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, (1976), pp. 100-107 By W. N. Arafat 70 Quran, 2:65, 5:60, 7:166

74. Ibn Ishaq Sirat, p. 363

75. Ibid

76. AR-Raheeq Al-Makhtum by Saifur Rahman al-Mubarakpuri http://islamweb.islam.gov.qa/english/sira/raheek/PAGE-26.HTM

77. http://www.islamicity.com/mosque/quran/maududi/mau59.html

78. Ibn Ishaq irat, p. 438

79. AR-RaheeQ Al-Makhtum (THE SEALED NECTAR)- Memoirs of the Noble Prophet Saifur Rahman al-Mubarakpuri - Jamia Salafia – India http://www.al-sunnah.com/nektar/11.htm

80. Ibid. www.al-sunnah.com/nektar/12.htm

81. Ibid.

82. Ayatollah Khomeini: A speech delivered on the commemoration of the Birth of Muhammad, in 1981.

83. Bukhari, Volume 4, Book 52, Number 280:

84. Sunan Abu-Dawud Book 38, Number 4390. Sunan Abu-Dawud is another collection of hadith regarded to be sahih.

85. Bukhari Volume 4, Book 52, Number 288

86. Bukhari Volume 4, Book 52, Number 176

87. This story is reported by Tabari, Vol 3, Page 1126

88. Ibn Ishaq, Sirat, Battle of Trench

89. Sirah al-Halabiyyah, v3, p61,

90. www.nytimes.com/2005/05/04/books/04grim.html?_
r=1&ex=1115784000&en=7961034fe8ef2
0c0&ei=5070&oref=slogin

91. [Ahmad Ibn Naqib al-Misri, The Reliance of the Traveller, translated by Nuh Ha Mim Keller, Amana publications, 1997, section r8.2, page 745].

92. Sahih al-Bukhari, v.7, p102

93. http://allpsych.com/disorders/personality/narcissism.html

94. International Statistical Classification of Diseases and Related Health Problems, 10th edition, World Health Organization (1992)

95. The language in the criteria above is based on or summarized from: American Psychiatric Association. (1994). Diagnostic and statistical manual of mental disorders, fourth edition (DSM IV). Washington, DC: American Psychiatric Association. Sam Vaknin. (1999). Malignant Self Love - Narcissism Revisited, first edition. Prague and Skopje: Narcissus Publication. ("Malignant Self Love - Narcissism Revisited"

96. http://www.geocities.com/vaksam/faq1.html)

97. Tabaqat V. 1 p. 2

98. http://www.muhammadanreality.com/creationof
muhammadanreality.htm

99. Ibid.

100. Ibid.

101. Tabaqat V. 1, p. 364

102. Ibid.

103. Mark 10:18

104. http://www.muhammadanreality.com/about.htm

105. Sam Vaknin and Lidija Rangelovska, Malignant Self Love – Narcissism Revisited, Narcissus Publications, Czech Republic (January 4, 2007),

106. healthyplace.com/Communities/Personality_

Disorders/Site/Transcripts/narcissism.htm

107. Ambient abuse is the stealth, subtle, underground currents of maltreatment that sometimes go unnoticed even by the victims themselves, until it is too late. Ambient abuse penetrates and permeates everything – but is difficult to pinpoint and identify. It is ambiguous, atmospheric, and diffuse. Hence it has insidious and pernicious effects. It is by far the most dangerous kind of abuse there is. It is the outcome of fear – fear of violence, fear of the unknown, fear of the unpredictable, the capricious, and the arbitrary. It is perpetrated by dropping subtle hints, by disorienting, by constant – and unnecessary – lying, by persistent doubting and demeaning, and by inspiring an air of unmitigated gloom and doom ("gaslighting"). This definition is given by Dr. Sam Vaknin in his article "Ambient Abuse, first published in "Verbal and Emotional Abuse on Suite 101," also published in Malignant Self

Love – Narcissism Revisited, Ibid. and at http://samvak.tripod.com/abuse10.html (date not given), (accessed June 22, 2007).

108. "The Cult of the Narcissist" by Dr. Sam Vaknin, published in Malignant Self Love –Narcissism Revisited, and at http:/

109. /samvak.tripod.com/journal79.html, c. Sam Vaknin, date not given (accessed June 22, 2007).

110. healthyplace.com/Communities/Personality_

Disorders/Site/Transcripts/narcissism.htm

111. Amir Taheri Neo-Islam

http://www.benadorassociates.com/article/19333

112. "For Love of God – Narcissists and Religion", by Dr. Sam Vaknin, at - http://samvak.tripod.com/journal45.html (no date given) (accessed June 22, 2007), first published in "Narcissistic Personality Disorder" Topic Page on Suite 101, also appearing in Malignant Self Love – Narcissism Revisited, Ibid.

113. "For Love of God – Narcissists and Religion", by Dr. Sam Vaknin, Ibid.

114. Jon Mardi Horowitz – Stress Response Syndromes: PTSD, Grief, and Adjustment Disorder" New Jersey:Jason Aronson Inc., Third Edition, 1997, ISBN-10: 0765700255, ISBN-13: 978-0765700254.

115. www.faqfarm.com/Q/Can_you_be_responsible_ for_your_spouse's_narcissism

116. Tabaqat Vol 1 p. 107

117. Ibid.

118. J. D. Levine and Rona H. Weiss. The Dynamics and Treatment of Alcoholism. Jason Aronson, 1994

119. http://www.globalpolitician.com/25109-barack-obama-elections

120. http://www.nmha.org/infoctr/factsheets/43.cfm

121. Persian Tabari v. 3 p.832

122. http://samvak.tripod.com/faq66.html

123. http://www.toddlertime.com/sam/66.htm

124. “I do not ask of you any reward for it but love for my near relatives” Tabaqat vol.1 page.3

125. Qur'an Sura 42: verse 23

126. http://samvak.tripod.com/faq66.html

127. Quoted from “Mixing oil and water” by Bridget Murray, APA Online Monitor On Psychology, Vol. 35, No. 3, March 2004, (online version), Print version: page 52, online version found at http://www.apa.org/monitor/mar04/mixing.html (accessed June 22, 2007www.apa.org/monitor/mar04/mixing.html

128. www.toddlertime.com/sam/66.htm

129. "The Inverted Narcissist" Sam Vaknin, HealthyPlace.com Personality Disorders Community, At :- www.healthyplace.com/ communities/Personality_Disorders/narcissism/faq66.html (date not given) (accessed June 22, 2007)

130. http://samvak.tripod.com/

personalitydisorders22.html

131. Sahih Bukhari, Volume 9, Book 87, Number 140

132. http://samvak.tripod.com/kenintro.html

133. Larson's New Book of Cults 1989, pp. 14-15

134. Dr. Sam Vaknin Narcissism FAQ ŒÌ57

135. "Pathological Narcissism, Psychosis, and Delusions" by Sam Vaknin, at Sam Vaknin Sites, http://samvak.tripod.com/journal91.html (accessed June 22, 2007)

136. Ibid.

137. http://news.bbc.co.uk/2/hi/americas/6682827.stm

138. The Qur'an can be tedious, and that is mainly why few Muslims have read it. However, at the risk of boring my readers, in this chapter I will have to quote several Qur'anic verses as evidence to support my portrait of Muhammad.

139. Qur'an, sura 60, Verse 1

140. http://samvak.tripod.com/journal79.html

141. Ibid.

142. www.suite101.com/article.cfm/6514/95897

143. http://samvak.tripod.com/journal79.html

144. The Cult of Narcissist http://samvak.tripod.com/journal79.html

145. Oh you who believe! Murder those of the disbelievers and let them find harshness in you. (Q.9:123)

146. Ibn Sa'd, Tabaqat Vol 8: p 195

147. Ibid

148. Published by Entesharat-e Elmiyyeh Eslami Tehran 1377 lunar H. Tafseer and translation into Farsi by Mohammad Kazem Mo'refi

149. Sahih Bukhari Vol.7 Book 67, No.424

150. Sahih Bukhari Vol.9 Book 89, No.260

151. Sahih Muslim 8.3424, 3425, 3426, 3427, 3428

152. http://news.bbc.co.uk/2/hi/middle_east/

6681511.stm

153. MEMRI nquiry and Analysis Series - No. 363 L. Azuri http://memri.org/bin/articles.cgi?Page=archives&Area=ia&ID=IA36307ŒÌ_edn1

154. Baraka Umm Ayman was a servant of the Prophet Muhammad as well as his nursemaid.

155. Al-Masri Al-Yawm (Egypt) May 20, 2007.

156. Umm Haram bint Milhan was a cousin of the prophet on his mother's side, and one of the first to embrace Islam and emigrate to Mecca.

157. Al-Masri Al-Yawm (Egypt) May 23, 2007. Dr. Gum'a made similar statements to the Egyptian weekly Al-Liwa Al- Islami, May 26, 2007.

158. Al-Masri Al-Yawm (Egypt) May 22, 2007.

159. Al-Ahram (Egypt) May 29, 2007.

160. Al-Ahram (Egypt), June 3, 2007.

161. Al-Masri Al-Yawm (Egypt) May 30, 2007.

162. Al-Ahram (Egypt) May 31, 2007.

163. Al-Gumhouriyya (Egypt) May 24, 2007.

164. Al-Akhbar (Egypt) May 21, 2007.

165. Tabaqat, Volume 1, page 369

166. Sahih al-Bukhari, Volume 6, Book 60, Number 311)

167. Flexible armor of interlinked rings.

168. Sirat Ibn Ishaq, p.823.

169. Sahih al-Bukhari, Volume 6, Book 60, Number 448:

170. Sahih al-Bukhari Volume 1, Book 1, Number 2

171. Majma'uz Zawaa'id with reference to Tabraani

172. Tabaqat Volume 1 page 184 Persian translation

173. Ibid.

174. Bukhari Volume 1, Book 1, Number 3:

175. Sahih Muslim Book 001, Number 0301:

176. Tabari VI:67

177. Sahih Bukhari Volume 9, Book 87, Number 111

178. Tabaqat Vol. 1. p. 119

179. Tirmidhi Hadith, Number 1524

180. Sira Ibn Ishaq, p. 105

181. Sahih Bukhari Volume 2, Book 22, Number 301

182. Sahih Bukhari Volume 7, Book 71, Number 660:

183. Sahih Muslim Book 007, Number 2654:

184. Sahih Bukhari Volume 6, Book 60, Number 451:

185. Bukhari Volume 6, Book 60, Number 478

186. Sira Ibn Ishaq p. 106

187. Often mischievous form of spirits in Arab mythology, capable of appearing in human and animal forms.

188. Scott Atran, NeuroTheology: Brain, Science, Spirituality, Religious Experience by Chapter 10 http://jeannicod.ccsd.cnrs.fr/docs/00/05/32/82/RTF/ijn_00000110_00.rtf

189. Bukhari:Volumne 4, Book 54, Number 455

190. Qur'an, 72:8; 37:6-10; 63:5.

191. Muhammad Husayn Haykal (1888, 1956): The Life of Muhammad, translated by Isma'il, Razi A. al-Faruqi. ISBN: 0892591374 Chapter 8: From the Violation of the Boycott to al Isra'.

192. www.mental-health-matters.com/articles/article.php?artID=92

193. Dead Man's Mirror by Agatha Christie - in "Hercule Poirot The Complete Short Stories" - Great Britain, HarperCollins Publishers, 1999

194. http://samvak.tripod.com/faq48.html

195. http://samvak.tripod.com/journal71.html

196. Theophanes, 1007, Chronographia, vol. 1, p334

197. www.emedicine.com/NEURO/topic365.htm

198. Sahih Bukhari, Volume, Book 26, Number 652

199. Cushing: Brain 1921-1922 xliv p341

200. Kennedy: Arch Int Med 1911 viii p317.

201. Sirat Rasoul p. 77

202. www.nlm.nih.gov/medlineplus/ency/article

/001399.htm

203. www.epilepsy.dk/Handbook/Mental-complications-uk.asp

204. Ibid.

205. Qur'an, 42:7. The same claim is made in Qur'an, 6:92

206. “Nay, it is the Truth from thy Lord, that thou mayest admonish a people to whom no warner has come before thee: in order that they may receive guidance.”(Qur'an 32:3) and In order that thou mayest admonish a people, whose fathers had received no admonition, and who therefore remain heedless (of the Signs of Allâh). (Qura'an, 36:6)

207. A.S. Tritton, Islam: Belief and Practice 1951, p. 16.

208. Sahih Bukhari Volume 2, Book 22, Number 301.

209. Bukhari, Volume 4, Book 56, Number 763.

210. Sira: Ishaq:182

211. Qur'an: Sura 13, Verse 62

212. Some years later, when Muhammad came to power, he reduced children to orphans by killing their fathers, enslaving their mothers and taking their belongings.

213. The allusion is to Surah 40:46, 'Cast the family of Pharaoh into the worst of all punishments

214. Sahih Bukhari Volume 1, Book 6, Number 301 reports Muhammad saying “I have seen that the majority of the dwellers of Hell-fire were you (women)." They asked, "Why is it so, O Allâh's Apostle ?" He replied, "You curse frequently and are ungrateful to your husbands. I have not seen anyone more deficient in intelligence and religion than you. A cautious sensible man could be led astray by some of you." The women asked, "O Allâh's Apostle! What is deficient in our intelligence and religion?" He said,

"Is not the evidence of two women equal to the witness of one man?" They replied in the affirmative. He said, "This is the deficiency in her intelligence. Isn't it true that a woman can neither pray nor fast during her menses?" The women replied in the affirmative. He said, "This is the deficiency in her religion."

215. Some years later in Medina Muhammad fell in love with Zayd's wife and made his lust known. Zayd felt compelled to divorce his wife so Muhammad could marry her.

216. Bukhari Volume 9, Book 93, Number 608:

217. www.emedicine.com/neuro/topic658.htm

218. Newsweek May 7, 2001, U.S. Edition; Section: SCIENCE AND TECHNOLOGY; Religion And The Brain By Sharon Begley With Anne Underwood

219. http://web.ionsys.com/~remedy/Persinger,

%20Michael.htm

220. Ken Hollings http://www.channel4.com/science/microsites/S/science/body/exorcism.html

221. Michael Persinger in Report on Communion by Ed Conroy http://www.futurepundit.com/archives/000721.html

222. Ken Hollings http://www.channel4.com/science/microsites/S/science/body/exorcism.html

223. Ibid

224. How We Believe, 2000, Michael Shermer p.66

225. www.physorg.com/news77992285.html, published 17:31 EST, September 20, 2006, copyright 2006 by United Press International, accessed June 21, 2007

226. a pre-Islamic monotheistic sect propagated in Arabia to which Khadijah belonged

227. Bukhari Volume 1, Book 1, Number 3

228. http://www.tamu.edu/univrel/aggiedaily/

news/stories/04/070104-3.html

229. National Geographic: “Did Animals Sense Tsunami Was Coming?” http://news.nationalgeographic.com/news/2005/01/0104_050104_tsunami_animals.html

230. Bukhari:Volume4, Book 54, Number 440

231. 229 Platt, Charles. (1980). Dream Makers: The Uncommon People Who Write Science Fiction. Berkley Publishing. ISBN 0-425-04668-0

232. Ibid

233. The others are Divine Invasion and The Transmigration of Timothy Archer.

234. Divine Invasion , A Life of Philip K. Dick by Lawrence Sutin, p.264, published

235. Ibid. p.269

236. www.pbs.org/wgbh/nova/transcripts/

2812mind.html 235 Acts 9:1-9.

237. 2 Corinthians 12:7-9

238. Theresa, Saint of Avila (1930) Interior castle. London: Thomas Baker p. 171.

239. Sackville-West 1943, The Eagle and the Dove : a Study in Contrasts - St Teresa of Avila,, St Therese of Lisieux

240. www.utas.edu.au/docs/humsoc/kierkegaard/

docs/Kierkepilepsy.pdf

241. Epilepsy.com, “Famous People with Epilepsy”, at www.epilepsy.com/epilepsy/famous.html, Topic Editor: Steven C. Schachter, M.D., Last Reviewed 12/15/06, accessed June 21, 2007

242. Dr. Jerome Engel, Seizures and Epilepsy:, F. A. Davis Co., Philadelphia, 1989.

243. www.epilepsy.com/epilepsy/famous.html

244. Muhammad prescribed camel urine for stomachache. He certainly must have drauk it himself. Camel urine is sold in Islamic countries as remedy, even today.

245. The Limbic System And The Soul From: Zygon, the Journal of Religon and Science (in press, March, 2001) by Rhawn Joseph, Ph.D. http://brainmind.com/BrainReligion.html

246. Tabaqat Volume 8, Page 201

247. W. R. Van Furth, I. G. Wolterink-Donselaar and J. M. van Ree. Department of Pharmacology, Rudolf Magnus Institute, University of Utrecht, The Netherlands http://ajpregu.physiology.org/cgi/content/abstract/266/2/R606

248. Tabaqat,. Volume 8, Page 224

249. The History of Al-Tabari: The Last years of the Prophet, translated and annotated by Ismail K. Poonawala [State University of New York Press (SUNY), Albany 1990], Volume IX, p. 147

250. Tabaqat Volume I, page 125

251. Gastaut H: So-called psychomotor and temporal epilepsy: a critical study. Epilepsia 1953; 2: 59-76.

252. Pritchard P: Hyposexuality: a complication of complex partial epilepsy. Trans Am Neurol Assoc 1980; 105: 193-5.

253. Sahih Bukhari Volume 1, Book 6, Number 299.

254. Tabaqat Volume 1, page 368

255. Bukhari Volume 7, Book 63, Number 182:

256. Tabaqat Volume 8, Page 200

257. Ibid.

258. Bukhari, Volume 2, Book 18, Number 154:

259. Bukhari, Volume 1, Book 8, Number 423:

260. http://www.cmha.ca/bins/content_page.asp?cid=3-94-95

261. http://www.scribd.com/doc/2252573/sunnahs-of-ap-s-a-w Available all over the Internet.

262. Sahih Muslim Book 4, Number 2127

263. Bukhari Volume 1, Book 3, Number 57

264. Bukhari Volume 1, Book 4, Number 182

265. Bukhari Volume 1, Book 4, Number 161:

266. http://www.mayoclinic.com/health/schizoid-personality-DS00865/DSECTION=symptomsdisorder/

267. http://samvak.tripod.com/personality

disorders17.html

268. Ibid.

269. http://www.mayoclinic.com/health/schizoid-personality-DS00865/DSECTION=symptomsdisorder/

270. www.emedicinehealth.com/schizophrenia/

article_em.htm

271. The Book of Merits (manaqib) in Sunan Imam at-Tirmidhi. www.naqshbandi.asn.au/description.htm

272. Tabaqat, Volume 1, Page 371

273. John Roach for National Geographic News August 14, 2001 http://news.nationalgeographic.com/news/2001/08/0814_delphioracle.html

274. Ibid.

275. Bukhari Volume 7, Book 72, Number 793

276. Abu ?Isa Muhammad ibn ?Isa ibn Musa ibn ad-Dahhak as-Sulami at-Tirmidhi (824-892) was a collector of hadith. His collection, Sunan al-Tirmidhi, is one of the six canonical hadith compilations used in Sunni Islam. The following hadiths are from his collections.

277. Bukhari Volume 2, Book 21, Number 230

278. www.scielo.br/scielo.php?pid=S0365-05962004000400010&script=sci_arttext&tlng=en

279. http://endocrine.niddk.nih.gov/pubs/acro/acro.htm

280. www.scielo.br/scielo.php?pid=S0365-05962004000400010&script=sci_arttext&tlng=en

281. Muhammad Husayn Haykal (1888, 1956): The Life of Muhammad, http://www.witnesspioneer.org/vil/Books/SM_tsn/ch7s12.html

282. Sahih Muslim Book 007, Number 2700

283. Volume 7, Book 72, Number 806

284. Ahmad and Nasaa`i

285. Tabaqat, Volume 1, Page 380

286. Ibid.

287. Several ahadith say that Muhammad often slept hungry. These are exaggerations to portray Muhammad as a long- suffering prophet. How could he go hungry when he had confiscated the wealth thousands of Jews of Arabia and had hundreds of slaves, is a question that only Muslim forgerers of hadith could answer. When Muhammad migrated to Medina, he was poor. However, he soon accumulated a lot of wealth through pillaging.

288. The ancient process of drawing blood from the body by scarification and the application of a cupping glass, or by the application of a cupping glass without scarification, as for relieving internal congestion. (Random House Unabridged Dictionary, © Random House, Inc. 2006.)

289. Bukhari Volume 7, Book 71, Number 602

290. Bukhari Volume 4, Book 56, Number 753

291. Tabaqat Volume 1 page 361

292. Ibid. page 362

293. Psychology 101, Carole Wade et al., 2005

294. Lalich, Janja and Tobias, Madeleine, Take Back Your Life: Recovering from Cults and Abusive Relationships, Bay Tree Publishing (2006), ISBN10 0972002154, ISBN 13 9780972002158.

295. Published at ICSA (International Cultic Studies Association) website, Janja Lalich, PH.D. & Michael D.

Langone, Ph.D., www.csj.org/infoserv_cult101/checklis.htm, accessed June 21, 2007.

296. Qur'an 9:29 Fight those who believe not in Allâh nor the Last Day, nor hold that forbidden which hath been forbidden by Allâh and His Messenger, nor acknowledge the religion of Truth, (even if they are) of the People of the Book, until they pay the Jizya with willing submission, and feel themselves subdued.

297. http://news.bbc.co.uk/1/hi/world/middle_east/

1874471.stm

298. Inside the Cult: A Member's Chilling, Exclusive Account of Madness and Depravity in David Koresh's Compound Breault & King, 1993

299. http://www-tech.mit.edu/V114/N47/swiss.47w.html

300. http://archives.cbc.ca/IDC-1-68-368-2086/arts_entertainment/frum/

301. Politics and the English Language 1946 http://www.resort.com/~prime8/Orwell/patee.html

302. Sira Ibn Ishaq:P 183

303. Adolf Hitler, Mein Kampf, Ralph Mannheim, ed., New York: Mariner Books, 1999, p. 65.

304. Ibn Sa'd Tabaqat, page 362

305. The unbelievers repeatedly asked Muhammad to perform a miracle so they could believe (Qur'an 17: 90) and Muhammad kept telling them "Glory to my Lord! Am I aught but a man- a messenger?" (Qur'an 17: 93)

306. http://www.rickross.com/reference/raelians/

raelians68.html

307. 297James S. Gordon, The Golden Guru, p. 79

308. Bedell, Geraldine (January 11, 2004). "The future was orange: Tim Guest's upbringing as a child of the Bhagwan Shree Rajneesh 'free love' movement in the Sixties left him anything but spiritually enlightened", The Observer, Guardian News and Media Limited

309. Osherow, Neal. “Making Sense of the Nonsensical: An Analysis of Jonestown.” In Readings about the Social Animal, 7th edition, ed. Elliot Aronson. New York: W. H. Freeman.

310. Available online. [URL=http://www.academicarmageddon.co.uk/library/OSHER.htm] All Osherow's quotes in this chapter are taken from this source.

311. Wikipedia.com

312. 311 Newsweek, 1978, 1979

313. Bukhari V. 3, B.41, N 591and V.2, B.24, N. 555:

314. Milgram, S. Behavioural study of obedience. Journal of Abnormal and Social Psychology, 1963, 67, 371-378.

315. Milgram S. Liberating effects of group pressure. Journal of personality and Social Psychology, 1965, 1, 127-134.

316. Asch, S. Opinions and social pressure. Scientific American, 1955, 193.

317. Mills, J. Six years with God. New York: A & W Publishers, 1979.

318. http://www.news24.com/News24/Africa/News/0,,2-11-1447_2034654,00.html

319. Blakey, D. Affidavit: San Francisco. June 15, 1978.

320. Sahih Al-Bukhari, Volume 6, Book 60, Number 311

321. Ibn Ishaq. Sira

322. Sahih Bukhari Volume 4, Book 56, Number 807

323. Mills, J. Six years with God. New York: A & W Publishers, 1979.

324. Cahill, T. In the valley of the shadow of death. Rolling Stone. January 25, 1979.

325. Qur'an, Sura 29, Verse 8

326. Winfrey, C. Why 900 died in Guyana. New York Times Magazine, February 25, 1979.

327. Sahih Bukhari Volume 9, Book 83, Number 17

328. Sahih Bukhari Volume 9, Book 84, Number 57

329. Sunnan Abu Dawud; Book 41, Number 4994

330. Sahih Bukhari Volume 7, Book 62, Number 76

331. Sahih Bukhari Volume 9, Book 87, Number 127

332. Winfrey, C. Why 900 died in Guyana. New York Times Magazine, February 25, 1979.

333. Suicide Cult: The Inside Story of the Peoples Temple Sect and the Massacre in Guyana (201P) by Marshall Kilduff and Ron Javers (1978)

334. Winfrey, C. Why 900 died in Guyana. New York Times Magazine, February 25, 1979.

335. Mills, J. Six years with God. New York: A & W Publishers, 1979

336. Mills, J. Six years with God. New York: A & W Publishers, 1979

337. Sahih Bukhari Volume 1, Book 4, Number 170

338. Sahih Bukhari Volume 5, Book 59, Number 428

339. Sahih Bukhari Volume 5, Book 59, Number 427

340. Sahih Bukhari, Volume 7, Book 65, Number 293

341. Shih Muslim Book 026, Number 5559

342. Sahih Bukhari Volume 1, Book 8, Number 450

343. Tabaqat, Volume 1, Page 375

344. Sahih Bukhari Volume 9, Book 92, Number 379

345. Bukhari Volume 4, Book 54, Number 516:

346. (Quran. 2:18, 2:171, 6:39, 8:22)

347. http://www.zionism.netfirms.com/Mahathir.html

348. Bukhari, 4.52.220.

349. Tabaqat Volume 1, Page 374

350. Narcissism in the Workplace: online conference transcript healthyplace.com/ Communities/Personality_Disorders/ Site/Transcripts/narcissism_workplace.htm

लेखक – सय्यद वसीम रिज़वी